एनसीईआरटी की किताबों पर आधारित

Fourth Revised Edition

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास, शिक्षाशास्त्र और शिक्षण विधियां

EDUCATION PSYCHOLOGY

CHILD DEVELOPMENT, PEDAGOGY AND TEACHING METHODS

आपणी पोथी

CTET, REET, UPTET, HTET, UTET, DSSSB, KV-NVS

और अन्य राज्यों की अध्यापक पात्रता परीक्षा (TET) के सभी स्तरों के लिए उपयोगी

डॉ. जे.डी. सिंह

NCF 2023

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

पूरी तरह परीक्षाओं के पाठ्यक्रम और पूछे जाने वाले सवालों की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर तैयार की गई सटीक बिंदुवार सामग्री और अभ्यास के लिए चुनिंदा सवालों का संपूर्ण पैकेज

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास, शिक्षाशास्त्र और शिक्षण विधियां

CTET, REET, UPTET, HTET,
UTET, DSSSB, KV-NVS

और अन्य राज्यों की अध्यापक पात्रता परीक्षा
(TET) के सभी स्तरों के लिए उपयोगी

प्रेरणा के स्रोत
प्यारी मां **श्रीमती कस्तुरी देवी**
और
लौहपुरुष पिता **चौधरी हरलाल सिंह मूंड**
जिन्होंने महान राष्ट्र के कृतज्ञ नागरिकों के लिए
1965 व 1971 की लड़ाई लड़ी,
को समर्पित रचना

लेखक
डॉ. जे.डी. सिंह
एमएससी गणित, एमए अंग्रेजी, एमएड, बीजेएमसी, पीजीडीएचई, यूजीसी नेट, पीएचडी शिक्षा
सह आचार्य ग्रामोत्थान विद्यापीठ स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई)
संगरिया, राजस्थान
मो. : +91 9414577875
ई-मेल: drjdsingh@gmail.com

आपणी पोथी

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास, शिक्षाशास्त्र और शिक्षण विधियां

लेखक

डॉ. जे. डी. सिंह

© आपणी पोथी
सर्वाधिकार सुरक्षित।
प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन और इसके किसी भी अंश का
किसी भी रूप में फोटो प्रतिलिपि, इलेक्ट्रॉनिकी, यांत्रिकी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से
पुनः प्रस्तुतीकरण, प्रतिलिपिकरण, प्रयोग, संग्रहण या प्रसारण नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक

आपणी पोथी
सीकर रोड, नवलगढ़
जिला : झुंझुनूं (राजस्थान) - 333042
संपर्क : 9887803616, 9414362312
Website: www.aapnipothi.com
E-mail: aapnipothi@gmail.com

मुद्रक
सोनीश एडवरटाइजिंग एण्ड मार्केटिंग
जयपुर

चौथा संशोधित संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-943496-4-8

इस पुस्तक के प्रकाशन में पूरी सावधानी बरती गई है फिर भी किसी भी
त्रुटि से होने वाली क्षति के संबंध में प्रकाशक, मुद्रक, संपादक या लेखक का कोई दायित्व नहीं होगा।

ऐतिहासिक और वैज्ञानिक तथ्य नई खोजों, अकादमिक स्वीकृतियों और विचारधाराओं के प्रभाव के साथ बदल सकते हैं,
इसलिए लेखक, प्रकाशक और मुद्रक इनके सर्वस्वीकृत और निरपेक्ष सत्य होने का दावा नहीं करते।

प्रकाशन के संबंध में किसी भी परिवाद का निपटारा न्यायिक क्षेत्र नवलगढ़ की सक्षम अदालत या फोरम में किया जाएगा।

विषय सूची (Contents)

पहला भाग (Section I) - बाल विकास (Child Development)

1. वृद्धि और विकास (Growth and Development) 7-54

मनोविज्ञान (Psychology)
शिक्षा मनोविज्ञान (Education Psychology)
शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां (Methods of Education Psychology)
बाल विकास एवं वृद्धि (Child Development and Growth)
बाल विकास के सिद्धांत (Principles of Child Development)
विकासात्मक अवस्था सिद्धांत (Developmental Stage Theories)

1. एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत (Erikson's Psychosocial Stage Theory)
2. फ्रायड का मनोलैंगिक विकास सिद्धांत (Freud's Psychosexual Stage Theory)
3. पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत (Piaget's Cognitive Development Stage Theory)
4. कोह्लबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg's Moral Development Stage Theory)
5. जीन पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत (Piaget's Moral Development Stage Theory)

मानव विकास की अवस्थायें (Stages of Human Development)
समाजीकरण व बाल विकास (Socialization and Child Development)

2. वंशानुक्रम एवं वातावरण (Heredity and Environment) 55-64

वंशानुक्रम का अर्थ, स्वरूप तथा परिभाषाएं (Meaning, Nature and Definitions of Heredity)
वंशानुक्रम से संबंधित मुख्य नियम व सिद्धांत (Main Laws and Theories of Heredity)
बाल विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity on Child Development)
वातावरण का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definitions of Environment)
बाल विकास पर वातावरण का प्रभाव (Effect of Environment on Child Development)
ब्रोंफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत (Bronfenbrenner's Ecological Systems Theory)

दूसरा भाग (Section II) - अधिगम एवं अभिप्रेरणा (Learning and Motivation)

3. अधिगम (Learning) 65-79

अधिगम का अर्थ एवं संकल्पना (Meaning and Concept of Learning)
अधिगम प्रक्रिया (Learning Process)
अधिगम मॉडल के चरण (Steps of Learning Model)
अधिगम स्थानांतरण (Transfer of Learning)
अधिगम स्थानांतरण के प्रकार (Types of Transfer of Learning)
अधिगम स्थानांतरण के सिद्धांत (Theories of Transfer of Learning)
अधिगम वक्र (Learning Curve)
अधिगम का पठार (Plateau in Learning)
अधिगम व परिपक्वता (Learning & Maturity)

4. अधिगम के सिद्धांत (Theories of Learning) 80-116

अधिगम के सिद्धांतों का वर्गीकरण (Classification of Learning Principles)

(अ) अधिगम का संबंधवाद या व्यवहारवाद सिद्धांत (Connectionism or Behaviourism Theories of Learning)

1. थार्नडाइक का संबंधवाद अथवा साहचर्य का सिद्धांत (Learning Theory of Association)
2. पावलॉव का शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धांत (Classical Conditioning Theory)
3. स्किनर का क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धांत (Operant Conditioning Theory)
4. हल का प्रबलन या पुनर्बलन का सिद्धांत (Hull’s Theory of Reinforcement)
5. गुथरी का अधिगम का समीपता सिद्धांत (Guthrie’s Contiguity Theory of Learning)

(ब) संज्ञानात्मक-संरचनात्मक अधिगम सिद्धांत (Cognitive- Constructivism Theories of Learning)

1. गेस्टाल्ट सिद्धांत (Gestalt Theory)
2. टॉलमैन का चिन्ह अधिगम सिद्धान्त (Tolman's Theory of Sign Learning)
3. अधिगम का क्षेत्र सिद्धांत (Field Theory of Learning)
4. अधिगम का सोपानिकी सिद्धांत (Hierarchical Theory of Learning)
5. बांडूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Bandura’s Theory of Social Learning)
6. निर्मितिवाद (Constructivism)

(A) संज्ञानात्मक निर्मितिवाद : अधिगम के संज्ञानात्मक विकास का प्रक्रिया सिद्धांत (Cognitive Development Process Theory of Learning) - स्कीमा (Schema) के विशेष संदर्भ
(B) सामाजिक निर्मितिवाद : वाइगोत्स्की का संज्ञानात्मक विकास का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत (Vygotsky’s Social-Cultural Theory of Cognitive Development)
(C) मौलिक निर्मितिवाद (Radical Constructivism) : अर्न्स्ट वॉन ग्लेजर्सफेल्ड (Ernst von Glasersfeld)

7. ब्रूनर का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत (Bruner’s Cognitive Development Theory)

5. भाषा कौशल, चिंतन एवं तर्कणा (Language Skills, Thinking and Reasoning) 117-131

संरचनावाद (Structuralism)
अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत (Experiential learning Theory)
(1) अनुभवात्मक चक्रीय अधिगम मॉडल (Cyclical Learning Model)
(2) अधिगम की शैलियां (Learning Styles)
अवधारणा मानचित्रण (Concept Mapping)
अन्वेषण उपागम (Heuristic Method/Approach)
समस्या समाधान उपागम/विधि (Problem Solving Approach/ Method)
भाषा कौशल (Language Skills)
विचार/सोच/चिंतन (Thought/Thinking)
तर्कणा (Reasoning)
कल्पना (Imagination)

6. संवेग, स्मृति, विस्मृति एवं अभिरुचि (Emotions, Memory, Forgetting and Interest) 132-141

संवेग (Emotions)
स्मृति (Memory)
विस्मरण (Forgetting)
अभिरुचि (Interest)

7. अभिप्रेरणा एवं अधिगम के निहितार्थ (Motivation and Implications for Learning) 142-151

अभिप्रेरणा के स्रोत (Sources of Motivation)
प्रेरणा चक्र (Cycle of Motivation)
अभिप्रेरणा के प्रकार (Kinds of Motivation)
अभिप्रेरणा के सिद्धांत (Theories of Motivation)
(अ) विषयवस्तु या अंतर्वस्तु सिद्धांत (Content Theories of Motivation)
(1) आवश्यकताओं का मैस्लो का पदानुक्रम सिद्धांत (Maslow's Needs Hierarchy)
(2) रोजर्स का स्वयं प्रत्यय का सिद्धांत (Roger's Self Concept Theory of Motivation)
(3) मुरे का आवश्यकता सिद्धान्त (Murray's Theory of Needs)
(ब) प्रक्रिया सिद्धांत (Process Theories of Motivation)
अभिप्रेरणा का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Motivation)

तीसरा भाग (Section III) - व्यक्तिगत विभिन्नताएं (Individual Differences)

8. व्यक्तिगत विभिन्नताएं (Individual Differences) 152-161

वैयक्तिक भिन्नता का अर्थ (Meaning of Individual Differences)
वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार (Types of Individual Differences)
वैयक्तिक भिन्नता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting to Individual Differences)
वैयक्तिक विभिन्नता का शिक्षा में महत्व (Importance of Individual Differences in Education)
वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित शिक्षण विधियां (Methods)

9. व्यक्तित्व (Personality) 162-178

व्यक्तित्व का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning of Personality)
व्यक्तित्व का वर्गीकरण (Classification of Personality)
व्यक्तित्व के मुख्य सिद्धांत (Theories of Personality)
- हिप्पोक्रेटस (Hippocrates) का शरीर द्रवों के आधार पर वर्गीकरण
- क्रेश्मर का वर्गीकरण (Kretschmer's Theory of Personality)
- शेल्डन का वर्गीकरण (Sheldon's Theory of Personality)
- आलपोर्ट का सिद्धांत (Allport's Theory of Personality)
- कैटल का प्रतिकारक (विशेषक) व्यक्तित्व सिद्धांत (Cattell's Factorial or Trait Theory of Personality)
- आइसेंक का विशेषक व्यक्तित्व सिद्धांत (Eysenck's Trait Theory of Personality)
- फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (Psychoanalytic Theory)
- युंग का विश्लेषणात्मक सिद्धांत (Analytical Theory of Jung)
- अल्फ्रेड एडलर का व्यक्तित्व सिद्धांत (Alfred Adler's Personality Theory)
- कार्ल रोजर्स का स्वः सिद्धांत (Carl Rogers' Self Theory)
- अब्राहम मैस्लो का स्वःप्रत्यक्षीकरण सिद्धांत (Abraham Maslow's Self- Actualization Theory)

व्यक्तित्व मापन की विधियां (Measurement of Personality)
(1) अप्रक्षेपी विधियां (Non-Projective Methods)
- निर्धारण मापनी (Rating Scale)
- निरीक्षण या नियंत्रित निरीक्षण विधि (Observation Method)
- सोशियोग्राम या समाजमिति विधि (Sociometry Method)
- परिस्थिति परीक्षण विधि (Situational Test)

(2) प्रक्षेपी विधियां (Projective Methods)
- प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण (Thematic Apperception Test- TAT)
- बालक अंतर्बोध परीक्षण (Children's Apperception Test- CAT)
- रोर्शा का स्याही धब्बा परीक्षण (Rorschach Inkblot Test- IBT)
- शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test)
- वाक्य पूर्ति परीक्षण (Sentence Completion Test- SCT)
- चित्र नैराश्य परीक्षण (Picture Frustration Test)

10. बुद्धि (Intelligence) 179-201

बुद्धि का अर्थ (Meaning of Intelligence)
बुद्धि के सिद्धांत (Theories of Intelligence)
(अ) कारक सिद्धांत (Factor Theories of Intelligence)
1. एक खंड का सिद्धांत/ निरंकुशवादी सिद्धांत (Uni- Factor Theory)
2. स्पीयरमैन का द्वि-कारक या दो खंड सिद्धांत (Spearman's Two-Factor or Bi- Factor Theory)
3. तीन खंड का सिद्धांत (Three Factor Theory)
4. थार्नडाइक का बहुकारक या बहुखंड बुद्धि सिद्धांत (Multi Factor Theory of Intelligence)
5. थर्स्टन का समूह कारक बुद्धि सिद्धांत (Thurston's Group Factors Intelligence Theory)

6. बहुबुद्धि या बहु-प्रतिभा का सिद्धांत (Theory of Multiple Intelligences)
7. कैटल का बुद्धि सिद्धांत (Cattell's Theory of Intelligence)
8. बर्ट तथा वर्नन का पदानुक्रमित बुद्धि सिद्धांत (Burt and Vernon's Hierarchical Theory of Intelligence)
9. गिलफोर्ड का त्रि-आयाम बुद्धि सिद्धांत (Guilford's Three Dimensional Theory of Intelligence)
10. थॉमसन का प्रतिदर्श सिद्धांत (Thomson's Sampling Theory of Intelligence)

(ब) संज्ञानात्मक सिद्धांत (Cognitive Theories of Intelligence)

1. स्टर्नबर्ग का त्रितंत्र सिद्धांत (Robert Sternberg's Triarchic Theory of Intelligence)
2. पास थ्योरी ऑफ इंटेलिजेंस (PASS Theory of Intelligence)

बुद्धिलब्धि (Intelligence Quotient)
बुद्धिलब्धि का वर्गीकरण (Classification of IQ)
बुद्धि परीक्षणों के प्रकार (Types of Intelligence Tests)
बुद्धि परीक्षणों के निर्माण में मुख्य सोपान (Main Steps of Construction of Intelligence Tests)
बुद्धि परीक्षणों के उपयोग (Uses of Intelligence Tests)
संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)

चौथा भाग (Section IV) - विविध अधिगमकर्त्ताओं की समझ (Understanding Diverse Learners)

11. विशिष्ट बालक (Exceptional Children) 202-233

विशिष्ट या असाधारण बच्चे (Exceptional Children)
विशिष्ट बालकों के प्रकार (Types of Exceptional Children)
(1) बौद्धिक या मानसिक रूप से असाधारण या विशिष्ट बालक (Intellectually or Mentally Exceptional Children)
(अ) प्रतिभाशाली बालक (Gifted /Super Normal Children)
(ब) मंद बुद्धि बालक (Mentally Retarded Children)
(स) शैक्षिक पिछड़ा बालक (Backward Child)
(द) सृजनात्मक बालक (Creative Child)
(2) शारीरिक रूप से विकलांग बालक (Physically Handicapped)
(3) समस्यात्मक या भावनात्मक अक्षमता के बालक (Emotionally Disabilities Children)
(4) अपराधी या सामाजिक रूप से वंचित बालक (Socially Deprived Children)
(5) सीखने की दृष्टि से पिछड़े बालक (Children with Learning disabilities)
अधिगम अक्षमता (Learning Disability)
अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण (Classification of Learning Disabilities)
समावेशी शिक्षा और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ (Inclusive Education and Understanding Children with Special Needs)

12. समायोजन एवं कुसमायोजन (Adjustment and Maladjustment) 234-252

समायोजन (Adjustment)
समायोजन प्रक्रिया के तत्व (Elements of Adjustment Process)
समायोजन के प्रकार (Types of Adjustment)
कुसमायोजन (Maladjustment)
समायोजन की विधियां (Methods of Adjustment Mechanism)
व्यवहार जन्य व भावात्मक विकार (Behavioral & Emotional Disorder)
व्यवहार जन्य विकार के कारण (Causes of Behavioral Disorder)
मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान (Mental Hygiene)

पांचवां भाग (Section V) - शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया एवं मूल्यांकन (Teaching Learning Process and Evaluation)

13. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व एनसीएफ-2005 (Teaching Learning Process and NCF-2005) 253-281

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (Teaching Learning Process)
ब्लूम के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण (Bloom's Taxonomy of Educational Objectives)
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा- 2005 व 2023 (National Curriculum Framework-2005 & 2023)
प्रगतिशील शिक्षा (Progressive Education)
निर्देशन व परामर्श (Guidance and Counselling)

14. शिक्षण विधियां व प्रविधियां (Teaching Methods and Techniques) 282-315

शिक्षण विधियां (Teaching Methods)
शिक्षण स्तरों के आधार पर शिक्षण विधियां (Teaching Methods as per Levels of Teaching)

- खेल विधि (Play way Method)
- प्रदर्शन विधि (Demonstration Method)
- कर के सीखना विधि (Learning by Doing Method)
- प्रयोगशाला विधि (Lab/Laboratory Method)
- प्रायोजना विधि (Project Method)
- अवलोकन विधि (Observation/Perusal Method)
- व्याख्यान या कथन विधि (Lecture Method)
- विचार-विमर्श / प्रश्नोत्तर / परिचर्चा विधि (Discussion Method)
- आगमन विधि (Induction Method)
- निगमन विधि (Deduction Method)
- अनुरूपण शिक्षण (Simulated Teaching)
- विश्लेषण विधि (Analytic Method)
- संश्लेषण विधि (Synthetic Method)
- सहकारी अधिगम (Cooperative Learning)
- सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning)
- समकक्षी शिक्षण (Peer Tutoring)

- दल-शिक्षण विधि (Team Teaching Method)
- सम्प्रत्यय निर्माण विधि (Concept Formation Method)
- संवाद विधि (Dialogue Method)

गणित शिक्षण की मुख्य विधियां (Mathematics Teaching Methods)
भाषा शिक्षण की मुख्य विधियां (Language Teaching Methods)
शिक्षण के सामान्य सिद्धांत (Principles of Teaching)
कक्षा-शिक्षण के मुख्य सूत्र (Maxims of Teaching)
शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम (Teaching Practice Programme)
शिक्षण के चर तथा उनके कार्य
(Variables of Teaching and their Functions)
शिक्षण की अवस्थाएं (Phases of Teaching)
शिक्षण के प्रकार (Type of Teaching)
शैक्षिक व शिक्षण उद्देश्य (Aims and Objectives)
शिक्षण के उपागम (Approaches of Teaching)
निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test)
उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)
उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test)
पाठ योजना (Lesson Plan)
सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)
शिक्षण सहायक सामग्री (Teaching Learning Material)
शिक्षण के प्रमुख उपकरण (Teaching Equipments)
अनुभवों का शंकु (Cone of Experiences)

15. आकलन, मापन एवं मूल्यांकन (Assessment, Measurement and Evaluation) 316-337

मूल्यांकन (Evaluation)
मूल्यांकन प्रक्रिया के पद (Steps of Evaluation Process)
आकलन व मूल्यांकन में अंतर
(Difference between Evaluation and Assessment)
विद्यालय आधारित आकलन (School based Assessment)
मूल्यांकन/आकलन के प्रतिरूप या प्रकार
(Pattern/Types of Evaluation/Assessment)
मूल्यांकन प्रविधियों का वर्गीकरण
(Classification of Evaluation Techniques)
मानक व मानदंड संदर्भित परीक्षण
(Norm and Criterion Referenced Test)
सतत और व्यापक मूल्यांकन
(Continuous and Comprehensive Evaluation)
मूल्यांकन परीक्षण के मुख्य साधन (Tool of Evaluation Test)
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

16. क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) 338-343

क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)
मूलभूत व क्रियात्मक अनुसंधान में अंतर
(Difference between Fundamental and Action Research)
क्रियात्मक अनुसंधान के मुख्य तत्व
(Main Elements of Action Research)
क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकार (Types of Action Research)
क्रियात्मक अनुसंधान के पद (Steps in Action Research)
क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व (Importance of Action Research)

17. शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 (Right to Education Act-2009) 344-350

शिक्षा का अधिकार (Right to Education)
शिक्षा का अधिकार अधिनियम का इतिहास (History)
शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम-2009 के मुख्य प्रावधान
(Main Provisions)
निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार (संशोधन) बिल, 2019

परिशिष्ट (Appendices) 351-360

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy, 2020)
2. शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में मुख्य प्रतिपादक
(Main Founders in Area of Education Psychology)
3. पारिभाषिक शब्दावली (Terminology)
4. शिक्षा और मनोविज्ञान की प्रसिद्ध पुस्तकें मय लेखक
(Famous books of Education and Psychology with Authors)

अध्याय-01

वृद्धि और विकास

मनोविज्ञान (Psychology)

मनोविज्ञान वह शास्त्र है जिसमें चित्त या मन (Mind) की वृत्तियों का अध्ययन होता है। अर्थात् वह विज्ञान जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि मनुष्य के चित्त में कौनसी वृत्ति कब, क्यों और किस प्रकार उत्पन्न होती है। अतः चित्त की वृत्तियों की मीमांसा करने वाला शास्त्र मनोविज्ञान कहलाता है। 'मनोविज्ञान' शब्द का शाब्दिक अर्थ है आत्मा का विज्ञान। मनोविज्ञान को अंग्रेजी में साइकोलॉजी (Psychology) कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति यूनानी/ग्रीक भाषा के दो शब्दों **साइकी (Psyche) अर्थात् आत्मा तथा लोगोस (Logos) अर्थात् विज्ञान** से मिलकर हुई है।

विल्हेम वुंट (Wilhelm Wundt) ने **1879 में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला** जर्मनी के लेपजिग विश्वविद्यालय (1953 से 1991 के बीच इस विश्वविद्यालय का नामकरण प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, अर्थशास्त्री, राजनीतिक सिद्धांतकार, समाजशास्त्री और **वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता कार्ल मार्क्स** के नाम पर कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय किया गया था) में स्थापित की गई थी। उसके बाद मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान का दर्जा पाने में समर्थ हो सका। वैज्ञानिक मनोविज्ञान 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से आरंभ हुआ माना जाता है। मनोविज्ञान में **प्लेटो को द्वैतवाद का जनक माना जाता है।** 16वीं शताब्दी से पूर्व अरस्तु (Aristotle, 350 B.C.) के प्रयासों से मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र से अलग हुआ इसलिए अरस्तु को मनोविज्ञान का जनक (Father of Psychology) कहा जाता है।

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो व्यवस्थित रूप से (systematically) प्रेक्षणीय व्यवहार (observable behaviour) का अध्ययन करता है तथा प्राणी के भीतर के मानसिक एवं दैहिक प्रक्रियाओं के साथ उनका संबंध जोड़कर अध्ययन करता है। इस परिप्रेक्ष्य में **मनोविज्ञान को व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान** कहा गया है। व्यवहार में मानव व्यवहार तथा पशु व्यवहार दोनों ही सम्मिलित होते हैं।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

- **स्किनर (Skinner, 1958)** : मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।
- **विलियम जेम्स (Willam James, 1892)** : मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान है।
- **बोरिंग, लैंगफील्ड और वेल्ड (Boring, Langfield and Weld)** : मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।
- **वाटसन (Watson, 1913)** : मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित/ सकारात्मक/ यथार्थ/ शुद्ध विज्ञान (Positive/ Pure Science) है।
- **मैक्डूगल (McDougall, 1908)** : मनोविज्ञान, आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।
- **मन (Munn, NL, 1967)** : मनोविज्ञान अनुभव के आधार पर किए गए आंतरिक अनुभवों एवं बाह्य व्यवहारों का सकारात्मक विज्ञान है।
- **क्रो एंड क्रो (Crow & Crow)** : मनोविज्ञान, मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन है।
- **पील्सबरी (Pillsbury)**: मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है।
- **वुडवर्थ (Woodworth, RS)** : मनोविज्ञान वातावरण के संदर्भ में व्यक्ति के क्रियाकलापों का वैज्ञानिक अध्ययन है।
- **गेरिसन व अन्य (Garrison & others)** : मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष/ सुस्पष्ट (Observable) मानव व्यवहार है।
- **सैनट्रोक (Santrock, 2000)** : मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।

मनोविज्ञान का विकास (Development of Psychology)

क्रमांक	क्षेत्र	समय	समर्थक
1.	आत्मा (Soul) का विज्ञान	16वीं शताब्दी के अंत तक	प्लेटो, सुकरात, अरस्तू व डेकार्ट आदि।
2.	मन/मस्तिष्क (Mind) का विज्ञान	17 व 18वीं शताब्दी	जॉन लॉक, पोम्पोनॉजी, पेस्टोलोजी व थामस रीड आदि।
3.	चेतना (Consciousness) का विज्ञान	19वीं शताब्दी	टिचनर, विल्हेम वुंट, विलियम जेम्स, वाइव्स, जेम्स सली आदि।
4.	व्यवहार (Behaviour) का विज्ञान	20वीं शताब्दी	पावलॉव, वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर, मैक्डूगल, थार्नडाइक, पिल्सबरी, टॉलमेन, हल, मन आदि।

- **बेरोन (Baron, 2001)** : मनोविज्ञान संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं व्यवहार के विज्ञान के रूप में उत्तम ढंग से परिभाषित किया जाता है।
- **सिस्सरेल्ली एवं मेअर (Ciccarelli & Meyer, 2006)** : मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान (Education Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का वह क्षेत्र है जो शिक्षण विधियों के अध्ययन और मूल्यांकन से संबंधित है और शैक्षिक समस्याओं वाले विद्यार्थियों की मदद करता है। 'मनोविज्ञान' सीखने से संबंधित मानव विकास को 'कैसे सीखा जाए' की व्याख्या करती है, और 'शिक्षा' अधिगम में 'क्या सीखा जाए' को बताता है।

- **स्टीफन (Stephen)** : शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शैक्षिक वृद्धि और विकास का व्यवस्थित अध्ययन है।
- **स्किनर (Skinner, 1958)** : शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण एवं अधिगम से सम्बन्धित है।
- **जॉन एफ ट्रेवर्स (John F- Travers, 1982)** : शिक्षा मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें शिक्षार्थी, अधिगम तथा शिक्षण (Learners, learning and teaching) का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।
- **क्रो एंड क्रो** : शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करना है।
- **पील (Peel, EA)** : शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है।
- **कॉलसनिक (Kolesnik)** : मनोविज्ञान के सिद्धांतों व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग ही शिक्षा मनोविज्ञान है।
- **जेम्स ड्रेवर (James Drever)** : शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों तथा खोजों के प्रयोग के साथ ही शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है।

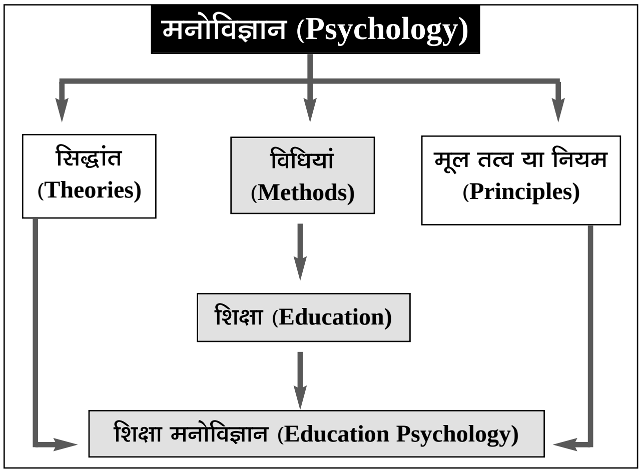

शिक्षा मनोविज्ञान में मनोविज्ञान के नियम, सिद्धांतों का प्रयोग शैक्षणिक वातावरण में बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है। इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है क्योंकि इसके अध्ययन में वस्तुनिष्ठता, प्रमाणिकता, सार्वभौमिकता, वैज्ञानिक विधियों व भविष्यवाणी का उपयोग किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान को कला और विज्ञान दोनों श्रेणी में रखा जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां (Methods of Education Psychology)

मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण विधियों का प्रतिपादन किया गया है। इन्हे दो भागों में बांटा जा सकता है-

(1) **अवलोकन विधियां (Observation Methods)**
(2) **विवरणात्मक विधियां (Exposition Methods)**।

मनोवैज्ञानिक जांच की अवलोकन विधियां(Observation Methods) निम्नांकित हैं-

1. आत्मनिरीक्षण विधि (Introspection Method)
2. अवलोकन या अंतरदृष्टि विधि (Observation/ Extrospection Method)
3. प्रायोगिक विधि (Experimental Method)
4. क्षेत्र अध्ययन विधि (Field Study Method)

इनके अलावा मनोवैज्ञानिक जांच की विवरणात्मक विधियां (Exposition Methods) निम्नलिखित हैं-

1. व्यक्तिवृत/ केस इतिहास विधि (Case History Method)
2. सर्वेक्षण विधि (Survey Method)
3. आनुवंशिक या विकास विधि (Genetic or Development Method)
4. परीक्षण विधि (Testing Method)
5. नैदानिक विधि (Clinical Method)
6. तुलनात्मक विधि (Comparative Method)
7. साक्षात्कार विधि (Interview Method)
8. विशेषक या विभेदक विधि (Differential Method)
9. मनोविश्लेषण विधि (Psycho-analytic Method)
10. मनोभौतिकी विधि (Psycho-physical Method)
11. सांख्यिकीय विधि (Statistical Method)।

1. **आत्मनिरीक्षण विधि (Introspection Method)** : इस विधि को **विल्हेम वुण्ट** व उसके शिष्य **टिचनर (EB Titchener)** ने प्रतिपादित किया था। **वुडवर्थ ने इसे स्व-अवलोकन/ विषयनिष्ठ विधि (Self-observation/ Subjective Observation Method)** नाम दिया है। यह शैक्षिक मनोविज्ञान की सबसे पुरानी विधि है। अंतर्निरीक्षण विधि में प्रयोज्य (Subject) तथा अध्ययनकर्त्ता (Investigator) एक ही व्यक्ति होता है।
2. **अवलोकन/ प्रेक्षण/ अंतरदृष्टि विधि (Observation/ Extrospection Method)** : इस विधि का प्रतिपादन **वाटसन के व्यवहारवाद** की स्थापना (1913) के समय हुआ जब मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान बताया गया। इस

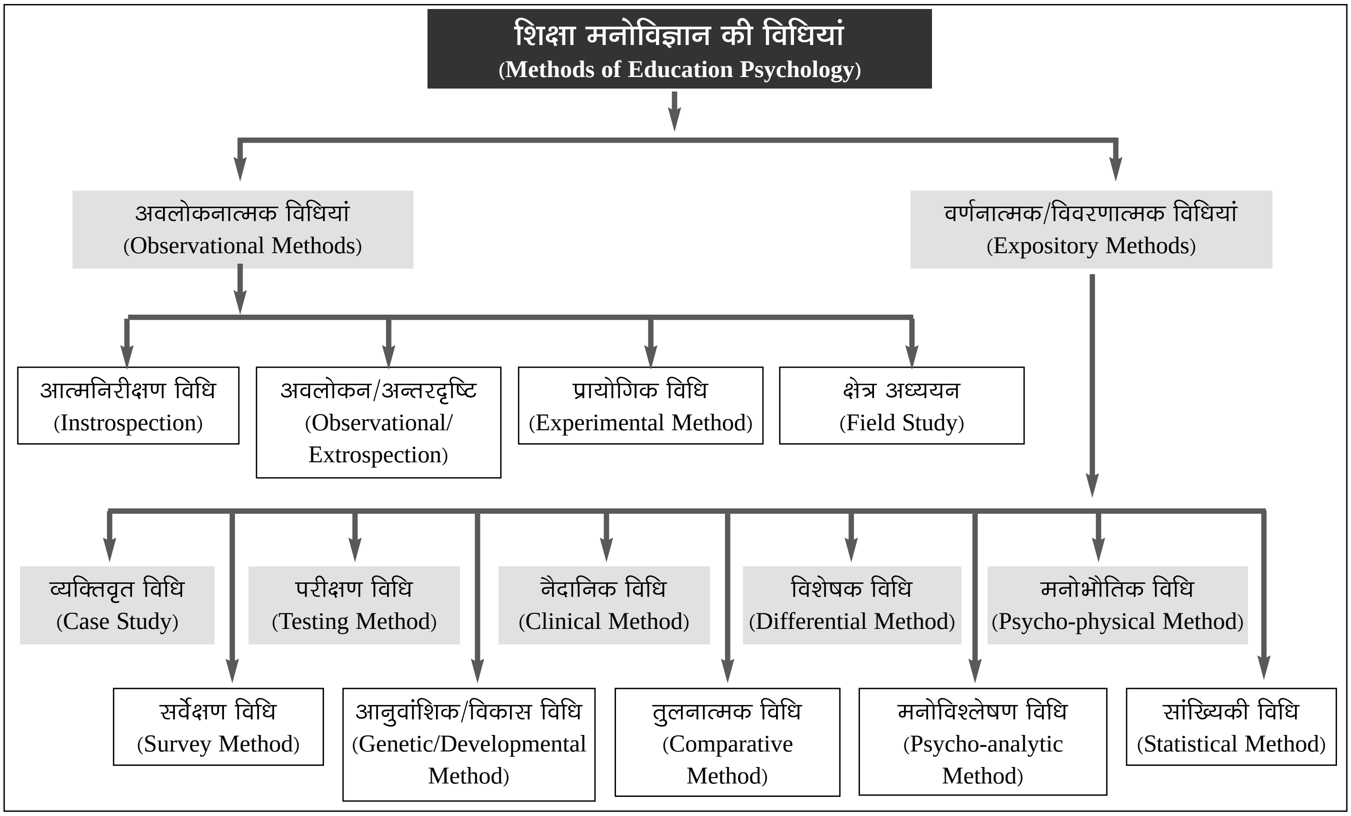

विधि को वस्तुनिष्ठ विधि माना जाता है। इस की अध्ययन विधि अंतर्निरीक्षण की अपेक्षा प्रेक्षण विधि है। इसके द्वारा आन्तरिक व बाह्य दोनों तरह के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। यह विधि उन क्षेत्रों में बहुत उपयोगी है, जहां **प्रयोग (Experiment)** नहीं किए जा सकते हैं। अवलोकन विधि में दूसरों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अवलोकन के दो बुनियादी प्रकार हैं-

(i) प्राकृतिक अवलोकन व (ii) प्रतिभागी अवलोकन। इसलिए, इस पद्धति को '**प्राकृतिक अवलोकन' या 'उद्देश्य अवलोकन' (Naturalistic or Objective Observation Method) विधि** के रूप में भी जाना जाता है।

3. **प्रायोगिक विधि (Experimental Method) :** इस विधि को **विल्हेम वुंट (Wilhelm Wundt)** ने 19वीं शताब्दी में प्रतिपादित किया था। यह व्यवहार का अध्ययन करने की वैज्ञानिक विधि है। इस विधि में प्रयोगशालाओं में नियंत्रित परिस्थितियों में प्रयोग किए जाते हैं। यह **सबसे सटीक, नियोजित व्यवस्थित अवलोकन** है। प्रयोगात्मक विधि में **आंतरिक वैधता (Internal Validity), परीक्षण वैधता (Test Validity) और अंतर्वस्तु वैधता (Content Validity)** पाई जाती है। इसमें **बाह्य वैधता (External Validity) का अभाव** होता है। प्रयोगात्मक विधि एक मात्र विधि है, जिसमें दो चरों के बीच कारण-परिणाम संबंध का परीक्षण किया जाता है यानी आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

4. **व्यक्तिवृत/केस इतिहास विधि (Case History Method) :** इस विधि को **फ्रेडरिक ली प्ले (Frederic Le Play, 1829)** ने प्रतिपादित किया था। जबकि **जीवन इतिहास विधि (Biographical Method)** को **डेट्रिच टाइडमैन (Dietrich Tiedemann, 1787)** ने प्रतिपादित किया था। **केस स्टडी** का उपयोग आमतौर पर विशेष शैक्षिक परिस्थितियों में किया जाता है। **केस स्टडी** किसी व्यक्ति, समूह या घटना का गहन विश्लेषण है, जिसमें संबंधित का पिछला इतिहास, पहले से लिया गया उपचार, किसी भी तरह का सुधार, वर्तमान स्थिति, संभावित कारण, संकेत और लक्षण आदि शामिल हैं। व्यक्तिगत साक्षात्कार, साइकोमेट्रिक परीक्षण (Psychometric Test), प्रत्यक्ष अवलोकन (Direct Observation) और अभिलेखीय रिकॉर्ड (Anecdotal Record) सहित विभिन्न तकनीकों को नियोजित किया जाता है। यह जानकारी संबंधित व्यक्ति या उसके करीबी रिश्तेदारों जैसे माता-पिता, भाई-बहन, दोस्तों, पड़ोसियों आदि से भी प्राप्त की जा सकती है।

5. **सर्वेक्षण विधि (Survey Method) :** इसका उपयोग बड़ी संख्या में लोगों से जानकारी इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। आवश्यक जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली (Questionnaire), चेकलिस्ट (Check list), रेटिंग स्केल (Rating Scale), इन्वेंटरी (Inventory) का उपयोग किया जाता है।

6. **आनुर्वंशिक या विकास विधि (Genetic or Development Method)** : इस विधि को **विकासात्मक विधि (Developmental Method)** भी कहा जाता है। हमारे अधिकांश व्यवहार पहले के अनुभवों का परिणाम हैं। कुछ प्रकरणों में जब हमें किसी के व्यवहार को समझने की आवश्यकता होती है, तो हमें उनके विकास संबंधी पहलुओं को भी जानना होगा। उदाहरण के लिए, वयस्कों के व्यवहार को समझने के लिए हमें उनके बचपन के विकास को जानना होता है। यह दो तरीकों से किया जा सकता है-
   (1) **क्रॉस-अनुभागीय अध्ययन (Cross-sectional Study)** : इसमें विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों का एक साथ अध्ययन किया जाता है।
   (2) **अनुदैर्घ्य अध्ययन (Longitudinal Study)** : इसमें जीवन के विभिन्न चरणों में एक ही व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है। वंशानुगत और पर्यावरणीय प्रभावों के दृष्टिकोण से व्यवहार को समझने के लिए यह अधिक उपयोगी विधि है।
7. **परीक्षण विधि (Testing Method)** : मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यवहार के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए विभिन्न परीक्षण विकसित किए गए हैं। अभिवृत्ति (Attitude), रुचि (Interest), क्षमता (Abilities), बुद्धिमत्ता (Intelligence), समायोजन (Adjustment), व्यक्तित्व (Personality) और ऐसे अन्य कारक जो व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उनका उपयुक्त परीक्षण करके अध्ययन किया जा सकता है।
8. **नैदानिक विधि (Clinical Method)** : इस क्षेत्र का आरंभ पेंसिल्वैनिया विश्वविद्यालय में **लाइटनर विट्मर (Lightner Witmer, 1896)** द्वारा प्रथम मनोवैज्ञानिक चिकित्सालय की स्थापना के साथ माना जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान मानसिक बीमारी, असामान्य व्यवहार और मनोरोग समस्याओं के मूल्यांकन और उपचार से संबंधित मनोविज्ञान की शाखा है।
9. **तुलनात्मक विधि (Comparative Method)** : इसे मनुष्य व जानवरों (Human and Animal Beings) के व्यवहार के अध्ययन के लिए तुलनात्मक पद्धति के अनुप्रयोग के रूप में परिभाषित किया गया है। तुलनात्मक मनोविज्ञान मानव व गैर-मानव (जानवरों) के व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक अध्ययन (Scientific study of the behavior and mental processes of non-human animals) को संदर्भित करता है।

इस प्रकार आत्मनिरीक्षण, अवलोकन और प्रयोग मनोवैज्ञानिक जांच की मुख्य विधियां हैं। आत्मनिरीक्षण व्यक्तिपरक विधि (Subjective method) है। अवलोकन और प्रयोग वस्तुनिष्ठ विधियां (Objective methods) हैं। प्रायोगिक मनोविज्ञान को **'न्यू साइकोलॉजी'** कहा जाता है।

शैक्षिक मनोविज्ञान का योगदान (Contribution)

1. व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने के लिए
2. विकासात्मक विशेषताओं को समझने के लिए
3. असाधारण बच्चों की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन में
4. बालक को अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापन में
5. पाठ्यचर्या निर्माण और शैक्षिक महत्व के अध्ययन हेतु
6. संवेगों के नियंत्रण और मानसिक स्वास्थ्य के ज्ञान में
7. शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों और प्रयोजनों से परिचय हेतु
8. शिक्षार्थी के व्यक्तित्व निर्माण की विधियों, सिद्धांतों और मूल्यांकन से अवगत कराने में।

बाल विकास एवं वृद्धि (Child Development & Growth)

सामान्यतः बोलचाल की भाषा में वृद्धि और विकास शब्द का प्रयोग एक ही अभिप्राय के लिए किया जाता है। जबकि वास्तव में ये दोनों शब्द अपना अलग अर्थ एवं महत्व रखते हैं। सामान्य रूप से अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग शरीर एवं उसके अंगों के भार एवं आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है जबकि विकास में मानसिक वृद्धि, शारीरिक वृद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता, बौद्धिक परिपक्वता का अध्ययन किया जाता है। **विकास की प्रक्रिया गर्भाधान (Fertilisation) के क्षण से ही शुरू हो जाती है।** एक गर्भित कोशिका जो डिम्ब एवं शुक्राणु के सम्मिलन से निर्मित होती है, उसमें समस्त अनुवांशिक सूचनाएं कूट संकेतित रहती हैं जिससे कुछ समयांतराल के पश्चात एक पूर्ण मानव (जीव) का निर्माण होता है।

वृद्धि (Growth) का अर्थ और परिभाषाएं

वृद्धि का अर्थ है बढ़ना या फैलना। अतः **प्राणी के आंतरिक और बाह्य अंगों का बढ़ना या फैलना वृद्धि** कहलाता है। वृद्धि या अभिवृद्धि शारीरिक रचना और शारीरिक परिवर्तनों की ओर संकेत करती है। यह एक जैविक प्रक्रिया है, जो सभी जीवों में पाई जाती है और स्वतः होती है। **किसी भी प्राणी में विकास पहले और वृद्धि बाद में होती है।** वृद्धि गर्भाधान के लगभग **दो सप्ताह बाद प्रारंभ** होती है और 20 वर्ष की आयु के आसपास समाप्त हो जाती है। वृद्धि में होने वाले परिवर्तन केवल शारीरिक व रचनात्मक ही होते हैं, जो केवल परिपक्वावस्था तक ही सीमित होते हैं।

सोरेंसन (Sorenson) : अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग सामान्यतः शरीर और उसके अंगों के भार तथा आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है। इस वृद्धि को नापा या तोला जा सकता है।

विकास (Development) का अर्थ और परिभाषाएं

विकास एक जटिल प्रक्रिया है सामान्य रूप से विकास बुद्धि, परिपक्वता तथा पोषण आदि अवधारणाओं को प्रायः मिले-जुले अर्थों में इस्तेमाल किया जाता है।

विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर जीवन पर्यंत अविराम गति से चलती रहती है। विकास से तात्पर्य परिवर्तन की

उस उन्नतिशील श्रृंखला से है, जो परिपक्वता के एक निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है। अतः विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

विकास = वृद्धि + परिपक्वता + क्षमता + वातावरण के साथ अंतःक्रिया

विकास केवल शारीरिक वृद्धि की ओर ही संकेत नहीं करता वरन् इसके अंतर्गत वे सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन सम्मिलित रहते हैं, जो गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यंत निरंतर प्राणी में प्रकट होते रहते हैं। अतः प्राणी के भीतर विभिन्न प्रकार के शारीरिक व मानसिक क्रमिक परिवर्तनों की उत्पत्ति ही विकास है। **विकास सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर बढ़ता है। यह सीधे (Linear) न होकर वर्तुलाकार (Spiral)** होता है।

बाल विकास के अध्ययन ने समाज के समक्ष दो पहलू प्रस्तुत किए हैं- (1) व्यावहारिक, (2) सैद्धांतिक।

मुनरो (Munro) : विकास, परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बालक भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है।

जेम्स ड्रेवर (James Drever, 1968) : विकास प्राणी में होने वाला प्रगतिशील परिवर्तन है, जो किसी लक्ष्य की ओर लगातार निर्देशित करता है।

रेबर (Reber,1995) : किसी प्राणी के संपूर्ण जीवन विस्तार में होने वाले परिवर्तनों के क्रम को विकास कहते हैं।

हरलॉक (Hurlock, 1978) : विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है। इसके अलावा इसके प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तन का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएं और नवीन योग्यताएं प्रकट होती हैं।

अतः विकास की प्रक्रिया बालक के गर्भावस्था से लेकर जीवन-पर्यंत एक क्रम में चलती रहती है तथा प्रत्येक अवस्था का प्रभाव दूसरी अवस्था पर पड़ता है।

वृद्धि और विकास में अंतर
(Difference between Growth and Development)

क्र.सं.	अभिवृद्धि (Growth)	विकास (Development)
1.	वृद्धि गर्भावस्था से प्रौढ़ावस्था के शुरू होने तक चलती है।	विकास गर्भाधान से लेकर जीवनपर्यंत चलता है।
2.	वृद्धि की प्रकृति कोशिकीय व संरचनात्मक (Cellular and Structural) होती है।	विकास की प्रकृति सांगठनिक व क्रियात्मक (Organisational and Functional) होती है।
3.	प्राणी में वृद्धि बाद में होती है।	विकास प्रक्रिया पहले शुरू होती है।
4.	वृद्धि के दौरान होने वाले परिवर्तन परिमाणात्मक होते हैं।	विकास में होने वाले परिवर्तन परिमाणात्मक व गुणात्मक होते हैं।
5.	वृद्धि में होने वाले परिवर्तन रचनात्मक (Constructive) होते हैं।	विकास की क्रिया में रचनात्मक व विनाशात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन होते हैं।
6.	वृद्धि का क्रम प्राणी को वृद्धावस्था की ओर ले जाता है।	विकास का क्रम प्राणी को परिपक्वावस्था प्रदान करता है।
7.	वृद्धि एक साधारण प्रक्रिया है। इसमें केवल शारीरिक परिवर्तन ही सम्मिलित होते हैं।	विकास जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि इसमें वृद्धि व परिपक्वता दोनों सम्मिलित होते हैं।
8.	वृद्धि का न तो कोई निश्चित क्रम होता है और न ही इसकी निश्चित दिशा होती है।	विकास में एक निश्चित क्रम रहता है तथा विकास की दिशा भी निश्चित होती है।
9.	वृद्धि एक संकीर्ण अवधारणा है। परिपक्वता अभिवृद्धि की चरम सीमा है।	विकास व्यापक प्रक्रिया है। इसमें अभिवृद्धि निहित होती है।
10.	वृद्धि में होने वाले परिवर्तन शारीरिक होते हैं, अर्थात् वृद्धि में हुए परिवर्तनों को सीधे मापा जा सकता है।	विकास में शारीरिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक, मानसिक व संवेगात्मक होते हैं अर्थात् इसका सीधा मापन संभव नही है।
11.	अभिवृद्धि का स्वरुप बाह्य होता है।	विकास का स्वरुप आंतरिक व बाह्य होता है।
12.	वृद्धि प्रायः जीव (Organism) पर निर्भर होती है।	विकास जीव व वातावरण दोनों पर निर्भर होता है।

बाल विकास के विविधि आयाम
(Different Dimensions of Child Development)

बाल विकास के विभिन्न आयाम यथा- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, भाषायी आदि हैं। **बालक की शिक्षा का प्रारंभ गर्भकाल से ही हो जाता है। विकास परिपक्वता तथा अधिगम का संयुक्त प्रतिफल है।** विकास वह जटिल प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप बालक या व्यक्ति में अंतर्निहित शक्तियां एवं गुण प्रस्फुटित होते हैं। प्राणी का भौतिक विकास दो तत्वों से परिचालित होता है। ये तत्व हैं- **परिपक्वता तथा पोषण**। बालक में वृद्धि व विकास की गति की दर सदैव समान नहीं होती है।

बाल विकास के सिद्धांत
(Principles of Child Development)

व्यक्ति का विकास एवं वृद्धि कुछ निश्चित सिद्धांतों एवं नियमों के अनुसार ही होता है। अतः बच्चों के **विकास को वातावरण संबंधी घटक** यथा- भोजन, जलवायु, अभिप्रेरणा, समाज, संस्कृति, समुदाय, सीखने के अवसर, सामाजिक नियम व मानदंड सभी प्रभावित करते हैं। इसके अलावा कुछ सिद्धांत बच्चे के विकास की रचना करने वाली अवस्थाओं के एक अनुक्रम का वर्णन करने का भी प्रयास करते हैं। **गैरिसन** के अनुसार, **जब बालक, विकास की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश करता है, तब उसमें कुछ परिवर्तन दिखते हैं। ये परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों के अनुसार ही होते हैं। इन्हीं को विकास के सिद्धांत** कहते हैं। विकास के कुछ प्रमुख

सिद्धांत निम्नलिखित हैं-

1. **व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत (Principle of Individual Differences)** : प्रत्येक बालक वैयक्तिक दृष्टि से भिन्न होता है। बालकों का विकास उनकी व्यक्तिगत शक्तियों, क्षमताओं और अवसरों पर निर्भर होता है। अर्थात यह वंशानुक्रम और वातावरणीय घटकों पर निर्भर करता है।
2. **विकास क्रम का सिद्धांत (Principle of Set Sequence)** : बालक का विकास व्यवस्थित और निश्चित क्रम से होता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसको सिद्ध कर दिया है कि बालक के शारीरिक, मानसिक, भाषा, सामाजिक, संवेगात्मक आदि विकास अपने-अपने निश्चित क्रम से होते हैं। चूंकि गामक और भाषा संबंधी विकास एक-दूसरे से सहसंबंधित हैं। अतः दोनों का विकास क्रम एक जैसा ही है। जैसे- बालक जन्म के समय रोना जानता है, लेकिन कुछ समय पश्चात ब, व, म आदि अक्षर बोलने लग जाता है तथा दसवें माह में बालक पा, मा, दा आदि सार्थक शब्दों का प्रयोग करने लगता है।
3. **परस्पर संबंध का सिद्धांत (Principle of Mutual Coordination)** : बालक का विकास सदैव बहुआयामी व एकीकृत होता है। विकास के अनेक पक्ष होते हैं, जैसे- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि। प्रत्येक पक्ष में अलग-अलग अंगों व शक्तियों का विकास होता है। किंतु ये सभी प्रकार के विकास किसी केंद्रीय शक्ति से जुड़े होते हैं। बालक के विकास में परस्पर संबंध होता है। मनोवैज्ञानिकों के अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि बालक में सभी प्रकार के विकास साथ-साथ चलते हैं। उनके गुणों में अंतर न होकर मात्रा में अंतर होता है। अतः विकास के परस्पर सिद्धांत परस्पर जुड़े होते हैं।
4. **निरंतरता का सिद्धांत (Principle of Continuity)** : इसके अनुसार बालकों के विकास की प्रक्रिया सतत व अनवरत रूप से चलती रहती है। वह कभी धीमी, तेज और सामान्य होती रहती है, लेकिन रुकती नहीं है। व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं में विकास होता रहता है। यह विकास कब धीमा, तेज या सामान्य होता है, यह विकास के विभिन्न स्तरों और पहलुओं पर निर्भर करता है। **स्किनर** के अनुसार- विकास प्रक्रियाओं की निरंतरता का सिद्धांत इस तथ्य पर बल देता है कि व्यक्ति में कोई परिवर्तन आकस्मिक नहीं होता है।
5. **निश्चित दिशा का सिद्धांत (Principle of Set Direction)** : शिशु का शारीरिक विकास सिद्धांत, विकास की एक दिशा को निश्चित करता है। शारीरिक व गत्यात्मक विकास दो दिशाओं में होता है। मनोवैज्ञानिकों ने शारीरिक विकास के दिशात्मक अनुक्रम के दो नियम बताये हैं-
   (1) **मस्तकोधोमुखी (Cephalocaudal) नियम, और**
   (2) **समीपस्थ-बाह्य/ निकट-दूर (Proximodistal) नियम।**

   (1) **मस्तकोधोमुखी नियम** : इसमें शिशु का शारीरिक विकास **सिर से पैरों की ओर** होता है। इसे **मस्तकोधोमुखी या शीर्ष-पुच्छ क्रम विकास (Cephalocaudal Development)** कहते हैं। **सिर से पैर की दिशा वह क्रम है, जिसमें सबसे तेज गति से विकास** होता है। पैरों से पहले हाथों का समन्वय (**Coordination**) होता है।

   (2) **समीपोदूरस्थ/ निकट-दूर नियम / प्रोक्सिमोडिस्टल या निकट-दूरस्थ क्रम विकास (Proximodistal Development)** : प्रोक्सिमोडिस्टल/ निकट-दूरस्थ क्रम **विकास की दिशा शरीर के मध्य से बाहर की ओर** होती है। इसमें स्पाइनल कोर्ड (Spinal Cord) के आसपास विकास पहले होता है। जन्म के बाद बालक सबसे पहले सिर उठाने की कोशिश करता है, फिर बैठता है और फिर अपने पैरों पर खड़ा होता है। विकास की दिशा को निम्नांकित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है-

आयु	गतिक (Motor) विकास क्रिया
प्रथम सप्ताह	आंखों को घुमाना, सिर हिलाना
प्रथम माह	गर्दन को हिलाना, सिर उठाना
द्वितीय माह	ठोढ़ी को संभालना/ पेट के बल लेटे हुए सिर को उठाना
तृतीय माह	नेत्र गति पर नियंत्रण/ वस्तु पकड़ना व छोड़ना
छठा माह	हाथ की गति पर नियंत्रण/ गोद में बैटना
नौवां माह	बैठना/ घिसटना/ सहारे से खड़ा होना
10 माह	घुटनों के बल चलना/ रेंगना
11 माह	सहारे से चलना/ अकेले खड़े होना
एक वर्ष	बिना नियंत्रण के स्वतः चलना
एक वर्ष बाद	पैरों पर नियंत्रण बनाना
अठारह माह	पूर्णतः चलना/ दौड़ना/ सहारे से सीढियां चढ़ना।

6. **समान प्रतिमान का सिद्धांत (Principle of Uniform Pattern)** : विकासात्मक प्रतिमानों में एक प्रकार की समानता होती है। विकासात्मक प्रतिमान की भविष्यवाणी की जा सकती है। प्रत्येक प्राणी में अपनी जाति के अनुकूल एक निश्चित विकासात्मक प्रतिमान होता है। मनुष्य चाहे चीन में पैदा हो या भारत में, उसका शारीरिक, मानसिक, भाषा एवं संवेगात्मक विकास समान रूप से होता है। **हरलॉक** के अनुसार- प्रत्येक प्राणी, चाहे वह पशु हो अथवा मानव, अपनी ही जाति के अनुसार विकास के प्रतिमान का अनुगमन करता है।
7. **विकास की अलग-अलग गति का सिद्धांत (Principle of Different Motion)** : यद्यपि मानव जाति के विकास के अनुक्रम व पैटर्न (Pattern) में समानता होती है, लेकिन हर अवस्था में विकास की गति में भिन्नता होती है। **इस सिद्धांत के जनक डगलस तथा हॉलैंड** माने जाते हैं। जैसे- शैशवावस्था के समय बालक का विकास तेज, बाल्यावस्था

में धीमा और किशोरावस्था में पुनः तेज हो जाता है।

8. **सामान्य से विशिष्ट का सिद्धांत (Principle of Development from General to Particular)** : शिशु की क्रियाएं व **प्रतिक्रियाएं सामान्य से प्रारंभ होकर विशिष्ट की ओर** होती हैं। बालक प्रारंभ में संपूर्ण शरीर को हिलाना-डुलाना करता है। बाद में हाथ-पैरों की अंगुलियों को व संवेगों का प्रकटीकरण करता है। **कॉगहिल (Coghill)** के अनुसार- शिशु का पहले सिर और देह का मुख्य भाग संचलन करता है, बाद में हाथ-पैर की अंगुलियों का संचलन होता है।

9. **संपूर्ण विकास का सिद्धांत (Principle of Total Development)** : शिक्षा मनोविज्ञान में बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है, जिसमें बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक व मनोगत्यामक विकास के सभी पक्ष सम्मिलित किए जाते है।

10. **एकीकरण/ समन्वय का सिद्धांत (Principle of Integration)** : विकास की प्रक्रिया समन्वय के सिद्धांत का पालन करती है। इसके अनुसार बालक अपने अंगों को पहले पूरा चलाता है फिर उसके भागों को, फिर उन्हें एक साथ अलग-अलग तरीके से चलाता है। जैसे- पहले पूरे हाथ को घुमाना और उसके बाद अंगुलियों को चलाना।

11. **वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत (Principle of Interaction of Heredity and Environment)** : इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का परिणाम है।

बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting the Child Development)

बाल विकास को प्रभावित करने वाले दो **मुख्य कारक परिपक्वता (Maturity) और अधिगम** हैं। परिपक्वता का संबंध आनुवंशिकता (Heredity) से तथा अधिगम का संबंध वातावरण (Environment) से है। इसे **प्रकृति (Nature) और पोषण (Nurture)** भी कहा जाता है। सामान्यतः बाल विकास की प्रक्रिया **आंतरिक एवं बाह्य कारकों से** प्रभावित होती है।

(1) **जैविकीय या आंतरिक कारक (Internal Factors)** : नलिकाविहीन ग्रंथियां, रक्त चयापचय/ उपापचय (Metabolism), आयु (Age), प्रजाति (Race) तथा लैंगिक भिन्नता (Sexual differences), बुद्धि, वंशानुक्रम, दैहिक, संवेगात्मक इत्यादि बाल विकास को प्रभावित करने वाले आंतरिक कारक हैं।

(2) **वातावरण जन्य या बाह्य कारक (External Factors)** : जलवायु अथवा भौतिक वातावरण (Environment), संस्कृति (Culture), सामाजिक-आर्थिक स्थिति, परिवार, विद्यालय, खेल व व्यायाम (Sports and Exercise), शुद्ध वायु एवं प्रकाश (Fresh Air and Light), पोषण (Nutrition), संस्कृति (Culture), भयंकर रोग एवं चोट, गर्भ धारण के समय मां का स्वास्थ्य तथा मानसिक स्थिति, माता द्वारा नशीले पदार्थों का सेवन, संचार माध्यम एवं वातावरण जन्य अन्य कारक बालक के विकास को प्रभावित करने वाले बाह्य कारक हैं।

बाल विकास को प्रभावित करने वाले आंतरिक एवं बाह्य कारक निम्नांकित हैं-

(1) **बुद्धि (Intelligence)** : टर्मन ने अमूर्त चिंतन की योग्यता (Ability of Abstract Thinking) को बुद्धि कहा है। यदि बालक बुद्धिमान है तो उसमें नवीन क्रियाओं को सीखने में तत्परता दिखाई देती है और परिपक्वता शीघ्र आती है। इसके विपरीत मंद बुद्धि बालकों का शारीरिक विकास भले ही हो जाए, किंतु उनके सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक, मानसिक विकास की गति बहुत धीमी रहती है। टर्मन ने बालक के पहली बार चलने तथा बात करने की अवस्था का अध्ययन किया। 13वें मास में चलने वाले प्रखर बुद्धि, 14वें मास में चलने वाले सामान्य, 22वें मास में चलने वाले मंदबुद्धि और 33वें मास में चलने वाले मूढ़ (Idiot) बालक पाए गए हैं। इसी प्रकार बोलने के अध्ययन में क्रमशः 11, 16, 34, 51 मास वाले बालक उक्त क्रम में प्रखर बुद्धि, सामान्य, मंद एवं मूढ़ पाए गए।

(2) **यौन भेद (Sexual Discrimination)** : यौन का प्रभाव बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर पड़ता है। जन्म के समय लड़के, लड़कियों से आकार में बड़े होते हैं, किंतु लड़कियों की अभिवृद्धि तीव्र गति से होती है। यौन परिपक्वता लड़कियों में शीघ्र आती है और वे अपना पूर्ण आकार लड़कों की अपेक्षा शीघ्र ग्रहण कर लेती हैं। लड़कों का मानसिक विकास लड़कियों की अपेक्षा देर से होता है।

(3) **अंतःस्रावी ग्रंथियां (Endocrine Glands)** : बालक के विकास पर ग्रंथियों के अंतःस्राव का प्रभाव जन्म पूर्व तथा जन्म पश्चात दोनों दशाओं में होता है। थाइरॉयड ग्रंथियों से निकलने वाले थाइरॉक्सिन हार्मोन की आवश्यकता मानसिक तथा शारीरिक वृद्धि के लिए होती है। इसकी कमी से बालक मूढ़ हो जाता है। इसी प्रकार छाती में स्थित **थाइमस ग्रंथि** तथा मस्तिष्क के आधार पर स्थित **पीनियल (Pineal) ग्रंथि** से होने वाले स्राव यौन विकास करते हैं। पीनियल ग्रंथि को प्राणी की **तीसरी आंख (Third Eye)** भी कहते हैं। इसमें दोष आने से बालक में यौन परिपक्वता शीघ्र आ जाती है।

(4) **प्रजाति (Species)** : प्रजाति तत्वों का प्रभाव बालक के विकास पर देखा गया है। यद्यपि हरलॉक ने इस मत की पुष्टि नहीं की, किंतु कार्ल जुंग प्रजातीय प्रभाव को बालक के विकास में महत्वपूर्ण मानते हैं।

(5) **परिवार में स्थिति (Status of Child in Family)** : बालक का विकास इस बात पर भी निर्भर करता है कि परिवार में उसकी स्थिति क्या है। उदाहरणार्थ, एक परिवार में बड़े बेटे ने सात दिन में साइकिल चलाना सीखा और जब साइकिल घर में आ गई तो छोटे बेटे ने दो ही दिन में साइकिल चलाना सीख लिया।

विकासात्मक अवस्था सिद्धांत (Developmental Stage Theories)

विकास उम्र से संबंधित परिवर्तनों की श्रृंखला है, जो समस्त जीवन काल के दौरान होता है। सिगमंड फ्रायड, एरिक एरिक्सन, जीन पियाजे और लॉरेंस कोह्लबर्ग सहित कई प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विकास को चरणों (Stages of Development) की एक श्रृंखला के रूप में व्याख्या करते हैं। विकास में चरण या सोपान (Stage) एक अवधि है, जिसमें लोग विशिष्ट व्यवहार पैटर्न प्रदर्शित करते हैं और विशेष क्षमता स्थापित करते हैं। विभिन्न चरण/ अवस्था सिद्धांत तीन मान्यताओं को साझा करते हैं।

1. अवस्थाओं का संबंध उम्र से होता है।
2. प्रत्येक चरण के निर्माण के साथ, लोग एक विशिष्ट क्रम में चरणों से गुजरते हैं।
3. प्रत्येक अवस्था में गुणात्मक रूप से विभिन्न क्षमताओं के उभरने के साथ **विकास असंतत (Discontinuous) होता** है।

निम्नलिखित बाल विकास सिद्धांत वर्तमान में सबसे अधिक प्रचलित और प्रयोग किए जाते हैं।

- (1) **एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत** (Erikson's Psychosocial Stage Theory)
- (2) **फ्रायड का मनोलैंगिक विकास सिद्धांत** (Freud's Psychosexual Stage Theory)
- (3) **पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत** (Piaget's Cognitive Development Stage Theory)
- (4) **कोह्लबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत** (Kohlberg's Moral Development Stage Theory)
- (5) **जीन पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत** (Piaget's Moral Development Stage Theory)

(1) एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत (Erikson's Theory of Psychosocial Development)

एरिक एरिक्सन (1902-1994) अमेरिकी विकास मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषक थे, जिनका जन्म जर्मनी में हुआ। इनको **नव फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिक** भी कहा जाता है। **एरिक्सन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Childhood and Society, 1963) में मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाएं** बताई हैं। एरिक्सन के अनुसार, विकास की प्रत्येक अवस्था होने का एक आदर्श समय है। प्रत्येक अवस्था क्रमशः एक के बाद एक आती है और व्यक्तित्व क्रमशः विकसित होता जाता है। प्रत्येक चरण या अवस्था की दो विरोधी विशेषताएं होती हैं। प्रत्येक चरण में एक विशिष्ट विकासात्मक मानक होता है, जिसे पूरा करने में आने वाली समस्याओं का समाधान करना आवश्यक होता है। एरिक्सन के अनुसार, मानवीय व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक एवं ऐतिहासिक कारकों की भूमिका होने के कारण इस सिद्धांत को **व्यक्तित्व के मनोसामाजिक सिद्धांत** के नाम से भी जाना जाता है। एरिक्सन ने मानवीय प्रकृति में तीन तत्वों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है-

(1) पूर्णतावाद, (2) पर्यावरणीयता और (3) परिवर्तनशीलता।

इस सिद्धांत की मूल मान्यता के अनुसार मानवीय व्यक्तित्व कई अवस्थाओं से गुजर कर विकसित होता है। ये अवस्थाएं शाश्वत एवं पहले से निश्चित होती हैं। इतना ही नहीं, विकास की ये अवस्थाएं विशिष्ट नियम द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होती हैं, जिसे **पश्चजात/पुनर्जन्म संबंधी नियम (Epigenetic Law)** कहते हैं।

इन **मनोसामाजिक विकास/ जीवन अवधि/ विस्तार (Life span) सिद्धांत** की अवस्थाओं की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्न हैं-

(अ) मनोसामाजिक विकास अवस्था की प्रथम महत्वपूर्ण विशेषता **'संक्रांति'** है। संक्रांति (Crisis) का अर्थ है- प्राणी के जीवन का एक ऐसा टर्निंग पॉइंट (Turning Point) जो उस स्थिति में व्यक्ति की जैविक परिपक्वता एवं सामाजिक मांग दोनों के बीच अंतःक्रिया होने के कारण उत्पन्न होता है।

(ब) मनोसामाजिक विकास की प्रत्येक अवस्था में तीन आर होते हैं, जिन्हें एरिक्सन के तीन आर (Erikson Three R's) की संज्ञा दी गई है। ये तीन आर क्रमशः हैं-

1. कर्मकांडता (Ritualization) - धनात्मक व्यवहार
2. कर्मकांड (Ritual)
3. कर्मकांडवाद (Ritualism) - ऋणात्मक व्यवहार।

एरिक्सन ने मनोसामाजिक विकास की 8 **अवस्थाएं** बताई हैं, जिनसे व्यक्ति गुजरता है-

- (1) **शैशवावस्थाः** विश्वास बनाम अविश्वास
- (2) **प्रारंभिक बाल्यावस्थाः** स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता
- (3) **खेल अवस्थाः** पहल शक्ति बनाम दोषिता
- (4) **स्कूल अवस्थाः** परिश्रम बनाम हीनता
- (5) **किशोरावस्थाः** अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति
- (6) **तरुण वयस्कावस्थाः** घनिष्ठता बनाम विलगन
- (7) **मध्य वयस्कावस्थाः** जननात्मकता बनाम स्थिरता
- (8) **परिपक्वताः** अहम् संपूर्णता बनाम निराशा।

इन अवस्थाओं की विवेचना अग्रांकित प्रकार से है -

1. **शैशवावस्थाः विश्वास बनाम अविश्वास (Trust Vs Mistrust) (जीवन के प्रथम दो वर्ष)** : एरिक्सन के अनुसार, मनोसामाजिक विकास की यह प्रथम अवस्था है, जो फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत की व्यक्तित्व विकास की प्रथम अवस्था **'मुखावस्था' (Oral)** से बहुत समानता रखती है। इस अवस्था में शिशु में विश्वास व सुरक्षा की भावना विकसित होती है। विश्वास के अनुभव के लिए शारीरिक आराम, कम से कम डर, भविष्य के प्रति कम से कम चिंता जैसी स्थितियों की आवश्यकता होती है। बालक मुख्य रूप से अपनी मां और अपने परिवार के प्रति विश्वास रखता है। एरिक्सन के अनुसार, जब शैशवास्था में बच्चा विश्वास बनाम अविश्वास के द्वंद्व का समाधान अच्छे ढंग से कर लेता है, तो इससे उसमें **'आशा' (Hope)** नामक एक विशेष मनोसामाजिक गुण/ शक्ति विकसित होती है।
2. **प्रारंभिक बाल्यावस्थाः स्वायत्तता बनाम लज्जा (Autonomy Vs Shame/Doubt) (2-3 वर्ष)** : यह मनोसामाजिक विकास की दूसरी अवस्था है, जो फ्रायड के मनोलैंगिक विकास की **'गुदावस्था' (Anal)** से समानता रखती है। इस अवस्था में शिशु में स्वयं के प्रति अनुशासन की भावना विकसित हो जाती है। वह अपने शरीर पर नियंत्रण रखना सीख जाता है। यदि माता-पिता द्वारा बालक का ख्याल नहीं रखा जाता है या ज्यादा ही ख्याल रखा जाता

है, तो बालक के अंदर लज्जा या शर्म का भाव उत्पन्न हो जाता है। इस दूसरी अवस्था में विश्वास के परिणामस्वरूप स्वतंत्रता एवं आत्मनियंत्रण जैसे शीलगुणों की भावना विकसित होती है। एरिक्सन के अनुसार, जब बच्चा स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता के द्वंद्व को सफलतापूर्वक दूर कर देता है तो उसमें एक विशिष्ट मनोसामाजिक शक्ति पैदा होती है, जिसे **'इच्छाशक्ति' (Will Power)** नाम दिया है।

3. **खेल अवस्थाः पहलशक्ति बनाम अपराध बोध (Initiative Vs Guilt) (3-5 वर्ष)** : मनोसामाजिक विकास की यह तीसरी अवस्था फ्रायड के मनोलैंगिक विकास की **'लिंग प्रधानावस्था' (Phallic stage)** से मिलती है। इस उम्र तक बच्चे ठीक ढंग से बोलना, चलना, दौड़ना आदि सीख जाते हैं। इस प्रकार के कार्य उन्हें खुशी प्रदान करते हैं। उन्हें इस स्थिति में पहली बार अहसास होता है कि उनकी जिंदगी का भी कोई खास मकसद या लक्ष्य है, जिसे उन्हें प्राप्त करना ही चाहिए, किंतु इसके विपरीत जब अभिभावकों द्वारा बच्चों को सामाजिक कार्यों में भाग लेने से रोक दिया जाता है अथवा बच्चे द्वारा इस प्रकार के कार्य की इच्छा व्यक्त किए जाने पर उसे दंडित किया जाता है, तो इससे उसमें अपराध बोध की भावना का जन्म होने लगता है। एरिक्सन का मत है कि जब बच्चा पहलशक्ति बनाम दोषिता के संघर्ष का सफलतापूर्वक हल खोज लेता है तो उसमें **'उद्देश्य' (Purpose)** नामक एक नई मनोसामाजिक शक्ति का विकास होता है।

4. **स्कूल अवस्थाः परिश्रम/उद्यम बनाम हीनभावना (Industry Vs Inferiority) (5-12 वर्ष)** : मनोसामाजिक विकास की यह चौथी अवस्था फ्रायड के मनोलैंगिक विकास की **'अव्यक्तावस्था' (latency stage)** से समानता रखती है। इस अवस्था में बच्चा पहली बार स्कूल के माध्यम से औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। अपने आसपास के लोगों, साथियों से किस प्रकार का व्यवहार करना, कैसे बातचीत करनी है आदि व्यावहारिक कौशलों को सीखता है, जिससे उसमें परिश्रम की भावना विकसित होती है। किंतु किन्हीं कारणवश यदि बच्चा स्वयं की क्षमता पर संदेह करने लगता है, तो इससे उसमें हीनभावना आ जाती है, जो उसके स्वस्थ व्यक्तित्व विकास में बाधक बनती है। किंतु यदि बच्चा परिश्रम बनाम हीनता के संघर्ष से सफलतापूर्वक बाहर निकल जाता है तो उसमें **'सामर्थ्यता' (Competency)** नामक मनोसामाजिक गुण का विकास होता है।

5. **किशोरावस्थाः अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति (Identity Vs Role Confusion) (12-18 वर्ष)** : एरिक्सन के अनुसार, किशोरावस्था में व्यक्ति को इन प्रश्नों का सामना करना पड़ता है कि- वह कौन है? किससे संबंधित है? किशोरों को बहुत सारी नई भूमिकाएं और वयस्क स्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसे व्यवसाय और रोमांस। यह अवस्था फ्रायड के मनोलैंगिक विकास की **'जननेंद्रियावस्था' (Genetal stage)** से समानता रखती है। इस पहचान बनाम पहचान के संकट की अवस्था में किशोरों में दो प्रकार के मनोसामाजिक पहलू विकसित होते हैं। प्रथम है- अहम् पहचान नामक धनात्मक पहलू तथा द्वितीय है- भूमिका संभ्रांति या पहचान संक्रांति नामक ऋणात्मक

क्रम सं.	*विकास अवस्था (Stages of Development)*	*मनोसामाजिक संकट/संक्रांति (Psychosocial Crisis/ Dilemma)*	*मूलभूत गुण (Basic Virtue)*	*उम्र (Age in yrs)*	*मुख्य क्रिया (Activity)*
1.	*शैशवावस्था (Infancy)*	*विश्वास बनाम अविश्वास (Trust Versus Mistrust)*	*आशा (Hope)*	*0 - 1.5*	*भोजन लेना (Feeding)*
2.	*प्रारंभिक बाल्यावस्था (Toddlerhood)*	*स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता (Autonomy Versus Shame)*	*इच्छा (Will)*	*1.5 - 3*	*पोटी प्रशिक्षण (Toilet Training)*
3.	*खेल अवस्था/ पूर्व बाल्यावस्था (Play Age)*	*पहल शक्ति बनाम दोषिता (Initiative Versus Guilt)*	*लक्ष्य (Purpose)*	*3 - 5*	*खिलौनों से खेलना (Play with Toys)*
4.	*स्कूल अवस्था / बाल्यावस्था (School Age/ Childhood)*	*परिश्रम बनाम हीनता (Industry Versus Inferiority)*	*सामर्थ्यता (Competency)*	*5 - 12*	*विद्यालयी क्रियाएं (Schooling)*
5.	*किशोरावस्था (Adolescence)*	*अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति (Ego Identity Versus Role Confusion)*	*निष्ठा (Fidelity)*	*12 - 18*	*सहपाठी संबंध (Peer Relationship)*
6.	*तरुण वयस्कावस्था (Early Adulthood)*	*घनिष्ठता बनाम विलगन (Intimacy Versus Isolation)*	*प्यार (Love)*	*18 - 40*	*प्रेम संबंध (Love Relationship)*
7.	*मध्य वयस्कावस्था (Middle Adulthood)*	*उत्पादकता/ जननात्मकता बनाम स्थिरता (Generativity Versus Stagnation)*	*देखरेख (Care)*	*40 - 65*	*पितृत्व/मातृत्व (Parenthood)*
8.	*परिपक्वता (Maturity)*	*अहम् संपूर्णता बनाम निराशा (Ego Integrity Versus Despair)*	*बुद्धिमत्ता (Wisdom)*	*65+*	*पुनःअवलोकन या उसका गहन चिंतन*

पहलू। एरिक्सन का मत है कि जब किशोर अहम् पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति से उत्पन्न होने वाली समस्या का समाधान कर लेता है, तो उसमें **कर्तव्यनिष्ठता (Fidelity)** नामक विशिष्ट मनोसामाजिक गुण (Psychosocial Strength) का विकास हो जाता है।

6. **तरुण वयस्कावस्थाः घनिष्ठता बनाम अलगाव (Intimacy Vs Isolation) (18-40 वर्ष)** : इस अवस्था में व्यक्ति स्वतंत्र रूप से जीविकोपार्जन प्रारंभ कर देता है तथा समाज के सदस्यों, अपने माता-पिता, भाई-बहनों तथा अन्य संबंधियों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करता है। इसके साथ ही वह स्वयं के साथ भी एक घनिष्ठ संबंध स्थापित करता हैं, किंतु इस अवस्था का एक दूसरा पक्ष यह भी है कि जब व्यक्ति अपने आप में ही खोए रहने के कारण अथवा अन्य किन्हीं कारणों से दूसरों के साथ संतोषजनक संबंध कायम नहीं कर पाता है, तो इसे **विलगन या अलगाव (Isolation)** कहा जाता है। विलगन की मात्रा अधिक हो जाने पर व्यक्ति का व्यवहार मनोविकारी या गैर-सामाजिक हो जाता है। घनिष्ठता बनाम विलगन से उत्पन्न समस्या का सफलतापूर्वक समाधान होने पर व्यक्ति में **'स्नेह' (Love)** नामक विशेष मनोसामाजिक गुण का विकास होता है।
7. **मध्य वयस्कावस्थाः उत्पादनशीलता बनाम अवरोध (Generativity Vs Stagnation)** (40-65 वर्ष) : इस अवस्था को **जननात्मकता बनाम स्थिरता** से भी जाना जाता है। एरिक्सन का मत है कि इस स्थिति में प्राणी में जननात्मकता की भावना विकसित होती है, जिसका तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी भावी पीढ़ी के कल्याण के बारे में सोचना और उस समाज को उन्नत बनाने का प्रयास करना है, जिसमें भावी पीढ़ी के लोग जीवन यापन करेंगे। व्यक्ति में जननात्मकता का भाव उत्पन्न न होने पर स्थिरता पैदा होने की आशंका बढ़ जाती है, जिसमें व्यक्ति स्वयं की सुख-सुविधाओं एवं आवश्यकताओं को ही सर्वाधिक प्राथमिकता देता है। जब व्यक्ति जननात्मकता एवं स्थिरता से उत्पन्न संघर्ष का सफलतापूर्वक समाधान कर लेता है तो इससे व्यक्ति में **'देखभाल' (Care)** नामक एक विशेष मनोसामाजिक गुण का विकास होता है।
8. **परिपक्वताः संपूर्णता बनाम निराशा (Integrity Vs Disappear) (65 से अधिक)** : सामान्यतः इस अवस्था को वृद्धावस्था माना जाता है, जिसमें व्यक्ति भविष्य की ओर ध्यान न देकर अपने अतीत की सफलताओं एवं असफलताओं का स्मरण व मूल्यांकन करता है। एरिक्सन के अनुसार, **परिपक्वता** इस अवस्था की प्रमुख मनोसामाजिक शक्ति है। जब व्यक्ति सत्यनिष्ठता या संपूर्णता बनाम निराशा से उत्पन्न संघर्ष को सफलतापूर्वक हल कर लेता है तो इससे व्यक्ति में **'बुद्धिमत्ता' (Wisdom)** नामक एक विशेष मनोसामाजिक गुण का विकास होता है।

एरिक्सन के व्यक्तित्व के मनोसामाजिक सिद्धांत का शैक्षिक महत्व

(1) मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाओं में **किशोरावस्था को अत्यधिक स्थान** दिया गया है।

(2) व्यक्तित्व के विकास एवं संगठन में सामाजिक कारकों एवं स्वयं व्यक्ति की भूमिका को समान महत्व दिया है।

(3) इसमें आशावादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है, क्योंकि खामियों के साथ-साथ सामर्थ्य भी विद्यमान है, जो प्राणी को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

(4) एरिक्सन के अनुसार, समस्या कोई संकट नहीं होती है, बल्कि व्यक्ति समस्या का जितनी सफलता के साथ हल करता है, उसका उतना ही अधिक विकास होता है।

(2) फ्रायड का मनोलैंगिक विकास सिद्धांत (Freud's Psychosexual Stage Theory)

फ्रायड (1856-1939) ने मनोलैंगिक विकास के आधार पर पांच प्रकार का व्यक्तित्व बताया है-

(अ) **मुखीय कामुक काल (Oral Stage) : (जन्म से 1 वर्ष)**

(ब) **गुदा अवस्था (Anal Stage) : (1 से 3 वर्ष)**

(स) **लिंग प्रधान अवस्था (Phallic Stage) : (3 से 6 वर्ष)**

(द) **अदृश्यावस्था (Latency Stage) : (6 से 13 वर्ष)**

(य) **जननेंद्रियावस्था (Genital Stage) : (वयस्क से युवावस्था)**

नोट : इसे पुस्तक के भाग चार के व्यक्तित्व के अध्याय में विस्तार से समझाया गया है।

(3) पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत (Piaget's Cognitive Development Stage Theory)

जीन पियाजे को संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का जनक (Father of Cognitive Psychology) कहा जाता है। पियाजे ने संज्ञानात्मक ढांचे (Cognitive structure) को **जैविक ज्ञान-मीमांसा (Genetic Epistemology)** भी कहा है। जैविक ज्ञान-मीमांसा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य के लिए **1979 में इन्हें प्रतिष्ठित बालजेन पुरस्कार (Balzan prize)** से सम्मानित किया गया। पियाजे ने बच्चों को **नन्हे वैज्ञानिक (Little Scientist)** कहा है।

पियाजे ने अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धांतों की आलोचना करते हुए **संज्ञानात्मक विकास का गत्यात्मक मॉडल (Dynamic Model of Cognitive Development)** प्रस्तुत किया, जिसे **'निर्मितवाद/ निर्माणवाद/ रचनावाद/ कंस्ट्रक्टिविज्म' (Constructivism)** के नाम से जाना जाता है।

संज्ञानात्मक विकास का अर्थ

संज्ञानात्मक विकास से अभिप्राय संज्ञानात्मक योग्यताओं (बुद्धि, चिंतन, कल्पना आदि) के विकास से है। अतः **संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अंतर्गत बच्चे का चिंतन, बुद्धि तथा भाषा में परिवर्तन** आता है। इन तीनों परिवर्तनों में संवेदन (Sensation), प्रत्यक्षीकरण (Perception), प्रतीकीकरण (Symbolism), प्रतिमा-धारणा (Imagery), प्रत्याह्वान (Remembering), धारणा (Retention), सूझ (Insight), प्रत्याशा (Expectancy), विश्वास (Belief), जटिल नियम उपयोग (Use of Complex Rule), समस्या-समाधान (Problem Solving), चिंतन, तर्कशक्ति जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं शामिल होती हैं।

अतः संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिंतन करने तथा क्रमिक रूप से उसे इस

लायक बना देने से होता है, जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह-तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते हैं।

पियाजे ने अपनी किताब **'ऑरिजंन्स ऑफ इंटेलीजेन्स इन द चाइल्ड' (Origins of Intelligence in the Child, 1936)** में बताया कि-बालक द्वारा अर्जित ज्ञान के भंडार का स्वरूप विकास की प्रत्येक अवस्था में बदलता है और परिमार्जित होता रहता है, इसलिए इसे **अवस्था सिद्धांत (Stage Theory)** भी कहा जाता है। पियाजे के अनुसार, विकास की अवस्थाएं क्रमिक होती हैं और वे इस प्रकार के अधिगम को प्राकृतिक प्रक्रिया मानते हैं। जीन पियाजे ने अपने ज्यादातर प्रयोग अपनी **दोनों पुत्रियों व एक पुत्र** पर किए। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत को दो भागों में बांटा है-

(1) **संज्ञानात्मक विकास का अवस्था सिद्धांत (Cognitive Development Stage Theory)**

(2) **संज्ञानात्मक विकास का प्रक्रिया सिद्धांत (Cognitive Development Process Theory)**

(1) संज्ञानात्मक विकास का अवस्था सिद्धांत (Cognitive Development Stage Theory)

पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास निश्चित अवस्थाओं के क्रम में होता है। पियाजे ने बालक के संज्ञानात्मक विकास को चार

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
(Piaget's Theory of Cognitive Development, 1936)

क्र. सं.	अवस्था (Stage)	उम्र (Age)	अवस्था का विवरण (Description)	विकासात्मक घटना (Developmental Phenomena)
1.	संवेदी गामक (Sensory Motor Stage)	जन्म से 2 वर्ष	संवेदी इन्द्रियों व क्रियाओं द्वारा बाह्य जगत को अनुभव करना (देखना, सुनना, छूना, सूंघना, होठ हिलाना, हाथ-पैर हिलाना आदि)	वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) का विकास, वस्तु संयोजन का विकास अजनबी चिंता (Stranger anxiety) विलंबित अनुकरण (Deferred imitation) जिज्ञासा की उत्पत्ति, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार
2.	पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)	2-7 वर्ष	तार्किक चिंतन की बजाय अन्तर्दृष्टि का प्रयोग करते हुए शब्दों व चित्रों को प्रस्तुत करना प्रतिकात्मक विचारों का विकास (Symbolic & Pre-conceptual Thoughts) अनुत्क्रमणीयता (Irreversibility)	कल्पना करना (Imagination) भाषा कौशल (Language Skills) समस्या समाधान योग्यता का विकास आत्मकेद्रिंता (Egocentrism) जीवात्म (Animism) दिखावा करना (Pretend Play) सकर्मक तर्कणा (Transductive Reasoning) केन्द्रण (Centration/Concentration) उल्टी क्रिया में असमर्थता (Inability to Reverse Operation)
3.	मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)	7-11 वर्ष	मूर्त घटनाओं के बारे में तार्किक चिंतन (Concrete Logical Thinking) का विकास मूर्त संक्रियात्मक विचार (Concrete Operational Thought) संज्ञानात्मक नक्शे बनाने की क्षमता	संरक्षण (Conservation) वर्गीकरण व समूहीकरण (Classification) क्रमबद्धता (Seriation) विकेन्द्रण (Decentration), गणितीय रूपान्तरण प्रतिवर्त्यता/उलटने पलटने की योग्यता/उत्क्रमणीयता (Reversibility)
4.	औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)	11 से 18 वर्ष	महत्वपूर्ण घटनाओं या अमूर्त विचारों के बारे में तार्किक चिंतन (Abstract-Logical Thinking) का विकास आदर्शवादी सोच समझ का स्थानांतरण उच्च स्तरीय संतुलन संबंधात्मक व योजनाबद्ध चिंतन	अमूर्त तार्किक चिंतन (Abstract logical thinking) निगमनात्मक चिंतन (Deductive thinking) सादृश्यात्मक चिंतन (Analogical thinking) परिकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical thinking) चिंतनशील क्षमताएं (Reflective abilities)

भागों में बांटा है -

(1.) **संवेदी पेशीय/ संवेदात्मक गामक/ इंद्रिय गतिक अवस्था (Sensory Motor Stage)** : जन्म से 2 वर्ष

(2.) **पूर्व परिचालनात्मक/ प्राक्संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational Stage)** : 2 से 7 वर्ष

(3.) **ठोस / मूर्त संक्रिया अवस्था (Concrete Operational Stage)** : 7 से 11 वर्ष

(4.) **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)** : 11 से 18 वर्ष

(1.) **संवेदी क्रियात्मक/ संवेदी पेशीय/ इंद्रिय गतिक अवस्था (Sensory Motor Stage) : जन्म से 2 वर्ष -** पियाजे ने इसे संवेदी पेशीय अवस्था इसलिए कहा है, क्योंकि बुद्धि की प्रारंभिक अभिव्यक्तियां संवेदी धारणाओं और मोटर गतिविधियों (Sensory Perceptions and Motor Activities) से प्रकट होती हैं।

इस अवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नांकित हैं-

1. घर पर बोले जाने वाले एकाक्षर शब्दों को बोलना।
2. किसी आवाज के प्रति आकर्षित होना तथा गंभीर आवाज से डर कर रोना।
3. **वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) का संज्ञान** होना। वस्तु स्थायित्व के द्वारा बालक यह जान लेता है कि घटनाएं एवं वस्तुएं तब भी उपस्थित रहती हैं, जब वे हमारे सामने (देखी, सुनी या महसूस) नहीं होती हैं।
4. इस अवस्था में कुछ प्रत्यक्ष क्रियाएं, जैसे- अंगूठा चूसना, हिलती हुई वस्तुओं को देखना, किसी वस्तु को पकड़ने के लिए आकर्षित होना या जिद करना आदि करता है।

इस अवस्था में बालक केवल **व्यावहारिक बुद्धि (Practical intelligence)** यानि अपनी संवेदनाओं और शारीरिक क्रियाओं की सहायता से ज्ञान अर्जित करता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो उसके भीतर **सहज क्रियाएं (Reflexes)** होती हैं। इन सहज क्रियाओं और ज्ञानेंद्रियों की सहायता से बच्चा वस्तुओं, ध्वनियों, स्पर्श, रसों एवं गंधों का अनुभव प्राप्त करता है। इस अवस्था में बच्चे का शारीरिक व मानसिक विकास तेजी से होता है। उसके भीतर भावनाओं का विकास भी होता है।

पियाजे ने इस अवस्था को छह उप-अवस्थाओं में बांटा है-

1. सहज क्रियाओं की अवस्था (Reflexes) (जन्म से 30 दिन तक)
2. प्रमुख वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Primary Circular Reactions) (1 माह से 4 माह)
3. गौण वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Secondary Circular Reactions) (4 माह से 8 माह)
4. गौण स्किमेटा की समन्वय की अवस्था (Coordination of Reactions) (8 माह से 12 माह)
5. तृतीय वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Tertiary Circular Reactions) (12 माह से 18 माह)
6. मानसिक सहयोग द्वारा नए साधनों की खोज की अवस्था (Early Representational Thought) (18 माह से 24 माह)।

(2.) **पूर्व संक्रियात्मक/ पूर्व परिचालनात्मक या प्राक्संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational Stage) : 2 से 7 वर्ष -** इस अवस्था में बालक अपने परिवेश की वस्तुओं को पहचानने लगता है एवं उनमें अंतर करने लगता है। इस दौरान बच्चे प्रायः खेल व अनुकरण द्वारा सीखते हैं। वे समझने की अपेक्षा रटकर सीखते हैं। वह पहली अवस्था की तुलना में अधिक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम हो जाता है। इस अवस्था को **विद्यालय पूर्व अवस्था तथा प्रतीकों के निरूपण की अवस्था** माना जाता है। इस अवस्था में बच्चा **आत्मकेंद्रित (Egocentric)** होने का भाव अभिव्यक्त करता है। इस अवस्था की मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार हैं-

1. खिलौने की आयु इसी अवस्था को कहा जाता है।
2. नई वस्तुओं को देखकर सोचना एवं कल्पना करना।
3. प्रारंभिक स्तर में पूछे गए प्रश्नों की पुनरावृत्ति करना।
4. इस अवस्था में मापन की अवधारणा का विकास होना। **प्रत्यक्षात्मक (Perpectual) चिंतन** का विकास
5. रंगों को पहचानने में समर्थ होना, हस्तकला का विकास होना, जैसे- खिलौने बनाना व खिलौने से खेलना। **मौखिक भाषा का तीव्र विकास**।
6. बालक का अपने आसपास की वस्तुओं, प्राणियों व शब्दों में संबंध स्थापित करने में समर्थ होना।
7. इसमें 4 वर्ष तक का बच्चा **जीववाद (Animism)** से प्रभावित रहता है। **जीववाद से तात्पर्य निर्जीव वस्तुओं को सजीव वस्तुओं के रूप में समझना** है। जैसे- यह मानता है कि खिलौने, बादल, साइकिल, हवा, घड़ी आदि वस्तुएं सजीव है।
8. छह वर्ष तक आते-आते बच्चे का मूर्त प्रत्ययों के साथ अमूर्त प्रत्ययों का भी निर्माण करने में सक्षम होना।
9. इस अवस्था में बच्चों में **केंद्रण (Centration)** प्रारंभ हो जाता है। **केंद्रण या केंद्रीकरण किसी स्थिति के एक ही पहलू पर विचार करने की क्षमता** को दर्शाता है।

पियाजे के अनुसार, इस अवस्था में बालक **कार्य और कारण के संबंध से अनजान** होता है यानि किसी भी कार्य का क्या संबंध होता है, जैसे तार्किक चिंतन (Logical Thinking) के प्रति अनभिज्ञ रहता है। अभी मानसिक रूप से अपरिपक्व होने के कारण बच्चे समस्या समाधान के दौरान समस्या के केवल एक ही पक्ष को जान पाते हैं। इसे **सकर्मक/अनुत्क्रमणशील तर्कणा (Irreversible/ Transductive Reasoning)** कहते हैं।

इस अवस्था में प्रकट होने वाले लक्षणों को पियाजे द्वारा दो उप-अवस्थाओं में विभाजित किया गया है-

(अ). पूर्व प्रत्यात्मक/प्राक्संप्रत्यात्मक काल (2-4 वर्ष)

(ब). अंतः प्रज्ञा/अंतर्दर्शी काल (4-7 वर्ष)

(अ) **प्राक्संप्रत्यात्मक (Symbolic Function Sub-stage) :** यह अवधि 2 से 4 वर्ष तक की होती है। इस अवधि में बालक बाह्य जगत की विभिन्न वस्तुओं एवं व्यक्तियों की मानसिक उपस्थिति के लिए विभिन्न संकेतों का विकास कर लेता है। भाषा का विस्तृत प्रयोग तथा आभासी क्रियाएं बच्चों में सांकेतिक विचारों के विकास को दिखाती हैं, जैसे- लकड़ी को ट्रक समझकर चलाते हुए खेलना।

(ब) **अंतर्दर्शी अवधि (Intuitive Thought Sub-stage)** : यह अवधि लगभग 4 से 7 साल की होती है। इस अवधि में बच्चों में प्रारंभिक तर्कशक्ति आ जाती है और इससे संबंधित विभिन्न प्रश्नों को जानना चाहता है। पियाजे ने इसे अंतर्दर्शी अवधि इसलिए कहा है, क्योंकि बच्चे इस अवधि में अपने ज्ञान व समझ के बारे में पूर्णतया जानने लग जाते हैं। उदाहरण के लिए, वे गणितीय घटाव व गुणा कर पाते हैं, लेकिन कहां प्रयोग करना है और क्यों प्रयोग करना है, इसे नहीं समझ पाते हैं।

(3.) **ठोस या मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage) : 7 से 11 वर्ष** - इस अवस्था में बालक विद्यालय जाना प्रारंभ कर लेता है और उस में वस्तुओं एवं घटनाओं के बीच समानता, विकेंद्रण (Decentration), विलोमनीयता (Reversibility), भिन्नता आदि को समझने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। वह तर्क कर सकता है। इस अवस्था में बालकों में वर्गीकरण (Classification), क्रमबद्धता यानि क्रमानुसार व्यवस्था (Seriation), किसी भी वस्तु, व्यक्ति के मध्य पारस्परिक संबंध का ज्ञान हो जाता है। इस में बालक सामाजिक अनुकूलन के कारण बहुत से नियम सीख लेता है। इस अवस्था की निम्नांकित विशेषताएं होती हैं-

1. प्रारंभिक विद्यालय में अध्ययन की अवस्था।
2. बालक का अधिक व्यावहारिक व यथार्थवादी होना।
3. बच्चों के मानसिक विकास यथा- तर्कशक्ति की क्षमता का विकास होना।
4. संख्या बोध अर्थात् गणित को जानने व वस्तुओं को गिनने की क्षमता का विकास होना।
5. बालक वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर पहचानता है, लेकिन **चिंतन में क्रमबद्धता का अभाव** होता है।
6. इस अवस्था में गणितीय अधिगम एवं गणितीय सोच का विकास होता है, लेकिन वे अभी भी अमूर्त समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने में असमर्थ होते हैं।
7. इस अवस्था में बालकों में कुछ क्षमताएं विकसित हो जाती हैं। जैसे-संरक्षण, विकेंद्रण, विलोमनीयता आदि।

- **संरक्षण/कंजर्वेशन (Conservation) :** जब कोई ज्ञान पदार्थ रूप में बदल जाने के बाद भी मात्रा, संख्या, भार और आयतन की दृष्टि से समान रहता है, उसे **संरक्षण** कहते हैं।
- **विकेंद्रीकरण (Decentration) :** यह किसी वस्तु या स्थिति की केवल एक ही विशेषता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय कई विशेषताओं पर ध्यान देने की क्षमता है।
- **क्रमबद्धता (Seriation) :** वस्तु की लंबाई, वजन के अनुसार उनको क्रम से लगा देने की क्षमता।

पियाजे के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञानात्मक विकास की इस अवस्था में बच्चों के विचारों में संक्रियात्मक क्षमता आ जाती है और अंतर्दर्शी तर्कशक्ति की जगह **तार्किक सोच (Logical Reasoning)** आ जाती है। हालांकि बालक समस्या समाधान हेतु मूर्त परिस्थितियों पर ही निर्भर रहता है।

(4.) **अमूर्त/औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage) : 11 से 18 वर्ष** - यह चरण किशोरावस्था का होता है। इसमें व्यक्ति अपनी बात पर वह काल्पनिक और निगमनात्मक तर्क दे सकता है। **अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking)** इस अवस्था की प्रमुख विशेषता है। इस अवस्था में सोच में **परिकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical Thinking)** की क्षमता आ जाती है। औपचारिक संक्रिया अवस्था में चिंतन की अमूर्त गुणवत्ता, मौखिक कथनों की समस्या हल करने की क्षमता पैदा हो जाती है। इस अवस्था में **भाषा संबंधी योग्यता अपने चरम** पर होती है। बालक अच्छी तरह सोचने लगता है और किसी भी समस्या का समाधान ढूंढ़ने के लिए **अमूर्त विचारों का निर्माण** करता है। पियाजे ने औपचारिक संक्रिया अवस्था संबंधी विचार जानने के लिए सबसे सरल परीक्षण **'तीसरी आंख की समस्या' (Third eye problem)** किया था। इसमें बच्चों से पूछा गया कि वे एक अतिरिक्त आंख कहां लगाएंगे, यदि वे तीसरी आंख लगा सकते हैं, तो क्यों। इस अवस्था में उसमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो जाता है। इस अवस्था की विशेषताएं निम्नांकित हैं-

1. अमूर्त व तार्किक चिंतन (Logical Thinking) की क्षमता का विकास
2. सादृश्य व निगमनात्मक चिंतन (Analogical and Deductive Thinking) की क्षमता का विकास
3. चिंतनशील क्षमता (Reflective Abilities) की क्षमता का विकास
4. वास्तविक-अवास्तविक में अंतर समझने की क्षमता का विकास
5. वास्तविक अनुभवों को काल्पनिक परिस्थितियों में ढालने की क्षमता का विकास।

पियाजे के अनुसार, इस अवस्था में बच्चे वैज्ञानिकों की तरह **तार्किक सोच** रखते हैं। गणितीय संक्रियाओं, जैसे- समय एवं दूरी, अनुपात समानुपात, प्रतिशत, ज्यामितीय संक्रिया, मानचित्र आदि का अधिगम करता है।

(2) संज्ञानात्मक विकास का प्रक्रिया सिद्धांत (Cognitive Development Process Theory)

नोट : इसको अधिगम सिद्धांत के अध्याय में समझाया गया है।

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत का शैक्षिक महत्व

पियाजे यह भी कहते हैं कि **सीखना यांत्रिक क्रिया नहीं है, बल्कि एक बौद्धिक प्रक्रिया होती** है। सीखना एक संप्रत्यय निर्माण करना होता है और निर्माण करने की यह प्रक्रिया सरल से कठिन की ओर चलती है। जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है, वैसे-वैसे उसका कार्य-क्षेत्र भी बढ़ता है और बुद्धि का विकास भी संभव होता है। इसमें व्यक्ति अपने परिवेश और वातावरण के साथ सक्रिय रूप से अंतःक्रिया करता है।

- पियाजे ने **अनुकरण व खेल की क्रिया** को महत्व दिया है। बच्चे सीखने में धीमे होते हैं उन्हें दण्ड नहीं देना चाहिए।
- इस सिद्धांत के अनुसार, **चालक (Drives) और अभिप्रेरणा (Motivation) अधिगम व विकास के लिए आवश्यक** हैं।
- पियाजे के अनुसार, **सीखना एक क्रमिक (Orderly), असंतत (Discontinuous) एवं आरोही (Progressive) प्रक्रिया** है।
- पियाजे के अनुसार, **बौद्धिक विकास केवल नकल नहीं है, बल्कि खोज पर आधारित** है। बच्चों में चिंतन एवं खोज करने की शक्ति उसकी जैविक परिपक्वता, अनुभव एवं इन दोनों की अंतःक्रिया पर निर्भर करता है।
- पियाजे ने **जैविक परिपक्वता पर बल दिया** है। सभी बच्चे विकास के समान अनुक्रम से गुजरते हैं, लेकिन उनकी गति या रफ्तार अलग-अलग होती है। इसलिए शिक्षकों को अलग-अलग विद्यार्थियों के लिए और छोटे-छोटे समूहों के लिए गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए।

(4) कोह्लबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg's Theory of Moral Development)

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **लॉरेंस कोह्लबर्ग** (**Lawrence Kohlberg,1958**) का नैतिक विकास सिद्धांत स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे (1932) के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का एक मूल रूपांतर है। कोह्लबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत को **अवस्था सिद्धांत (Stage Theory)** भी कहा गया है। नैतिक व्यवहार जन्मजात नहीं होता है, बल्कि इसे सामाजिक परिवेश से सीखा या अर्जित किया जाता है। **लॉरेंस कोह्लबर्ग (1927-1987)** के नैतिक विकास के छह चरण हैं। उसने पाया कि ये चरण सार्वभौमिक होते हैं। इन छह चरणों में से प्रत्येक चरण नैतिक दुविधाओं को सुलझाने में अपने पूर्व चरण से अधिक परिपूर्ण होता है। पियाजे की तरह कोह्लबर्ग ने भी पाया कि नैतिक विकास कुछ चरणों (Steps) में होता है। अलग-अलग उम्र के बच्चों से इन सवालों के जवाबों का अध्ययन करते हुए कोह्लबर्ग को यह ज्ञात होता है कि लोगों की उम्र बढ़ने के कारण नैतिक तर्क कैसे बदल गया। **इस न्यादर्श में पहले तो 4-16 साल आयु वर्ग के लड़कों को व बाद में 28 साल तक के व्यक्तियों** को सम्मिलित किया गया था।

कोह्लबर्ग के अनुसार, सही और गलत के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन प्रक्रिया को **नैतिक तर्कणा (Moral Reasoning)** कहा जाता है। सही और गलत के बारे में निर्णय नहीं ले पाने की स्थिति **नैतिक द्वंद्व/दुविधा (Moral Dilemma)** कहलाती है। **बच्चों में नैतिकता 4 साल की उम्र से शुरू हो जाती है, जिसका मुख्य आधार डर/ भय/ दंड** का प्रभाव होता है।

नैतिक विकास की अवस्थाएं (Stages of Moral Development): कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास के कुल छह चरणों का वर्णन किया है, लेकिन उन्होंने दो-दो चरणों या उप-अवस्थाओं को एकसाथ रखकर उनके **तीन बुनियादी स्तर** बना दिए हैं-

(1) **पूर्व परंपरागत स्तर (Pre-Conventional Level)**

(2) **परंपरागत/रूढिगत स्तर (Conventional Level)**

(3) **पश्च परंपरागत स्तर (Post-Conventional Level)।**

(1) **पूर्व परंपरागत/लौकिक स्तर (Pre-Conventional Level) : (4 से 10 वर्ष) -** इसे **बाल्यावस्था (Childhood)** के रूप में भी जाना जाता है। यह नैतिक चिंतन का सबसे निचला स्तर है। इस स्तर पर क्या सही और गलत है, पर बाहर से मिलने वाली सजा और उपहार का प्रभाव पड़ता है। इस स्तर में नैतिकता पर **बाह्य नियंत्रण** रहता है। जब बालक किसी बाहरी भौतिक घटना के संदर्भ मे किसी आचरण को नैतिक अथवा अनैतिक मानता है तो उसकी नैतिक तर्क शक्ति पूर्व परंपरागत स्तर की कही जाती है। इसे **बंटनात्मक यथार्थवाद (Distributive realism)** का स्तर भी कहते हैं। कोह्लबर्ग द्वारा इस अवस्था में 4 से 10 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को लिया गया। इस स्तर के अंतर्गत दो चरण या उप अवस्थाएं आती हैं-

(अ) आज्ञा एवं दंड की अवस्था
(Stage of Order and Punishment)

(ब) अहंकार की अवस्था (Stage of Ego)।

चरण 1. आज्ञाकारिता और सजा अभिविन्यास या आज्ञा एवं दंड की अवस्था (Orientation/ Stage of Order and Punishment) : यह नैतिकता की पूर्व परंपरागत अवस्था का पहला चरण है। यह बाहरी सत्ता पर आधारित है। यहां नैतिक सोच, सजा (Punishment) से बंधी होती है। जैसे, बच्चे यह मानते हैं कि उन्हें बड़ों की बातें माननी चाहिए, नहीं तो बड़े उन्हें दंडित करेंगे। बालक द्वारा मान्य व्यवहार पुरस्कार प्राप्त करने या दंड से बचने के लिए किया जाता है। यहां '**जिसकी लाठी उसकी भैंस**' कहावत चरितार्थ होती है।

चरण 2. व्यक्तिगतता और विनिमय या अहंकार की अवस्था (Stage of Ego) : यह पूर्व परंपरागत अवस्था का दूसरा चरण है। इस अवस्था को **यांत्रिक/साधन सापेक्षता (Instrumental relativity)** भी कहते हैं। यह व्यक्ति केंद्रित, एक दूसरे का हित साधने पर आधारित नैतिक चिंतन की अवस्था है। बालक **आत्मकेंद्रिता (Egocentrism)** यानी 'मेरे लिए इसमें क्या है?' स्थिति को व्यक्त करता है। इस अवस्था में बालक की सभी नैतिक क्रियाएं अपनी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं पर केंद्रित होती हैं। बालक के लिए वही क्रिया नैतिक होती है, जो उसके हित में होती है। अतः इस स्तर की नैतिक सोच यह कहती है कि वही बात सही है जिसमें बराबरी का लेनदेन हो रहा हो। अगर हम

दूसरे की कोई इच्छा या आवश्यकता पूरी कर दें तो वे भी हमारी इच्छा पूरी कर देंगे (Give and Take Equally)। यहां 'तुम मेरी पीठ खुजलाओ, मै तुम्हारी पीठ खुजलाऊंगा' कहावत चरितार्थ होती है।

(2) **परंपरागत / लौकिक स्तर (Conventional Level) : (10 से 13 वर्ष) -** इसे **किशोरावस्था (Adolescence)** के रूप में भी जाना जाता है। इस स्तर पर लोग एक पूर्व आधारित सोच से चीजों को देखते हैं। जैसे- बच्चों का व्यवहार उनके मां-बाप या किसी बड़े व्यक्ति द्वारा बनाए गए नियमों पर आधारित होना। इस स्तर में नैतिकता पर **सामाजिक नियंत्रण** रहता है। इस स्तर पर **नियमों व सिद्धांतों के अनुसार नैतिकता** होती है। इसे **नैतिक यथार्थवाद (Moral realism)** का स्तर भी कहते हैं। इस स्तर को भी दो उप-अवस्थाओं या चरणों में विभाजित किया जाता है-

(अ) प्रशंसा की अवस्था (Stage of Appreciation)

(ब) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (Stage of Respect for Social System)।

चरण 3. अच्छे पारस्परिक संबंध या प्रशंसा की अवस्था (Stage of Appreciation) : इस अवस्था में लोग विश्वास, दूसरों का ख्याल रखना, दूसरों के निष्पक्ष व्यवहार को अपने नैतिक व्यवहार का आधार मानते हैं। बच्चे और युवा अपने माता-पिता द्वारा निर्धारित किए गए नैतिक व्यवहार के मापदंडों को अपनाते हैं, जो उन्हें उनके माता-पिता की नजर में एक '**अच्छा लड़का या अच्छी लड़की**' **(Good Boy or Good Girl)** बनाते हैं। इस अवस्था का मुख्य लक्ष्य दूसरों को प्रसन्न करना या स्वीकृति पाना है, जिससे उसे प्रशंसा मिले।

चरण 4. सामाजिक आदेश को बनाए रखना या सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (Stage of Respect for Social System) : यह कोह्लबर्ग के सिद्धांतों की चौथी अवस्था है। इस अवस्था की नैतिकता व अनैतिकता का असर समाज पर होने लगता है। इस स्थिति में लोगों के नैतिक विकास की अवस्था सामाजिक आदेश, कानून, न्याय और कर्त्तव्यों पर आधारित होती है। इस अवस्था में बालक में सामाजिक नियमों के प्रति नैतिकता का विकास होता है। इस अवस्था में उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान हो जाता है। वह समझने लगता है कि कौनसा व्यवहार उसके समाज के हित में है या नहीं। वह न्याय व कर्त्तव्यों को समझने लग जाता है। जैसे- किशोर सोचते हैं कि समाज अच्छे से चले, इसके लिए कानून द्वारा बनाए गए दायरे के अंदर ही रहना चाहिए।

(3) **पश्च परंपरागत/ उत्तर लौकिक स्तर (Post-Conventional Level): (13 वर्ष से प्रौढ़ावस्था तक) -** इसे **युवा-प्रौढ़ावस्था (Young Adulthood)** के रूप में भी जाना जाता है। इसे **आत्म अंगीकृत नैतिक मूल्य स्तर** भी कहते हैं। कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांतों के इस स्तर पर वैकल्पिक रास्ते खोजे जाते हैं और फिर अपना एक व्यक्तिगत लाभ (Personal Benifit) वाले व्यवहार का रास्ता ढूंढ़ा जाता है। व्यक्तिगत निर्णय स्वयं चुने हुए सिद्धांतों पर आधारित हैं और नैतिक तर्क व्यक्तिगत अधिकारों व न्याय पर आधारित हैं। इस स्तर में नैतिकता पर **आंतरिक नियंत्रण** रहता है। यह स्तर **सहयोगात्मक नैतिकता (Morality of cooperation)** के रूप में भी जाना जाता है। कोह्लबर्ग ने अपने तीसरे स्तर को भी दो उप-अवस्थाओं में बांटा है-

(अ) सामाजिक समझौते की अवस्था (Stage of Social Contract)

(ब) विवेक/सार्वभौमिक सिद्धांत की अवस्था (Stage of Conscience/Universal Principle)।

चरण 5. सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार या सामाजिक समझौते की अवस्था (Stage of Social Contract) : इस अवस्था में व्यक्ति समाज के नियमों का पालन करता है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि समाज के साथ समझौता बनाए रखना है या तोड़ना है। इस अवस्था में व्यक्ति यह सोचने लगता है कि कुछ मूल्य, सिद्धांत और अधिकार कानून से भी ऊपर हो सकते हैं। व्यक्ति वास्तविक सामाजिक व्यवस्थाओं का मूल्यांकन इस दृष्टि से करने लगता है कि वे किस हद तक मूल अधिकारों व मूल्यों का संरक्षण करते हैं।

चरण 6. सार्वभौमिक सिद्धांत या विवेक की अवस्था (Stage of Conscience) : इसे **विवेक की अवस्था** भी कहते हैं। यह सार्वभौमिक नीति सम्मत सिद्धांतों पर आधारित नैतिक चिंतन की अवस्था है। यह कोह्लबर्ग के नैतिक सिद्धांतों की सबसे ऊंची और छठी अवस्था है। इस अवस्था में व्यक्ति सार्वभौमिक मानवाधिकार पर आधारित नैतिक मापदंड बनाता है। जब भी कोई व्यक्ति **अंतरात्मा की आवाज** के द्वंद्व के बीच फंसा होता है, तो वह यह तर्क करता है कि अंतरात्मा की आवाज के साथ चलना चाहिए, चाहे वो निर्णय जोखिम से भरा ही क्यों न हो। इसीलिए उसे कुछ भी करने से पहले अपनी भावनाओं के अलावा औरों के जीवन के बारे में भी सोचना चाहिए।

कोह्लबर्ग (1958) की प्रसिद्ध हाइंस दुविधा (Heinz Dilemma)

कोह्लबर्ग की सबसे अच्छी कहानियों में से एक **हाइन्स (Heinz)** नामक एक व्यक्ति से संबंधित है जो यूरोप में कहीं रहता था। हाइन्स की **पत्नी क्लारा (Clara)** एक विशेष प्रकार के कैंसर से मौत के कगार पर थी। डॉक्टरों ने कहा कि एक नई दवा जो एक रसायनज्ञ (Chemist) द्वारा बनाई गई है, उससे उसे बचाया जा सकता है। एक स्थानीय रसायनज्ञ द्वारा दवा की खोज की गई थी और हाइंस ने कुछ खरीदने के लिए सख्त कोशिश की थी, लेकिन रसायनज्ञ दवा बनाने के लिए दस गुना पैसे मांग कर रहा था। यह हाइंस के लिए बहुत अधिक था। हाइन्स केवल उसकी लागत ही चुका सकता था। वह परिवार और दोस्तों से मदद के बाद भी आधे पैसे एकत्रित कर सका। उसने रसायनज्ञ को समझाया कि उसकी पत्नी मौत के कगार पर है और पूछा कि क्या वह दवा सस्ती हो सकती है या बाद में बाकी राशि चुका देगा, उसके लिए ठहर जाए। लेकिन रसायनज्ञ ने इनकार कर दिया कि उसने दवा की खोज की और इससे वह पैसे कमाने जा रहे है। पति अपनी

पत्नी को बचाने के लिए बेताब था, इसलिए उस रात वह केमिस्ट की दुकान में दवा चुराने के लिए घुस गया और दवा चुरा ली।

यह कहानी पढ़ने के बाद जिन बच्चों से साक्षात्कार लिया गया, उन्हें नैतिक दुविधा/धर्मसंकट (Moral Dilemma) पर बनाए गए कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होते थे।

- क्या हाइन्स को दवा चोरी करनी चाहिए थी?
- क्या चोरी करना सही है या गलत है, क्यों?
- क्या यह एक पति का कर्त्तव्य है कि वो अपनी पत्नी के लिए दवाई चोरी करके लाए?
- क्या दवाई बनाने वाले को हक है कि वह दवाई के इतने पैसे मांगे?
- क्या पुलिस को रसायनज्ञ को हत्या के लिए गिरफ्तार करना चाहिए, यदि महिला की मृत्यु हो गई है?
- क्या ऐसा कोई कानून नहीं है, जिससे दवा की कीमत पर अंकुश लगाया जा सके, क्यों और क्यों नहीं?

अतः कहा जा सकता है कि नैतिक तर्कणा (Moral Reasoning) आयु के अनुसार विकसित और परिवर्तित होती है। यानी इन छह अवस्थाओं में से प्रत्येक अवस्था नैतिक दुविधाओं को सुलझाने के लिए अपनी पूर्व अवस्था से अधिक परिपूर्ण होती है।

(5) जीन पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत (Jean Piaget's Theory of Moral Development)

पियाजे ने अपनी पुस्तक '**द मॉरल जजमेंट ऑफ द चाइल्ड**' (**The Moral Judgement of the Child, 1932**) में बताया कि जब बच्चे नैतिकता के बारे में सोचते हैं, तो वे दो अलग-अलग अवस्थाओं से होकर गुजरते हैं- **(i) हेटरोनॉमी (Heteronomy) या**

कोह्लबर्ग का नैतिक तर्कणा अवस्था सिद्धांत
(Kohlberg's Theory of Moral Reasoning Stages, 1958)

स्तर (Level)	आयु (Age)	नियंत्रण (Control)	अवस्था (Stage)	विवरण (Description)
पूर्व-परंपरागत स्तर (Pre-Conventional)	4-10 वर्ष	बाह्य नियंत्रित नैतिकता (Externally Controlled)	1. दंड व आज्ञाकारिता	➪ सही व गलत का निर्धारण दंड/इनाम द्वारा ➪ नैतिकता की सजा/दंड से बंधे होना
			2. आत्मकेंद्रिता / साधनात्मक सापेक्षता	➪ आपस में बराबरी का व्यवहार/लेन देन करना ➪ एक-दूसरे के हित/स्वार्थ की बात करना
परंपरागत स्तर (Conventional)	10-13 वर्ष	परंपरागत/सामाजिक/मान्यता/ संबंधों पर आधारित नैतिकता	3. प्रशंसा की चाहत	➪ प्रशंसा प्राप्ति की इच्छा से कार्य/व्यवहार करना ➪ दूसरों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना
			4. सामाजिक नियमों व कर्तव्यों का पालन	➪ सामाजिक व्यवस्था हेतु नियम, कानून, आदेशों व कर्तव्यों को सही मानना और उनके अनुरूप कार्य करना
पश्च-परंपरागत स्तर (Post Conventional)	13 वर्ष से आगे	आंतरिक नियंत्रित नैतिकता (Internally Controlled)	5. सामाजिक अनुबंध / समझौते	➪ वैकल्पिक रास्तों को ढूंढ़ना/खोजना ➪ बहुमत द्वारा निर्णय और अपरिहार्य कठोर कानून की अपेक्षा सामाजिक अनुबंध करना। जैसे -लोकतांत्रिक सरकार होना
			6. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत	➪ असंगत/अन्यायपूर्ण कानूनों को बदलने/उल्लंघन करने की सोच रखना ➪ अन्तरात्मा की आवाज सुनकर नैतिक व्यवहार करना चाहे कैसा भी जोखिम हो।

परायत्तता / नैतिक यथार्थ (Moral/Ethical Realism) या बाहरी सत्ता से प्राप्त नैतिकता (ii) ऑटोनॉमी (Autonomy) या स्वायत्तता / नैतिक सापेक्षवाद (Moral Relativism) अवस्था है। जीन पियाजे (1932) ने साक्षात्कार विधि (Interview Method) द्वारा बच्चे के नैतिक विकास सिद्धांत की विभिन्न चार अवस्थाएं बताई हैं-

(1) **अनॉमी चरण (Anomy Stage) (प्रथम पांच वर्ष)** : अनॉमी/मनोमय चरण कानून रहित चरण (Stage without Law) होता है। शून्य से पांच वर्ष के बच्चे (बाहरी सत्ता से प्राप्त) नैतिकता दिखाते हैं, जो कि पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धांतों की पहली अवस्था है। बच्चे न्याय और नियमों को दुनिया के न बदलने वाले गुणधर्म मानते हैं। इस चरण में **बच्चे न तो नैतिक होते हैं और न ही अनैतिक होते** हैं। उनके लिए न्याय और नियम ऐसी चीजें हैं जो लोगों के बस से बाहर होती हैं। इसे **प्राकृतिक परिणामों का अनुशासन (Discipline of Natural Consequences)** कहा जा सकता है। पीड़ा और हर्ष उसके नैतिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। इस अवस्था में बच्चे का व्यवहार नैतिक मानकों (Moral Standards) से निर्देशित नहीं किया जाता है।

(2) **हेटरोनॉमी चरण (Heteronomy Stage-I) (अधिकारिता) (पांच से आठ वर्ष)** : यह विषमताजीय चरण **प्राधिकार/अधिकारिता (Authority) या बाह्य सत्ता** के अनुशासन का चरण है। इसे **कृत्रिम परिणामों के अनुशासन (Discipline of Artificial Consequences)** का नाम दिया जा सकता है। पांच से आठ साल की उम्र में बच्चे नैतिक चिंतन की पहली से दूसरी अवस्था के बीच एक मिलीजुली स्थिति में होते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति प्राधिकार से संचालित होता है। यानि यह अवस्था **नैतिक यथार्थ (Moral/Ethical Realism)** या बाहरी सत्ता से प्राप्त नैतिकता पर आधारित है, जो बाहरी सत्ता से नियंत्रित (Other directed) होती है। इसके अनुसार पुरस्कार और दंड नैतिक विकास को नियंत्रित करते हैं।

(3) **हेटरोनॉमी चरण (Heteronomy Stage-II) (पारस्परिक) (आठ से तेरह वर्ष)** : नैतिक विकास के इस चरण को **पारस्परिक आदान-प्रदान (Reciprocity) का चरण** कहते हैं। आठ साल या उससे बड़े बच्चे ऑटोनॉमस (स्वतंत्रता पर आधारित) नैतिकता दिखाते हैं। वे यह बात जान जाते हैं कि नियम और कानून लोगों के बनाए हुए हैं और किसी के कार्य का मूल्यांकन करने में वे कार्य को करने वाले व्यक्ति के इरादों और परिणामों पर भी विचार करते हैं। यह चरण हमउम्र साथियों के पारस्परिक आदान-प्रदान व सहयोग द्वारा नियंत्रित होता है। इसे पियाजे ने **सहयोगी नैतिकता (Morality of Cooperation)** कहा है। इस अवस्था में समूहों के साथ अनुरूपता (Conformity With Groups) अनिवार्य हो जाती है।

(4) **स्वायत्तता या ऑटोनॉमी चरण (Autonomy Stage) (तेरह से अठारह वर्ष)** : यह किशोरावस्था का चरण है। स्वायत्त नैतिकता के चरण को **नैतिक सापेक्षतावाद (Moral Relativism)** के रूप में भी जाना जाता है। पियाजे ने इसे **समता (Equity) का चरण** भी कहा है। इस चरण में व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए पूर्ण जिम्मेदार (Individual is fully responsible for his behaviour at this stage) होता है। इस अवस्था में व्यक्ति **स्वाधिकार या अंतरात्मा** से संचालित होता है। इसके अनुसार व्यक्ति के नैतिक व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियम व्यक्ति के भीतर से (Within) उत्पन्न होते हैं।

विकास के रूप (Forms of Development)

एलिजाबेथ हरलॉक (E.B. Hurlock, 1959) ने विकास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से चार प्रकार के परिवर्तन बताये हैं-

1. **आकार (Size) में परिवर्तन** : शारीरिक विकास क्रम में निरंतर शरीर के आकार में परिवर्तन होता रहता है।
2. **अनुपात (Proportion) में परिवर्तन** : विकास क्रम में पहले आकारों में परिवर्तन आनुपातिक होता है।
3. **पुरानी रूपरेखा (Old features) में परिवर्तन** : प्राणी के विकास क्रम में नवीन विशेषताओं का उदय होने से पूर्व पुरानी विशेषताओं का लोप होता रहता है। उदाहरण के लिए बचपन के बालों और दांतों का समाप्त हो जाना।
4. **नए गुणों की प्राप्ति (Acquisition of new features)** : विकास क्रम में जहां एक ओर पुरानी रूपरेखा में परिवर्तन होता है, वहीं उसका स्थान नए गुण प्राप्त कर लेते हैं। उदाहरणार्थ- स्थायी दांत निकलना, स्पष्ट उच्चारण करना और दौड़ने-भागने की क्षमताओं का उदय होना आदि।

मानव विकास की अवस्थाएं (Stages of Human Development)

विकास वह जटिल प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप बालक या व्यक्ति में अंतर्निहित शक्तियां एवं गुण प्रस्फूटित होते हैं। अतः स्पष्ट है कि विकास की प्रक्रिया तो एक है, किंतु उसका विभाजन अनेक अवस्थाओं में है। व्यक्ति का विकास अनेक चरणों में पूरा होता है। कुछ विद्वानों द्वारा किए गए विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण निम्नांकित है।

(1) **रॉस (Ross, JS)** के अनुसार विकास की अवस्थाएं हैं-

(1) शैशव काल	-	1 से 3 वर्ष तक
(2) आरंभिक बाल्यकाल	-	3 से 6 वर्ष तक
(3) उत्तर बाल्यकाल	-	6 से 12 वर्ष तक
(4) किशोरावस्था	-	12 से 18 वर्ष तक

(2) **कॉलसनिक (Kolesnik)** ने विकास प्रक्रिया का वर्गीकरण निम्नांकित चरणों में किया है-

(1) गर्भाधान से जन्म तक	-	पूर्व जन्म काल
(2) नव शैशव काल	-	जन्म से 3 या 4 सप्ताह तक
(3) आरंभिक शैशव	-	1 या 2 से 15 मास तक
(4) उत्तर शैशव काल	-	15 से 30 मास तक
(5) पूर्व बाल्यकाल	-	30 मास से 5 वर्ष तक
(6) मध्य बाल्यकाल	-	9 से 12 वर्ष तक
(7) किशोरावस्था	-	12 से 18 वर्ष तक

(3) **कोल (Cole)** नामक मनोवैज्ञानिक द्वारा विकास की अवस्थाओं का विस्तृत व सूक्ष्म वर्गीकरण निम्नांकित है-

	अवस्था (Stage)	आयु समय (Age)
1.	शैशवावस्था (Infancy)	जन्म से 2 वर्ष
2.	प्रारंभिक बाल्यावस्था (Early Childhood)	2 से 5 वर्ष
3.	मध्य बाल्यावस्था (Middle Childhood)	बालक - 6 से 12 वर्ष बालिका - 6 से 10 वर्ष
4.	उत्तर बाल्यावस्था / पूर्व किशोरावस्था (Late Childhood /	बालक - 13 से 14 वर्ष बालिका - 11 से 12 वर्ष
	Pre-Adolescence)	
5.	प्रारंभिक किशोरावस्था (Early Adolescence)	बालक - 15 से 16 वर्ष बालिका - 12 से 14 वर्ष
6.	मध्य किशोरावस्था (Middle Adolescence)	बालक - 17 से 18 वर्ष बालिका - 15 से 17 वर्ष
7.	उत्तर किशोरावस्था (Late Adolescence)	बालक - 19 से 20 वर्ष बालिका - 18 से 20 वर्ष
8.	प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था (Early Adulthood)	21 से 34 वर्ष
9.	मध्य प्रौढ़ावस्था (Middle Adulthood)	35 से 49 वर्ष
10.	उत्तर प्रौढ़ावस्था (Late Adulthood)	50 से 64 वर्ष
11.	प्रारंभिक वृद्धावस्था (Early Senescence)	65 से 74 वर्ष
12.	वृद्धावस्था (Senescence)	75 वर्ष से आजीवन

(4) **हरलॉक के अनुसार :**

(1) गर्भावस्था (Prenatal) : गर्भधारण से जन्म तक
(2) नवजात अवस्था (Pre-Infancy) : जन्म से 14 दिन
(3) शैशवावस्था (Infancy) : 14 दिन से 2 वर्ष की आयु
(4) बाल्यावस्था : 2 वर्ष से 11 वर्ष की आयु तक
(5) किशोरावस्था : 11 वर्ष से 21 वर्ष की आयु तक

(5) **अर्नेस्ट जोन्स (Ernest Jones)** के अनुसार अवस्थाएं हैं-

(1) शैशव (Infancy) - जन्म से 5 वर्ष तक
(2) बाल्यकाल (Childhood) - 5 से 12 वर्ष तक
(3) किशोरावस्था (Adolescence) - 12 से 18 वर्ष तक
(4) प्रौढ़ावस्था (Adulthood) - 18 वर्ष के बाद

(6) **सामान्य वर्गीकरण :** अब अधिकांश विद्वान सामान्य वर्गीकरण को ही मानते है, जो इस प्रकार है-

(1) शैशवावस्था (Infancy) : जन्म से 5 वर्ष की आयु
(2) बाल्यावस्था (Childhood) : 6 से 12 वर्ष की आयु
(3) किशोरावस्था (Adolescence) : 12 से 19 वर्ष तक
(4) **प्रौढ़ावस्था (Adulthood)** : 19 वर्ष के बाद मृत्यु तक

विकासात्मक मनोविज्ञान में विकास की अवस्थाओं के अनुसार यह माना जाता है कि विकास एक निरंतर/सतत चलने वाली प्रक्रिया है।

मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएं व क्षेत्र (Development in different Stages and Domains)

मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएं यथा-

(1) गर्भावस्था (2) शैशवावस्था (3) बाल्यावस्था (4) किशोरावस्था (5) प्रौढ़ावस्था (6) वृद्धावस्था हैं।

विकासात्मक मनोविज्ञान में **छः मुख्य विकास क्षेत्र-**

(1) शारीरिक (2) संज्ञानात्मक (3) सामाजिक (4) भावनात्मक (5) नैतिक विकास (6) भाषा हैं।

शिशु के शारीरिक विकास का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से व्यवहार तथा अन्य प्रकार के विकास पर पड़ता है। शारीरिक विकास निरंतर नहीं होकर चरणों में होता है- शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था। गर्भावस्था एवं जन्मोपरांत छह महीनों की अवधि तीव्रतम विकास की अवधि होती है। एक वर्ष की आयु के बाद से विकास की यह गति क्रमशः धीमी होती जाती है। यह स्थिति **वयःसंधि (Puberty)** तक विद्यमान रहती है। पुनः 15-16 वर्ष की आयु में विकास की गति तीव्र हो जाती है, इसे **वयःसंधि प्रवेग** कहा जाता है। तत्पश्चात परिपक्वता आने पर लंबाई का विकास तो रुक जाता है, परंतु भारवृद्धि की संभावना बनी रहती है। किशोरावस्था में बालक का सभी प्रकार का विकास पूर्णरूपेण होता है। मानव विकास विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है, जिन्हें निम्न प्रकार से समझाया गया है-

(1) गर्भावस्था (Pregnancy)

यह अवस्था गर्भाधान से जन्म के समय तक (9 महीने या 280 दिन) तक मानी जाती है। बच्चे में गर्भावस्था के दौरान रक्त का निर्माण प्लीहा (Spleen) में होता है। गर्भकालीन या जन्मपूर्व अवस्था में वृद्धि एवं विकास सर्वाधिक तीव्र गति से होता है। इसे तीन अवस्थाओं में विभाजित किया गया है-

1. **बीजावस्था (Germinal stage) : जन्म से 2 सप्ताह**
2. **भ्रूणावस्था (Embryonic stage) : 2 से 8 सप्ताह या 2 माह**
3. **गर्भस्थ शिशु अवस्था (Fetal stage) : 3 से 9 माह तक**

1. **बीजावस्था (Germinal stage) : जन्म से 2 सप्ताह**

गर्भाधान या निषेचन से लेकर दो सप्ताह की अवधि तक होने वाला विकास, डिम्बावस्था या बीजावस्था अवस्था के अंतर्गत आता है। यह दो सप्ताह तक चलती है। गर्भाधान के 24 से 30 घंटे में प्रथम कोशिका विभाजन की प्रक्रिया से विकास आरंभ होता है, जो बड़ी तीव्र गति से चलता है। इस दौरान जाइगोट या सिंचित डिम्ब (Zygote) में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगते हैं।

2. **भ्रूणीय अवस्था (Embryonic stage) : 2 से 8 सप्ताह**

जन्म पूर्व विकास का **द्वितीय काल पिण्डावस्था अथवा**

पिण्ड काल या भ्रूणावस्था कहलाता है। बढ़ते हुए कोषों (Cells) के समूह को **भ्रूण (Embryo)** कहते हैं। यह तीन सप्ताह से लेकर आठवें सप्ताह तक अर्थात दो माह तक की अवधि होती है। इस अवधि में भ्रूण का शारीरिक संरचनात्मक विकास पूर्ण हो जाता है।

3. **गर्भस्थ शिशु अवस्था (Fetal stage) : 3 से 9 माह तक**
तीसरी अवस्था गर्भस्थ शिशु की अवस्था है। यह अवस्था 3 माह से लेकर शिशु जन्म के पहले तक की है। भ्रूणावस्था में जिन अंगों का निर्माण होता है, इस अवस्था में शरीर के उन्हीं अंगों जैसे- हृदय, फेफड़ें आदि एवं मांसपेशियों का विकास पूर्ण हो जाता है और सभी शारीरिक अंग क्रियाशील हो जाते हैं। इस दौरान शिशु को जीवित रहने की आवश्यक प्रक्रियाएं विकसित हो जाती हैं।

(2) शैशवावस्था (Infancy)

बालक के जन्म से पांचवे वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था कहा जाता है। इस अवस्था को **समायोजन की अवस्था** भी कहते हैं। शिशु शब्द की लैटिन उत्पत्ति उन बच्चों को संदर्भित करती है जो बोलने में असमर्थ होते हैं। **इस अवस्था में जीवन के अन्य वर्षो की अपेक्षा सबसे ज्यादा विकास व वृद्धि (Development and Growth) होती है।** दो माह की अवस्था में बालक वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने लगता है। चार माह में वस्तुओं को पकड़ने व संवेगों की स्पष्ट अभिव्यक्ति करने लगता है। इस अवस्था के अंत तक वह चलने, दौड़ने और शब्दों द्वारा अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने योग्य हो जाता है।

शैशवावस्था (जन्म से 5 वर्ष तक) की विशेषताएं -

- दूसरों पर निर्भरता
- मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार
- **अतार्किक चिंतन की आयु**
- दूसरे शिशुओं के प्रति रुचि
- भावी जीवन की आधारशिला
- **सीखने का आदर्श काल** (वेलेंटाइन)
- कल्पना जगत (Fantasy) में विचरण
- स्वयं-केंद्रित या आत्मप्रेम की भावना
- तीव्रता से शारीरिक विकास की अवस्था
- **शब्दों के दोहरान/ पुनरावृत्ति की प्रकृति**
- **अपीली काल (Appealing age)** (हरलॉक)
- **खतरनाक काल (Dangerous age)** (हरलॉक)
- सांवेगिक विकास की दृष्टि से स्वर्णिम काल
- **बालक के निर्माण काल की अवस्था** (फ्रायड)
- काम-प्रवृत्ति (फ्रायड के अनुसार) जाग्रत होना
- शारीरिक परिवर्तनों की बाहुल्यता की अवस्था
- शारीरिक एवं मानसिक रूप से अपरिपक्व होना
- भाषा विकास की प्रक्रिया में अत्यधिक तीव्रता
- **लज्जा व गर्व (Shame & Pride) की भावना** का विकास
- संवेगों की प्रधानता व उनका प्रदर्शन (Showing Emotions)
- अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखना
- **अनुकरण द्वारा सीखने (Learning by Imitation) का जिज्ञासा काल**
- शरीर के समस्त अंगों की रचना और आकृतियों का निर्माण काल
- नैतिक व सामाजिक भावना (Moral & Social Sentiment) का अभाव
- शारीरिक व मानसिक विकास (Physical and Mental Development) में तीव्रता।

शैशवावस्था के प्रति प्रमुख विचारकों के मत

क्रो एवं क्रो : बीसवीं सदी, बालक की शताब्दी है।

फ्रायड : बालक का विकास पांच वर्ष की आयु तक हो जाता है।

गैसल : बालक प्रथम छह वर्ष में बाद के 12 वर्ष से भी दुगुना सीख जाता है।

स्ट्रेंग : जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है।

एडलर : बालक के जन्म के कुछ समय बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि भविष्य में उसका क्या स्थान है।

शैशवावस्था में बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, चारित्रिक विकास को निम्नांकित प्रकार से समझाया गया है।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development)

शैशवावस्था में यह परिवर्तन तीव्र गति से होता है। पूर्व एवं मध्य बाल्यावस्था में विकास धीमी गति से चलता है, लेकिन किशोरावस्था में विकास की गति पुनः तीव्र हो जाती है। शैशवावस्था में शारीरिक विकास के क्षेत्र- **1. स्नायुमंडल/स्नायुसंस्थान 2. मांसपेशी संस्थान 3. पाचन संस्थान 4. लिम्फटिक संस्थान व 5. प्रजनन संस्थान** हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, इस अवस्था में बालक के भावी जीवन का निर्माण होता है। इस अवस्था में शिशु का विकास विभिन्न भागों, जैसे- आकार, भार, सिर व मस्तिष्क, हड्डियों, मांसपेशियों के रूप में तथा आंतरिक अंगों इत्यादि के रूप में होता है।

भार (Weight) : जन्म के समय और पूरी शैशवावस्था में बालक का वजन बालिका से अधिक होता है। जन्म के समय बालक का औसत भार लगभग 7.15 पौंड और बालिका का भार लगभग 7.13 पौंड होता है। पहले 6 माह में शिशु का भार दुगुना और एक वर्ष के अंत में तिगुना हो जाता है। उत्तर शैशवावस्था में यानी 6 वर्ष तक वजन लगभग 40 पौंड हो जाता है।

लंबाई (Height) : शैशवावस्था में 3 वर्ष तक बच्चों के विकास की गति अत्यन्त तीव्र होती है। जन्म के समय बालक की लंबाई

औसत रूप से 51.25 सेमी और बालिका की लंबाई लगभग 50.75 सेमी होती है। प्रथम वर्ष के अंत में वह 67 से 70 सेमी, दूसरे वर्ष के अंत तक 77 से 82 सेमी तक होती है तथा 6 वर्ष तक लगभग 100 सेमी से 110 सेमी लंबाई हो जाती है।

सिर व मस्तिष्क (Head & Brain) : नवजात शिशु के सिर की लम्बाई उसके शरीर के कुल लंबाई की 1/4 होती है। पहले 2 वर्षों में सिर बहुत तीव्र गति से बढ़ता है तथा उसका भार शरीर के भार के अनुपात से अधिक होता है। जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क (Infant's Brain) का भार 350 ग्राम होता है, जो शरीर के अनुपात में अधिक होता है। दो वर्ष की आयु में मस्तिष्क का भार दो गुना हो जाता है। और मस्तिष्क का भार 1200-1400 ग्राम के बीच में होता है। छह वर्ष की आयु तक मस्तिष्क का लगभग पूर्ण विकास (9/10 भाग) हो जाता है।

हड्डियां (Bones) : नवजात शिशु (Newborn Baby) में **हड्डियों की संख्या लगभग 300** होती है। संपूर्ण शैशवावस्था में ये छोटी, कोमल, लचीली होती हैं। हड्डियां कैल्शियम, फास्फोरस और अन्य खनिज लवणों की सहायता से मजबूत/दृढ़ होती हैं। हड्डियों के दृढ़ीकरण की इस प्रक्रिया को **अस्थिकरण (Ossification)** कहते हैं। किशोरावस्था व प्रौढ़ावस्था में कुछ हड्डियों के संगलित होने (अस्थिकरण) के कारण 206 हो जाती हैं। मानव शरीर की सबसे लम्बी अस्थि हमारी जांघ/फीमर (Femur) की होती है इसकी औसत लंम्बाई 50.50 सेमी यानि 19 इंच हैं। वहीं कान में घुंडी नुमा स्टेपीज (Stapes) नाम की 0.11 इंच की हड्डी सबसे छोटी होती है।

मांसपेशियां (Muscles) : शिशु की मांसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भाग का 23 प्रतिशत होता है। यह भार धीरे-धीरे बढ़ता चला जाता है। उसकी भुजाओं का विकास तीव्र गति से होता है। प्रथम दो वर्षों में भुजाएं दुगुनी और टांगें डेढ़ गुनी हो जाती हैं। छह वर्ष की आयु तक मांसपेशियों में लचीलापन होता है।

दांत (Teeth) : जन्म के समय शिशु के दांत नहीं होते हैं। छठे माह में शिशु के दूध के दांत निकलने लगते हैं। सबसे पहले नीचे के अगले दांत निकलते हैं और एक वर्ष की आयु तक उनकी संख्या 8 तक पहुंच जाती है। चार वर्ष की आयु तक शिशु के दूध के सभी दांत निकल आते हैं, जिनकी संख्या 20 होती है। दूध के दांत अस्थायी होते हैं। इसके बाद धीरे-धीरे ये दांत गिरने लगते हैं तथा पांचवे या छठे वर्ष में स्थायी दांत निकलने आरंभ हो जाते हैं।

धड़कन (Heart Beat) : प्रथम माह में शिशु के हृदय की धड़कन लगभग 140 बार प्रति मिनट होती है, जो लगभग छह वर्ष की आयु में घटकर 100 बार प्रति मिनट रह जाती है। जन्म के समय हृदय की धड़कन कभी तेज व कभी धीमी होती है। जैसे-जैसे हृदय बड़ा होता है, धड़कन में स्थिरता आ जाती है।

अन्य अंग (Other Organs) : शिशु के आंतरिक अंगों (पाचन अंग, फेफड़े, स्नायु मडंल, रक्त संचार अंग, जनन अंग और ग्रंथियां आदि) का विकास तीव्र गति से होता है। शैशवावस्था के प्रथम तीन वर्ष विकास काल के होते हैं। अंतिम तीन वर्षों में बच्चा मजबूती प्राप्त करता है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास (Mental Development)

(1) **पहला वर्ष-** हाथ-पैर हिलाने लगता है, ध्वनि करने लगता है। तीन-चार छोटे सार्थक शब्द बोलने लगता है, जैसे-पा, मा, दा आदि।

(2) **दूसरा वर्ष-** ठीक से समझने लगता है और छोटे-छोटे शब्द बोलने लगता है। दो सौ से अधिक शब्द बोलने लग जाता है।

(3) **तीसरा वर्ष-** पूछने पर शिशु अपना नाम बता देता है। अपने नाक, कान, मुंह, दांत को हाथ से छूकर बताने लगता है।

(4) **चौथा वर्ष-** गिनती गिनने लगता है, छोटी-बड़ी रेखाओं में अंतर करने लगता है। अक्षर लिखने लगता है, वस्तुओं को क्रम से रखना जान जाता है।

(5) **पांचवां वर्ष-** रंगों को पहचानने लगता है, हल्के व भारी का ज्ञान होने लगता है। 10-11 शब्दों के वाक्य दोहराने लगता है, माता-पिता की आज्ञा मानने लगता है और उनके कामों में सहायता भी करने लगता है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास (Social Development)

(1) शिशु जन्म से सामाजिक नहीं होता है।

(2) एक वर्ष के भीतर शिशु माता-पिता को पहचाने लगता है, प्रेम व क्रोध के व्यवहारों का अनुकरण करने लगता है।

(3) दो वर्ष की आयु में बड़ों के साथ घर का कार्य करने का प्रयत्न करता है।

(4) दो और तीन वर्ष की आयु के बीच बालक खेलने के लिए साथी बनाकर उनसे सामाजिक संबंध स्थापित करने लगता है।

(5) चौथे-पांचवे वर्ष में वह बाहरी दुनिया से संपर्क स्थापित करता है और मित्र बनाता है। इस दौरान सामूहिक जीवन से अनुकूलन स्थापित करने में सक्षम हो जाता है।

(6) पांच या छह साल की आयु से बालक में नैतिक भावना का विकास प्रारंभ हो जाता है।

शैशवावस्था में संवेगात्मक (Emotional) विकास

वाटसन (Watson) : नवजात शिशु में मुख्य रूप से तीन संवेग विद्यमान रहते हैं- भय (Fear), क्रोध (Anger) एवं स्नेह (Love)।

ब्रीजेस (KM Bridges, 1931) : जन्म के 2 वर्ष तक शिशु में लगभग सभी संवेगों का विकास हो जाता है।

शिशु जन्म के समय रोता, चिल्लाता तथा पैर पटकता है, परंतु उसकी आंखों से आंसू नहीं निकलते। वह मुस्कुराता तो है, परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि आनंद की अनुभूतियों के कारण वह ऐसा करता है। इस प्रकार वह जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति करता है। नवजात शिशु अधिकतर सहज क्रियाएं ही करता है। उसकी भावात्मक अनुभूतियां सीमित होती हैं। एक नवजात शिशु जन्म से ही अपने परिवेश के प्रति संवेदना और अनुक्रिया की क्षमता रखता है। जोर की आवाज उसे चौंकाती है और तेज प्रकाश भी संवेदना उत्पन्न करता है, परंतु रंग के विषय में उसकी संवेदना स्पष्ट नहीं होती है।

(3) बाल्यावस्था (Childhood)

शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था आती है। छह से 12 वर्ष की अवधि को बाल्यावस्था कहा जाता है। इसे पूर्व किशोरावस्था

भी कहते हैं। **ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन (1968)** के अनुसार, 'बाल्यावस्था एक ऐसी अवस्था है, जिसमें व्यक्ति का आधारभूत दृष्टिकोण, मूल्य एवं आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण हो जाता है।'

यह अवस्था शारीरिक और मानसिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है।

बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष तक) की विशेषताएं -

- स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
- जीवन का निर्माणकारी काल
- **गंदी आयु (Dirty age)** की अवस्था
- वैचारिक क्रिया (बाह्य केन्द्रित)अवस्था
- **अनोखा काल (Peculiar age- Cole)**
- भावी जीवन निर्माण की नींव का काल
- **टोली/ गिरोह की आयु (Gang age)**
- **चुस्ती व स्फूर्ति आयु (Smart age)** काल
- अधिकतम सामाजिकता के विकास का काल
- बच्चों में मित्र बनाने की प्रबल इच्छा होना
- **'समूह प्रवृत्ति' (Gregariousness)** की अवस्था
- बच्चों में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति का विकास होना
- काम की प्रसुप्तावस्था (Latency Period- Freud)
- शारीरिक एवं मानसिक विकास में स्थिरता होना
- **प्रारंभिक विद्यालय की आयु (Age of Primary school)**
- कल्पना शक्ति एवं अमूर्त चिंतन के प्रारंभ का काल
- मूर्त चिंतन की अवस्था (Age of Concrete Thinking)
- नये कौशलों एवं क्षमताओं के विकास का स्वर्णिम काल
- मिथ्या परिपक्वता की अवस्था (Psuedo Maturity-Ross)
- बच्चों की जिज्ञासु प्रवृत्ति होने से उनमें जानने की प्रबल इच्छा होना
- **खिलौनों की आयु (Toy age) (पूर्व बाल्यावस्था : लगभग 3 से 7 वर्ष)**
- **खेल की आयु (Play age)** (प्रारंभिक विद्यालय आयु : लगभग 6 से 11 वर्ष)
- प्रतिद्वंद्वात्मक समाजीकरण (Competitive socialization) का काल (किलपैट्रिक)।

इनके अलावा भ्रमण की प्रवृत्ति, रचनात्मक कार्यों में रूचि, अनुकरण की प्रवृत्ति, मानसिक योग्यताओं में वृद्धि, **संचय/ संग्रह करने की प्रवृत्ति,** आत्मनिर्भरता, बहिर्मुखी व्यक्तित्व, सामूहिक खेलों में विशेष रूचि, पुनर्स्मरण, यथार्थ जगत से संबंध आदि विशेषताएं इस काल में होती हैं।

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development)

यह अवस्था 6 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। बाल्यावस्था के प्रथम तीन वर्षों (6 से 9 वर्ष) में शारीरिक विकास तीव्रगति से होता है और बाद के तीन वर्षों में इस विकास में स्थिरता आ जाती है।

भार (Weight) : इस अवस्था में बच्चों के भार में पर्याप्त वृद्धि होती है। 9 या 10 वर्ष की आयु तक बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है। इसके बाद बालिकाओं का भार अधिक होना प्रारंभ हो जाता है। इस अवस्था में 12 वर्ष के अंत तक बालक का भार 80 से 95 पौंड के बीच होता है।

कद (Height) : जन्म के समय शिशु की लंबाई 20 इंच तक होती है। बाल्यावस्था में शरीर की लंबाई कम बढ़ती है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि दो-तीन इंच की लंबाई प्रतिवर्ष बढ़ती है।

दांत (Teeth) : छह वर्ष की आयु में दूध के दांत गिरने लगते हैं और उनके स्थान पर नए दांत निकल आते हैं। 12-13 वर्ष की अवस्था तक सभी स्थायी दांत निकल आते हैं।

हड्डियां (Bones) : इस अवस्था में हड्डियों की संख्या घटकर लगभग 270 हो जाती है और बालिग होते-होते इनकी संख्या 206 रह जाती है। 10-12 वर्ष की आयु में हड्डियों का सुदृढ़ीकरण होता है।

मांसपेशियां (Muscles) : मांसपेशियों का भार 8 वर्ष तक कुल भार का 27 प्रतिशत हो जाता है। बालिकाओं की मांसपेशियां बालकों की अपेक्षा अधिक विकसित होती हैं।

अन्य अंगों (Organs) का विकास : बाल्यावस्था में मस्तिष्क, आकार और वजन की दृष्टि से पूर्ण विकसित हो जाता है। बाल्यावस्था में सिर के आकार में क्रमशः परिवर्तन होता रहता है। इस अवस्था में बच्चों के लगभग सभी अंगों का पूर्ण विकास हो जाता है तथा वह अपनी शारीरिक गति पर नियंत्रण रखना सीख जाते हैं।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास (Mental Development)

- चिंतन का विकास
- रुचियों में विस्तार
- सृजनात्मकता का विकास
- भाषा के विकास की अवस्था
- समस्या- समाधान की प्रवृत्ति
- सहज तथा मूल प्रवृत्तियों का विकास
- संख्या, गति, स्थान तथा समय का ज्ञान।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Social Development)

- वैयक्तिकता का विकास
- गिरोह प्रवृत्ति का विकास
- आत्म-निर्भरता की भावना
- सामाजिक भावना का विकास
- मित्र बनाना व समूह में खेलने की प्रवृत्ति
- सामाजिक स्वीकृति व प्रशंसा पाने की प्रवृत्ति
- चारित्रिक व नागरिक गुणों का विकास व स्थायित्व।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक (Emotional) विकास

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास का आधार मूल प्रवृत्तियां हैं। इस अवस्था में संवेगों की स्थिति इस प्रकार होती है- संवेगों का निर्बल होना, भय, हताशा, क्रोध, ईर्ष्या, जिज्ञासा, स्नेह, प्रसन्नता आदि।

(4) किशोरावस्था (Adolescence)

किशोरावस्था (Adolescence) : यह बाल्यावस्था एवं युवावस्था के मध्य होती है। किशोरावस्था को परिवर्तन की अवस्था कहते हैं। 12 से 19 वर्ष की अवधि को किशोरावस्था माना है। किशोरावस्था के अंत तक बालक में सर्वाधिक परिपक्वता का विकास होता है। सैद्धांतिक दृष्टि से किशोरावस्था जीवन के प्रथम चरण शैशवावस्था की सर्वश्रेष्ठ पुनरावृत्ति मानी जाती है। उत्तर बाल्यावस्था में जो स्थिरता आती है, वह किशोरावस्था में समाप्त हो जाती है और शारीरिक व मानसिक विकास पुनः अस्त-व्यस्त हो जाता है। अतः इस अवस्था को जीवन का **संधिकाल/ संक्रमणकाल (Transitional/Crisis Period)** कहा गया है। इस अवस्था में बाल अपराधों की संख्या सबसे अधिक होती है। काम भावना की बहुत अधिक प्रधानता होती है। इसलिए इसे जीवन की सुखद वर्षा व प्रकाश की अवस्था भी कहते हैं। व्यक्तिगत व सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में किशोरावस्था भिन्न-भिन्न उम्र में आती है।

किशोरावस्था को परिभाषित करते हुए विभिन्न विद्वानों के मत-

अर्नेस्ट जोन्स (Ernest Jones, 1922) : किशोरावस्था शैशवावस्था का पुनरावृत्ति काल है। **(छत्तीसगढ़ टेट-2011, दूसरा लेवल)**

स्टेनले हॉल (G Stanley Hall, 1904) : किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।

ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन (1968) : किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का वह काल है, जो बाल्यावस्था से प्रारंभ होता है और प्रौढ़ावस्था के प्रारंभ में समाप्त होता है।

विकास की अवस्थाएं : किशोरावस्था की तीन अवस्थाएं हैं-

(क) पूर्व किशोरावस्था (लगभग 11 से 13 वर्ष)

(ख) मूल किशोरावस्था (लगभग 14 से 16 वर्ष)

(ग) पश्च किशोरावस्था (लगभग 17 से 19 वर्ष)

किशोरावस्था (12 से 19 वर्ष तक) की विशेषताएं -

- **बसंत ऋतु काल**
- टीन एज (Teen age)
- **आदर्शवाद का काल**
- दल भक्ति की अवस्था
- अटपटी व उलझन की अवस्था
- **एज ऑफ ब्यूटी (Age of Beauty)**
- **विषादमय आयु (An unhappy age)**
- प्रबल दबाव एवं तनाव की अवस्था
- दुरुस्त एवं तीव्र विकास की अवस्था
- विचारों की अभिव्यक्ति का विकास
- संवेगों के उथल-पुथल की अवस्था
- **स्वर्ण या सुनहरी अवस्था (Golden age)**
- व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
- **संक्रमण काल की अवस्था/संक्रांति काल**
- **विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण की अवस्था**
- समस्याओं की अवस्था (Age of Problems)
- प्रबल संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
- **सर्वाधिक काम प्रवृत्ति व आकर्षण की अवस्था**
- आत्म-सम्मान व आत्म-स्वीकृति की अवस्था
- **संघर्ष और तूफान की अवस्था** (स्टेनले हॉल)
- अमूर्त चिंतन (Abstract Thinking) की अवस्था
- तार्किक चिंतन (Logical Thinking) की अवस्था
- **जीवन की सबसे जटिल/ कठिन अवस्था** (किलपैट्रिक)
- अवधान या ध्यान केंद्रित करने और स्थाई स्मृति का विकास
- किशोरों में अनुशासन तथा सामाजिक नियंत्रण की भावना का विकास
- तीव्र मानसिक विकास, व्यवहार में विभिन्नता, स्थायित्व एवं समायोजन की समस्या
- समूह को महत्व, समूह के सक्रिय (Active) सदस्य, वीर पूजा, समाज सेवा, धार्मिक चेतना आदि की भावना का विकास
- संवेगों की मंदता की अवस्था (उत्तर किशोरावस्था में व्यवहार में स्थायित्व आने लगता है)
- कल्पना का बाहुल्य, आत्म-सम्मान/गौरव व परमार्थ की भावना का विकास
- बुद्धि का अधिकतम विकास, नेतृत्व की भावना, अपराध प्रवृत्ति का विकास और रुचियों में परिवर्तन।

किशोरावस्था विकास के सिद्धान्त (Theories of Adolescence)

(1) **क्रमशः विकास का सिद्धान्त (Theory of gradual development) :** इस सिद्धांत के समर्थक **थार्नडाइक, हालिंगवर्थ व किंग** हैं।

(2) **त्वरित विकास का सिद्धान्त (Theory of rapid/ saltatory development) :** इस सिद्धांत का प्रवर्तक **स्टेनले हॉल** है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development) : किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है। यह परिवर्तन की अवस्था कहलाती है। किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं का विकास तीव्र गति से होता है। बालकों में तीव्रतम वृद्धि का समय 14 वर्ष की आयु तक तथा बालिकाओं में 11 से 18 वर्ष की आयु तक होता है, परंतु 11 वर्ष की आयु या वयः संधि के आरंभ से लड़कियां लड़कों की अपेक्षा लंबी, स्वस्थ एवं भारी हो जाती हैं। किशोरावस्था के आरंभिक वर्षों में विकास परिपक्वता को प्राप्त करता है।

आकार एवं भार (Size & Weight) : इस अवस्था में लंबाई तेजी से बढ़ती है। बालक की लंबाई 18 वर्ष की आयु तक तथा बालिका की लंबाई 16 वर्ष की आयु तक बढ़ती है। इस अवस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है।

सिर व मस्तिष्क (Head & Brain) : इस अवस्था में सिर व मस्तिष्क का विकास जारी रहता है। 15 या 16 वर्ष की आयु में सिर का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है एवं मस्तिष्क का भार 1,200 और 1,400 ग्राम के बीच में होता है। **मानव मस्तिष्क का सबसे बड़ा व मुख्य सोचने वाला भाग प्रमस्तिष्क (Cerebrum)** होता है।

हड्डियां (Bones) : किशोरावस्था में हड्डियों में पूर्ण मजबूती आ जाती है और कुछ छोटी हड्डियां एक दूसरे से जुड़ जाती हैं।

अन्य अंगों (Organs) का विकास : इस अवस्था में आंख, कान, नाक, त्वचा, स्वादेंद्रियों व कर्मेंद्रियों का पूरा विकास हो जाता है। मांसपेशियों का विकास तीव्रगति से होता है। मस्तिष्क का विकास लगभग पूरा हो जाता है।

विभिन्न ग्रंथियों (Glands) का विकास : किशोरावस्था में विभिन्न परिवर्तनों का आधार अंतःस्रावी ग्रंथियां होती है, जिनमें पिट्यूटरी, थायरायड, एड्रीनल ग्रंथियां प्रमुख हैं। इन ग्रंथियों के स्राव शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। इस अवस्था में बच्चे खेलकूद तथा अन्य क्रियाओं में अधिक सक्रिय हो जाते हैं। वे अपने कार्य स्वयं करने लगते हैं। दूसरों पर निर्भर नहीं होते हैं।

(5) **प्रौढ़ावस्था (Adulthood) :** 21-60 वर्ष की अवस्था प्रौढ़ावस्था कहलाती है। यह गृहस्थ जीवन की अवस्था है, जिसमें व्यक्ति को जीवन की वास्तविकता का बोध होता है और वास्तविक जीवन की अंतःक्रियाएं होती हैं।

(6) **वृद्धावस्था (Old Age/Geezerhood) :** 60 वर्ष से जीवन के अंत समय तक की अवधि को वृद्धावस्था कहा जाता है। इस आयु में शारीरिक और मानसिक क्षमता का ह्रास होने लगता है।

विकास का संप्रत्यय और इसका अधिगम से संबंध (Concept of Development and its Relation with Learning)

अधिगम के क्षेत्र में वृद्धि और विकास निम्न रूप से महत्वपूर्ण हैं-

(1) इससे बालक की व्यक्तिगत विभिन्नता का पता चलता है।

(2) बालक के भविष्य के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है।

(3) वृद्धि व विकास दोनों ही वातावरण व वंशानुक्रम पर निर्भर करते हैं, जो बालकों को शिक्षा प्रदान करने में सहायक होता है।

(4) वृद्धि व विकास का ज्ञान होने पर अध्यापक को बालक को शिक्षा प्रदान करने में सहायता मिलती है।

(5) वृद्धि व विकास की मात्रा व गति प्रत्येक बालक में अलग-अलग होती है, जिसका पता लगाकर बालकों को उसी प्रकार से पढ़ाया जाता है।

समाजीकरण व बाल विकास (Socialization and Child Development)

समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है जिसमें हम दूसरे व्यक्ति की संस्कृति को अपनाने के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं। इसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अंतःक्रिया करता हुआ सामाजिक आदतों, विश्वासों, रीति- रिवाजों तथा परंपराओं एवं अभिवृत्तियों को सीखता है। इस क्रिया द्वारा व्यक्ति जन कल्याण की भावना से प्रेरित होते हुए स्वयं को अपने परिवार, पड़ोस तथा अन्य सामाजिक वर्गों के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है जिससे वह समाज का एक श्रेष्ठ, उपयोगी तथा उत्तरदायी सदस्य बन जाए।

एलिजाबेथ हरलॉक (Hurlock) : सामाजिक विकास का मतलब है कि सामाजिक संबंधों में परिपक्वता हासिल करना।

न्यूमेयर (New Mayor) : सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया ही समाजीकरण कहलाती है।

जॉनसन (Johnson, HM) : समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं को निभाने योग्य बनाती है।

हार्टले एंड हार्टले (Hartley & Hartley) : समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आप को समुदाय के आदर्शों के अनुकूल बनाता है।

ग्रिन (Green, AW) : समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, निज स्वरूप और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया (Process of Socialization)

समाज में जिस प्रक्रिया के अधीन बालक का समाजीकरण होता है उसे समाजीकरण की प्रक्रिया कहते हैं। समाजीकरण एक साधन है जिसके द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक निरंतरता प्राप्त होती है।

स्वीवर्ट एवं डिग्लन ने समाजीकरण के तीन तत्व आवश्यक बताये हैं। (1) अंतःक्रिया (2) भावनात्मक स्वीकृति और (3) संचार व भाषा।

आत्म-दर्पण का सिद्धान्त (Looking glass self) एचसी कूले (Cooley, HC) द्वारा 1902 में प्रतिपादित किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार समाज एक दर्पण के समान होता है।

बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ दिन बाद से ही प्रारंभ होकर मृत्यु तक चलती है। यह स्थिर न होकर **गतिशील और पारस्परिक (Dynamic and Reciprocal)** प्रक्रिया है।

समाजीकरण की प्रक्रिया दो प्रकार की होती है-

(1) प्राथमिक समाजीकरण (Primary Socialization)

(2) द्वितीयक/ गौण समाजीकरण (Secondary Socialization)

(1) **समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाएं -** इसमें विशेष कर व्यवहार का अनुकरण, घर के सदस्य व माता-पिता द्वारा बच्चों को कुछ नियमों, रीतिरिवाजों, मान्यताओं, परम्पराओं तथा विचारो को अपनाने के सुझाव देना, बालक के पालन-पोषण की विधियां आदि।

(2) **समाजीकरण की द्वितीयक या गौण प्रक्रियाएं -** प्रतियोगिता में भाग लेना, सहयोग, संघर्ष, घर-परिवार, आस-पड़ोस, सगे-संबंधियों, अध्यापकों, मित्रों, पारिवारिक सदस्यों आदि से तादात्मीकरण करना आदि।

समाजीकरण के पद (Steps of Socialization)

1. प्रसरण (Diffusion)
2. संस्कृतिकरण (Acculturation)
3. आत्मसातीकरण (Assimilation)।

समाजीकरण की अवस्थाएं (Stages of Socialization)

फ्रायड के अनुसार समाजीकरण की इन पांचों अवस्थाओं को **प्राथमिक समाजीकरण** के रूप में जाना जाता है।

1. मौखिक (Oral) अवस्था 2. गुदा (Anal) अवस्था
3. लिंगप्रधान (Oedipal) अवस्था 4. अदृश्य (Latency) अवस्था
5. किशोरावस्था (Adolescence) : इसे समाजीकरण की **निर्णायक अवस्था (Crucial Stage)** कहते हैं।

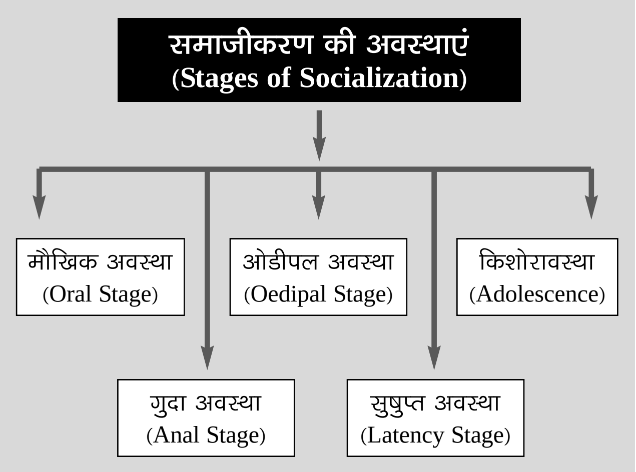

समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण (Agencies)

सम्पूर्ण समाज समाजीकरण के एि अभिकरण (साधन) का काम करता है। **इसका सर्वप्रथम अभिकर्ता (Agent) परिवार है।** बालक परिवार के अन्य सदस्यों से अंतःक्रियात्मक संबंध स्थापित करता है और उनके व्यवहारों का अनुकरण करता है। वह स्वयं क्या है? इस प्रकार **स्वयं (Self)** का विकास भी समाजीकरण का एक आवश्यक तत्व है। कुछ प्रमुख अभिकरण **परिवार, पड़ोस, मित्रों का समूह, शिक्षण संस्थाएं, राज्य, जनसंपर्क के साधन** आदि हैं।

बालक के समाजीकरण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting the Socialization of Child)

समाजीकरण प्रत्येक व्यक्ति में व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। बालक के समाजीकरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक निम्नांकित हैं-

- **बाल्यकालीन परिस्थितियां** : जैसे- माता-पिता का प्यार न मिलना, पारिवारिक कलह, विधवा मां, पक्षपात, एकाकीपन तथा अनुचित दंड आदि।
- **सांस्कृतिक परिस्थितियां** : जैसे- जाति, धर्म, वर्ग आदि से संबद्ध पूर्व धारणाएं आदि।
- **तात्कालिक परिस्थितियां** : जैसे- निराशा, अपमान, अभ्यास, अनियमितता, कठोरता, परिहास और भाई-बहन, मित्र, आस-पड़ोस आदि की ईर्ष्या।
- **अन्य परिस्थितियां** : जैसे- शारीरिक हीनता, निर्धनता, असफलता, शिक्षा की कमी, आत्मविश्वास का अभाव तथा आत्म-निर्भरता की कमी आदि।

इनके अलावा परिवार, आयु समूह, नातेदारी समूह, विद्यालय, खेलकूद, जाति, समाज, भाषा, समूह, राजनीतिक और धार्मिक संस्थाएं आदि बालक के समाजीकरण को प्रभावित करते हैं।

समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा (शिक्षक) का योगदान : बालक के सामाजिक विकास में विद्यालय का सर्वाधिक योगदान होता है।

- बालक के व्यक्तित्व का विकास करने में
- सामाजिक परंपराओं में विश्वास पैदा करने में
- शिक्षित तथा जागरूक नागरिकों के निर्माण में
- स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास करने में
- अधिकारों, कर्तव्यों का ज्ञान तथा समायोजन कराने में
- संस्कृति, सामाजिक आदर्शों व नियमों के अनुरूप व्यवहार में।

एक नजर में

1. मनोविज्ञान की प्रथम पुस्तक **विलियम जेम्स** के द्वारा लिखी गई। (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)
2. **अंतर्दर्शन** शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि (Subjective Method) है। (यूपी टेट-2017, दूसरा पेपर)
3. पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास की तृतीय अवस्था **मूर्त संक्रिया अवस्था** है। (यूपी टेट-2018, पहला पेपर)
4. मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर मन का त्याग किया, फिर अपनी चेतना को त्यागा, और इसने अभी एक ढंग के व्यवहार को अपनाया है। यह **वुडवर्थ** ने कहा है। (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)
5. बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान **बालक का** है। (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2014)
6. मनोविज्ञान की प्रयोगशाला सर्वप्रथम **वुण्ट** ने स्थापित की। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)
7. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष **1900** माना जाता है। (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)
8. आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ **व्यवहार का अध्ययन** है। (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)
9. शिक्षा मनोविज्ञान **व्यावहारिक विज्ञान** है। (हरियाणा टेट-2011)
10. 'मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है' यह **स्किनर** ने कहा है। (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)
11. असामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक युग के जनक **सिगमंड फ्रायड** थे। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट 2013)
12. निरीक्षण विधि में **दूसरों के व्यवहारों का अध्ययन** किया जाता है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)
13. 1882 ई. में **गाल्टन** द्वारा लंदन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया गया। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)
14. **क्रंदन** मानव वाणी का प्रथम लक्षण है। (उत्तर प्रदेश भाषा टेट-2013)
15. शिक्षा मनोविज्ञान की विषय-सामग्री का संबंध **सीखने से** है। (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)

16. सर्वप्रथम मनोविज्ञान को **आत्मा का अध्ययन** करने वाले विषय के रूप में परिभाषित किया गया। (बिहार टेट-2012 (कक्षा I से V))

17. **प्रारंभ में आत्मा का प्रयोग** दर्शनशास्त्र **में किया जाता था।** (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)

18. मात्रात्मक व्यक्तिगत क्षमता रूपी प्रक्रिया को **वृद्धि** (**Growth**) कहा जाता है। (रीट-2018, दूसरा स्तर)

19. परिवार एक **अनौपचारिक शिक्षा का** साधन है। (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2011)

20. बच्चे के समाजीकरण में परिवार **मुख्य** भूमिका निभाता है। (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

21. बच्चे को समाजीकरण का पहला पाठ **परिवार से** से प्राप्त होता है। (छत्तीसगढ़ अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)

22. विकास **प्रसवपूर्व अवस्था से** शुरू होता है। (केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

23. **शैशवावस्था** में द्रुतगामी अभिवृद्धि और विकास देखा जाता है। (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

24. गर्भस्थ शिशु में संवेदनशीलता का विकास **सिर से** प्रारंभ होता है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

25. यौन परिपक्वता में महत्वपूर्ण हाथ **पीयूष ग्रंथि का होता** है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

26. तनाव और क्रोध की अवस्था **किशोरावस्था** है। (छत्तीसगढ़ अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)

27. शैशवकाल की अवधि (Period of Infancy) **जन्म से 2 वर्ष तक** है। (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

28. जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) विकास की दूसरी प्रमुख अवस्था **बाल्यावस्था** है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)

29. **बाल्यावस्था** को मिथ्या-पक्वता (Pseudo Maturity) का समय भी कहा जाता है, जो **12 वर्ष तक** होती है। (रीट-2016, दूसरा स्तर)

30. बालकों की अभिवृद्धि एवं विकास में 'अभिवृद्धि' शब्द बालकों के व्यक्तित्व के **शारीरिक** पक्ष से संबंधित है। (छत्तीसगढ टेट 2019, पहला पेपर)

31. मध्य-बचपन अवधि (Middle Childhood Period) **6 वर्ष से 11 वर्ष तक** होती है। (सीटीईटी फरवरी-2016, दूसरा पेपर)

32. 'प्रारंभिक बाल्यावस्था' (Early Childhood) **2 से 8 वर्ष तक की** अवधि की होती है। (सीटीईटी मई-2016, पहला पेपर)

33. विकास **सामान्य** से **विशिष्ट** की ओर बढ़ता है। (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

34. किशोरावस्था की अवधि **11 से 19 वर्ष** है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

35. विकासात्मक मनोविज्ञान में जीवन का अध्ययन **जीवन-पर्यंत** किया जाता है। (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)

36. किशोरावस्था को सर्वोत्तम प्रकार से परिभाषित करने वाला एक शब्द है 'परिवर्तन'। यह परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक है। यह कथन **बिगी व हंट का** है। (छत्तीसगढ़ टेट 2011, छत्तीसगढ टेट 2019, पहला पेपर)

37. मानव विकास **मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों** है। (केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा-2014)

38. गर्भ में बालक को विकसित होने में **280** दिन लगते हैं व नवजात शिशु का भार **7 पाउंड** होता है। (बिहार टेट-2011)

39. वृद्धि एवं विकास **एक-दूसरे के पूरक** होते हैं और वृद्धि का संबंध **आकार व भार से** है। (बिहार टेट-2012)

40. दूसरे वर्ष के अंत तक शिशु का शब्द भंडार **लगभग 200 शब्द** हो जाता है। (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

41. शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास की **शैशवावस्था** में होता है। (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

42. **हरलॉक** के अनुसार, 'विकास एक सतत् और धीमी-धीमी प्रक्रिया है'। (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

43. विकासकाल के दौरान भ्रूण के सिर का विकास उसके पैरों से पहले होता है। यह विकास की **सिर से पैर की ओर (Cephalo-caudal)** प्रवृत्ति की सर्वोत्तम व्याख्या है। (एचटीईटी टीजीटी-2018)

44. बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता **सामूहिकता की भावना** है। (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2014)

45. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास **11 वर्ष की आयु में** होता है। (रीट-2016, पहला स्तर, छत्तीसगढ़ टेट -2014)

46. अधिकांश बालक अपनी मातृभाषा **दो वर्ष की आयु में** सीख लेते हैं। (हरियाणा टेट-2011)

47. एक बच्चा **6 माह की आयु में** ईर्ष्या का प्रदर्शन करता है। (हरियाणा टेट-2011)

48. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से **बौद्धिक विकास से** संबंधित है। (बिहार टेट-2012 (कक्षा I से V))

49. कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के विचार के **तीन** स्तर हैं। (सीटीईटी मई-2016, पहला पेपर)

50. पियाजे का सिद्धांत **अपने बालक** के अवलोकन पर आधारित है। (बिहार टेट-2012)

51. लॉरेंस कोह्लबर्ग के सिद्धांत में **प्रथम स्तर** नैतिकता (Morality) की अनुपस्थिति को सही अर्थ में सूचित करता है। (सीटीईटी फरवरी 2015, पहला पेपर)

52. कोह्लबर्ग (Kohlberg) ने **नैतिक विकास के चरण** प्रस्तुत किए हैं। (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

53. **किशोरावस्था** में बच्चे अपने समकक्षी वर्ग के सक्रिय सदस्य बन जाते हैं। (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2011)

54. 'विद्रोह की भावना' (Feeling of Revolt) की प्रवृत्ति **मध्य किशोरावस्था** से संबंधित है। (यूपी टेट-2017, पहला पेपर)

55. 'बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं'। इसका श्रेय **पियाजे** को जाता है। (सीटीईटी -2011)

56. ज्यादातर बच्चे प्रथम सार्थक शब्द **10-13 महीने की** उम्र में

बोलते हैं। (रीट-2018, दूसरा स्तर)

57. **आधुनिक मनोविज्ञान** का जनक **विलियम जेम्स** है। (एचपी टेट 2017, कला पेपर)

58. सीखने का वह सिद्धांत जो पूर्णरूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, यह सीखने के **व्यवहारवादी** सिद्धांत पर आधारित है। (रीट-2018, दूसरा स्तर)

59. संज्ञानवादी विकास सिद्धांत के प्रवर्तक **जीन पियाजे** थे। (रीट-2018, दूसरा स्तर)

60. पियाजे ने नैसर्गिक आकृति-कल्प एवं अर्जित आकृति-कल्प की कल्पना **संवेदी पेशीय अवस्था** में की है।(उत्तर प्रदेश टेट-2013)

61. वर्गीकरण की योग्यता (Ability of Classification) का विकास **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में** होता है। (एचटीईटी टीजीटी गणित-2017)

62. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, एक बालक 'संरक्षण' के सिद्धांत को समझने में **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में** सक्षम हो जाता है। (एचटीईटी टीजीटी-2018)

63. किशोरावस्था में व्यवहार व मनोवृत्ति पर सबसे ज्यादा प्रभाव **संगी-साथियों का** पड़ता है। (एचटीईटी पीजीटी-2016)

64. उपकल्पनात्मक चिंतन (Hypothetical thinking) व तथा तार्किक वाक्यों के आधार पर विचार करने की योग्यता की प्रक्रिया **औपचारिक संक्रिया अवस्था** में पाई जाती है। (उत्तर प्रदेश भाषा टेट-2013, एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

65. जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं के अनुसार जिसे पूर्व-प्रत्ययात्मक काल जाना जाता है, **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से** संबंधित हैं। (हरियाणा टेट-2014)

66. पियाजे के अनुसार, बच्चा अमूर्त स्तर पर चिंतन, बौद्धिक क्रियाएं और समस्या समाधान **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-16 वर्ष)** में करने लगता है। (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

67. पियाजे के अनुसार, 2 से 7 वर्ष के बीच का एक बच्चा संज्ञानात्मक विकास की **पूर्व संक्रियात्मक** अवस्था में होता है। (यूपी टेट-2018, पहला पेपर, सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

68. **पियाजे** के विचार से बच्चे सक्रिय ज्ञान-निर्माता तथा नन्हे वैज्ञानिक हैं, जो संसार के बारे में अपने सिद्धांतों की रचना करते हैं। (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

69. **वाइगोत्स्की** के अनुसार, संज्ञानात्मक योग्यता के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। (यूपी टेट-2017, पहला पेपर)

70. शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये **समाजीकरण** में भी सहायता करती हैं। (सीटीईटी-2014)

71. लॉरेंस कोह्लबर्ग कें सिद्धांत के अनुसार, 'किसी कार्य को इसीलिए करना, क्योंकि दूसरे इसे स्वीकृति देते हैं', नैतिक विकास के **परंपरागत** चरण को दर्शाता है। (सीटीईटी जनवरी-2021, पहला पेपर)

72. वर्ग समूहन की योग्यता का विकास **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था के दौरान** होता है। (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

73. एरिक्सन के अनुसार 'व्यक्तित्व विकास' की पांचवी अवस्था **पहचान बनाम भूमिका संभ्रान्ति** है। (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

74. 16 वर्ष की आयु तक मस्तिष्क का भार लगभग **1200 ग्राम से 1400 ग्राम** हो जाता है। (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

75. 'प्रकार्यवाद' (Functionalism) के प्रवर्तक **विलियम जेम्स** थे। (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

76. 'परिश्रमप्रियता बनाम हीनता' अवस्था के लिए एरिक्सन ने **6 से 11 वर्ष** आयु समूह बताया है। (एचटीईटी 2021, टीजीटी)

77. मनोविज्ञान की **अतीन्द्रिय मनोविज्ञान (Parapsychology)** शाखा में टेलीपैथी, पुनर्जन्म (Telepathy, rebirth) जैसे क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता हैं। (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

78. किशोरावस्था के दौरान विकासात्मक परिवर्तनों के फलस्वरूप होने वाली एक मुख्य समस्या **समायोजन की कमी** है। (रीट अलवर, 2021, दूसरा स्तर)

79. सामाजिक विकास से संबंधित **किशोरावस्था** में व्यक्ति समूह, समाज और राष्ट्र के बृहत्तर हितों में अपने हित को त्याग सकता है। (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

80. पियाजे के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था **7-11 वर्ष** होती है। (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

81. **साक्षात्कार** विधि में परीक्षणकर्ता व्यक्ति से वार्तालाप करके सूचना एकत्रित करता है। (उत्तराखंड टेट नवंबर 2021)

82. विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग-अलग होती है, परंतु यह **अनुक्रमिक और व्यवस्थित** स्वरूप का पालन करती है। (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)

83. मनोविज्ञान में सबसे पुरानी विधि **आत्मनिरीक्षण** है। (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)

84. मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है। किसने कहा है- **जे.बी. वाटसन** ने (बिहार टेट 2011, तमिलनाडु 2019 पहला पेपर)

85. पियाजे ने शैशवावस्था को कहा है। **संवेदी प्रेरक अवस्था** (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)

86. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की **संवेदी प्रेरक अवस्था** में प्रतीकात्मक विचारों का विकास तथा वस्तु स्थायित्व उत्पन्न होता है। (उत्तराखंड टेट नवंबर 2021)

87. एक 12 वर्षीय बालक के सामाजिक विकास के लिए सर्वोत्तम स्थान **खेल का मैदान** है। (छत्तीसगढ टेट 2019, पहला पेपर)

88. कोह्लबर्ग के अनुसार, सही और गलत के प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन-प्रक्रिया को **नैतिक तर्कणा** कहा जाता है। (सीटीईटी 2012)

89. शब्दों के दोहरान/ पुनरावृत्ति की अवस्था ... है। **शैशवावस्था**
(छत्तीसगढ टेट 2017, पहला पेपर)

90. सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक संबंधों के अनुसार क्षमता अर्जित करना है। यह कथन .... है। **हरलॉक का**
(उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2014)

91. जीन पियाजे के अनुसार किस अवस्था में भाषा योग्यता एवं संप्रेषणशीलता का सर्वाधिक विकास होता है- **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था** (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

92. 'विकास के परिणामस्वरूप नवीन विशेषताएं और नवीन योग्यताएं प्रकट होती हैं।' यह कथन किसने दिया है? **हरलॉक (Hurlock)** (यूपी टेट 2017 व 2022, पहला पेपर)

93. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की द्वितीय अवस्था है? **पूर्व-संक्रिया अवस्था** (यूपी टेट-2017 व 2022, दूसरा पेपर)

94. गिरोह अवस्था किस आयु-वर्ग एवं विलंब-विकास से संबंधित है? **8-10 वर्ष एवं समाजीकरण**
(यूपी टेट-2018, पहला पेपर)

95. विकास सामान्यतः सिर से पांव की तरफ अग्रसर होता है, विकास का यह सिद्धांत कहलाता है? **शिरोपादीय**
(एचटीईटी पीजीटी-2016)

96. Father of Medicine के नाम से किस मनोवैज्ञानिक को जाना जाता था? **हिप्पोक्रेटीज** (बिहार प्रा.(विशेष) टेट-2013)

97. वह अवधि जो वयस्कता के संक्रमण की पहल करती है, उसे क्या कहते हैं- **किशोरावस्था** (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

98. मास्टर ग्रंथि (Master Gland) के नाम से जाना जाता है- **पीयूष ग्रंथि को** (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) टेट-2013)

99. किसने व्यक्तित्व के सिद्धांत में अनन्यता संकट की बात कही है? **एरिक एरिक्सन** (उत्तराखंड टेट 2021, पहला पेपर)

100. .... की अवस्था तक बालक की दृष्टि एवं श्रवण इंद्रियां पूर्ण विकसित हो जाती हैं। **8 अथवा 9 वर्ष**
(रीट-2016, पहला स्तर)

101. एरिक्सन के अनुसार, बच्चों का मनोसामाजिक विकास आठ चरणों में होता है। एक कक्षा 3 का छात्र (9 साल के आसपास) विकास के किस चरण से मेल खाता है? **परिश्रम बनाम हीनता** (रीट-2018, पहला स्तर)

102. वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है- **मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था** (सीटीईटी-2011)

103. पियाजे (Piaget) के अनुसार, निम्नलिखित में से कौनसी अवस्था में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं (Abstract Propositions) के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है? **औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर)** (सीटीईटी -2011, सीटीईटी सितंबर-2015, दूसरा पेपर)

104. 'बालक की विवेचना (तर्क) तार्किक नहीं है और यह अंतर्ज्ञान (अंतर्बोध) पर आधारित है न कि व्यवस्थित तर्क पर।' पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास की यह अवस्था कहलाती है : **पूर्व-क्रियात्मक काल**
(एचटीईटी-2018, पीआरटी)

105. एक पूर्व संक्रियात्मक स्तर के बच्चे की वह प्रवृत्ति जिसमें वह किसी परिस्थिति के सिर्फ एक पहलू पर ध्यान देता है और अन्य पहलुओं की उपेक्षा करता है, को पियाजे ने कहा? **केन्द्रीकरण** (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

106 एक बच्चा कहता है कि 'मां आज सूरज उदास है' वह निम्न में से पूर्व संक्रियात्मक चिंतन की किस सीमा की ओर संकेत कर रहा है? **एनिमिज्म (Animism)**
(एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

107. जिस प्रक्रिया से व्यक्ति मानव कल्याण के लिए परस्पर निर्भर होकर व्यवहार करना सीखता है, वह प्रक्रिया है- **समाजीकरण** (रीट अलवर, 2021, दूसरा स्तर)

108. बाल विकास की किस अवस्था को भाषा सीखने की सर्वोत्तम अवस्था कहा जाता है। **शैशवावस्था**
(छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

109. जीवन की वह अवस्था जिसका प्रारंभ यौवनारंभ से होता है, जब यौन परिपक्वता या प्रजनन करने की योग्यता प्राप्त कर ली जाती है, साधारणतया कहलाती है। **किशोरावस्था**
(उत्तराखंड टेट नवंबर 2021, पहला पेपर)

110. किसने कहा है कि 'मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है'? **कॉलेसनिक** (एचपी टेट कला जून, 2023)

111. किसने कहा है कि 'मनोविज्ञान व्यक्ति की क्रियाओं का उसके पर्यावरण के सन्दर्भ में वैज्ञानिक अध्ययन है'? **वुडवर्थ** (एचपी टेट नोन-मेडिकल जून, 2023)

वस्तुनिष्ठ सवाल

1. निम्न में से अधिगमकर्ता शिक्षण प्रक्रिया (Teaching Process) का कौनसा चर है-

(1) स्वतंत्र चर (2) आश्रित चर

(3) मध्यस्थ चर (4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (2) (रीट-2016, पहला स्तर)

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में तीन चर यथा- अध्यापक को स्वतंत्र चर, विद्यार्थी को आश्रित चर और पाठ्यक्रम को मध्यस्थ चर कहा जाता है।

2. निम्नलिखित में से बालक की कौनसी प्रक्रिया मनोगत्यात्मक (Psychodynamic) नहीं है-

(1) सोचना (2) लिखना

(3) गेंद फेंकना (4) खेलना

जवाब : (1) (रीट 2021, दूसरा स्तर)

3. यह कथन 'तुम मेरी पीठ खुजाओ, मैं तुम्हारी खुजाऊंगा', निम्नांकित में से किस प्रकार की नैतिकता की ओर इंगित करता है? जैसा कि पियाजे ने बताया :

(1) सहयोग की नैतिकता का आरंभ

(2) पूर्व रूढ़िवादी नैतिकता

(3) वास्तववाद

(4) नैतिकता से कोई संबंध नहीं है

जवाब : (1) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

4. 'मानव विकास आजीवन चलता रहता है, यद्यपि दो व्यक्ति बराबर नहीं होते हैं, किन्तु सभी सामान्य बालकों में विकास का क्रम एक सा रहता है।' यह कथन विकास के किस सिद्धांत की ओर संकेत करता है -

(1) सतत विकास का सिद्धांत

(2) परस्पर संबंध का सिद्धांत

(3) समान प्रतिरुप का सिद्धांत

(4) सामान्य से विशिष्ट अनुक्रियाओं का सिद्धांत

जवाब : (3) (रीट 2021, पहला स्तर)

5. निम्न में से कौनसा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(1) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धांत

(2) निरंतर विकास का सिद्धांत

(3) परस्पर संबंध का सिद्धांत

(4) समान प्रतिमान का सिद्धांत

जवाब : (1) (यूपी टेट-2017 और 2022, पहला पेपर)

6. चालक विकास की दर में व्यक्तिगत विविधताएं होती हैं, फिर भी चालक विकास का क्रम ..... से ..... तक है।

(1) परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास; अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास

(2) शीर्षगामी; अधोगामी

(3) अधोगामी; शीर्षगामी

(4) अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास; परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास

जवाब : (4) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

7. निम्नलिखित में से कौनसा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(1) विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है।

(2) व्यक्ति अलग-अलग गति से विकास करते हैं।

(3) विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है।

(4) विकास समय के साथ धीरे-धीरे घटित होता है।

जवाब : (1) (सीटीईटी जुलाई-2019, दूसरा पेपर)

8. विकास की प्रक्रिया अविराम गति से निरंतर चलती रहती है पर यह गति कभी तीव्र और कभी मंद होती है। इस प्रक्रिया को निम्न में से कौनसा सिद्धांत कहा जाता है-

(1) विकास-दिशा का सिद्धांत

(2) निरंतर विकास का सिद्धांत

(3) विकास की विभिन्न गति का सिद्धांत

(4) विकास क्रम का सिद्धांत

जवाब : (2) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

9. शैशवावस्था की विशेषता नहीं है-

(1) शारीरिक विकास की तीव्रता

(2) दूसरों पर निर्भरता

(3) नैतिकता का होना

(4) मानसिक विकास में तीव्रता

जवाब : (3) (रीट-2016, दूसरा स्तर)

10. भावनाएं और अनुभूति (Emotions and cognition) एक दूसरे के ....है।

(1) पूरी तरह से अलग (2) स्वतंत्र

(3) आंतरिक जुड़े हुये (4) से संबंधित नहीं है

जवाब : (3) (छत्तीसगढ टेट 2022, दूसरा पेपर)

11. निम्नलिखित में से कौनसा आयु समूह परवर्ती बाल्यावस्था (Later Childhood) श्रेणी के अंतर्गत आता है?

(1) 18 से 24 वर्ष (2) जन्म से 6 वर्ष

(3) 6 से 11 वर्ष (4) 11 से 18 वर्ष

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, पहला पेपर)

12. विकास के विषय में कौनसा कथन सही नहीं है

(1) विकास जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात विकास गर्भाधान से प्रारंभ होकर वृद्धावस्था तक सभी आयु समूहों में होता है

(2) विकास ऐतिहासिक दशाकों से प्रभावित होता है

(3) विकास एक आयामी है

(4) विकास अत्यधिक लचीला या संशोधन योग्य होता है

जवाब : (3) (उत्तराखंड टेट नवंबर 2021, पहला पेपर)

13. शिक्षा मनोविज्ञान एक विज्ञान है-

(1) मानव व्यवहार का (2) मानव सिद्धांतों का

(3) शिक्षा सिद्धांतों का (4) इनमें से सभी

जवाब : (4) (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2011)

14. मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी है-

(1) शिक्षक के लिए

(2) अभिभावक के लिए

(3) विद्यालय प्रशासक के लिए

(4) उपर्युक्त सभी के लिए

जवाब : (4) (बिहार अध्यापक पात्रता परीक्षा-2012)

15. निम्नलिखित में से कौन बच्चे के समाजीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं?

(1) मीडिया (2) विद्यालय

(3) परिवार (4) पास-पड़ोस

(1) 1, 2, 3, 4 (2) 3, 1

(3) 2, 3 (4) 1, 3, 4

जवाब : (1) (सीटीईटी जुलाई-2019, दूसरा पेपर)

16. शिक्षा मनोविज्ञान अधिक बल देता है :

(1) शिक्षक केंद्रित शिक्षा पर

(2) छात्र केंद्रित शिक्षा पर

(3) पाठ्यचर्या केंद्रित शिक्षा पर

(4) विद्यालय केंद्रित शिक्षा पर

जवाब : (2) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

बाल केंद्रित शिक्षा के अनुसार शिक्षण की संपूर्ण कार्य योजना बालक के चारों ओर रहनी चाहिए अर्थात कोई भी निर्णय शिक्षा से संबंधित लिया जाता है, तो वह बालक को केंद्र मानकर किया जाना चाहिए।

17. निम्नलिखित में से कौन विकास के व्यापक आयामों की सही पहचान करता है -

(1) सामाजिक, शारीरिक, व्यक्तित्व, स्व (Self)

(2) शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक

(3) संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं स्व

(4) शारीरिक, व्यक्तित्व, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक

जवाब : (2) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

18. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है?

(1) परिपक्वता में अभ्यास का महत्व होता है

(2) परिपक्वन एक शारीरिक क्रिया है

(3) परिपक्वता मृत्युपर्यंत चलती है

(4) परिपक्वता में केवल मात्रात्मक बदलाव शामिल होते हैं

जवाब : (2) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

19. इनमें से किनका नाम 'सृजनशास्त्र के पिता' (Father of the Eugenics) से जुड़ा हुआ है?

(1) क्रो एवं क्रो (2) गाल्टन

(3) रॉस (4) वुडवर्थ

जवाब : (2) (यूपी टेट-2017 और 2022, पहला पेपर)

फ्रांसिस गाल्टन न केवल एक प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता और सांख्यिकीविद् थे, बल्कि उन्होंने 1883 में सृजनशास्त्र/ यूजीनिक्स (Eugenics) का भी प्रतिपादन किया था।

20. निम्न में से कौनसा बालकों के अधिगम एवं विकास में सबसे अधिक योगदान देता है?

(1) परिवार, समवयस्क समूह और टेलीविजन

(2) परिवार, समवयस्क समूह और अध्यापक

(3) परिवार, खेल एवं कंप्यूटर

(4) परिवार, खेल एवं पर्यटन

जवाब : (2) (रीट-2012, दूसरा स्तर)

21. निम्न में से कौनसा शारीरिक विकास का एक प्रमुख नियम है?

(1) मानसिक विकास से भिन्नता का नियम

(2) अनियमित विकास का नियम

(3) द्रुतगामी विकास का नियम

(4) कल्पना और संवेगात्मक विकास से संबंध का नियम

जवाब : (2) (यूपी टेट-2017 और 2022, पहला पेपर)

22. निम्न में से कौनसा वृद्धि और विकास का प्रथम चरण है?

(1) शारीरिक विकास (2) सामाजिक विकास

(3) नैतिक विकास (4) मानसिक विकास

जवाब : (1) (यूपी टेट-2018, दूसरा पेपर)

23. शुरू में एक बच्चा अपनी पूरी हथेली का उपयोग करके वस्तु को पकड़ता है। धीरे-धीरे वृद्धि और विकास के रूप में बच्चा उंगलियों और अंगूठे का उपयोग वस्तु को उठाने के लिए करता है। इस प्रकार की प्रगति है :

(1) सिफेलोकौडाल प्रगति

(2) प्रॉक्सिमोडिस्टल प्रगति

(3) व्यापक से विशिष्ट कार्यवाही प्रगति

(4) अनियमित प्रगति

जवाब : (3) (रीट-2018, पहला स्तर)

24. मनुष्य जीवन का आरंभ मूलतः घटित है :

(1) दो कोष (Two Cells) (2) केवल एक कोष

(3) कई कोष (Many Cells) (4) कोई कोष नहीं

जवाब : (2) (रीट-2016, दूसरा स्तर)

25. निम्न में से कौनसी एक अंतःस्रावी ग्रंथि नहीं है?

(1) एड्रिनल ग्रंथि (2) पीयूष ग्रंथि

(3) लार ग्रंथि (4) थाइरॉयड ग्रंथि

जवाब : (3) (यूपी टेट-2017 और 2022, दूसरा पेपर)

26. शारीरिक (Physical) विकास का क्षेत्र है ....।

(1) स्नायुमंडल (Nervous System)

(2) मांसपेशियों की वृद्धि (Growth of Muscles)

(3) एंडोक्राइन ग्लैंड्स (Endocrine Glands)

(4) उपर्युक्त सभी (All Above)

जवाब : (4) (रीट-2016, पहला स्तर)

27. पांच साल का एक बच्चा यह तर्क नहीं कर पाता कि जब पानी को ऊंचे और संकरे गिलास से चौड़े बर्तन में डाला जाता है तो पानी की मात्रा उतनी ही रहती है। ऐसा इसलिए होता है कि :

(1) वह प्रतीक नहीं बना पाता
(2) वह अनुकरण नहीं कर पाता
(3) वह वैपर्ययी चिंतन (Reverse Thinking) नहीं कर सकता
(4) उसका व्यवहार उद्देश्योन्मुखी नहीं होता

जवाब : (3) (सीटीईटी मई-2016, पहला पेपर)

28. निम्न में से कौनसी समाजीकरण की निष्क्रिय एजेंसी है?
(1) सार्वजनिक पुस्तकालय (2) स्वास्थ्य क्लब
(3) परिवार (4) ईको क्लब

जवाब : (1) (सीटीईटी -2014)

29. अभिकथन (अ) : चार वर्षीय रिया लम्बे और चौड़े दो बर्तन में एक ही समय में समान मात्रा में पानी डालते समय बर्तनों की ऊंचाई और चौड़ाई को एक ही समय में ध्यान में नहीं रख पाती है।

कारण (ब) : जीन पियाज़े के अनुसार रिया संज्ञानात्मक विकास के पूर्व संक्रियात्मक चरण में है।

सही विकल्प चुनें।
(1) (अ) और (ब) दोनों सही हैं और (ब), (अ) की सही व्याख्या करता है।
(2) (अ) और (ब) दोनों सही हैं लेकिन (ब), (अ) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (अ) सही है लेकिन (ब) गलत है।
(4) (अ) और (ब) दोनों गलत हैं।

जवाब : (1) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

30. किशोरावस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(1) विभिन्न संस्कृतियों के बच्चे एक समान तरीके से किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं और इसे अनुभव करते हैं।
(2) किशोरावस्था एक सामाजिक रचना है।
(3) किशोरावस्था को आमतौर पर यौवन को शुरू करने के लिए माना जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो यौन परिपक्वता और पुनरुत्पादन की क्षमता की ओर ले जाती है।
(4) किशोरावस्था बचपन और वयस्कता के बीच विकासात्मक संक्रमण है जिसमें शारीरिक, संज्ञानात्मक और मनोसामाजिक परिवर्तन होते हैं।

जवाब : (1) (सीटीईटी जनवरी 2024, दूसरा पेपर)

31. जैसा कि फ्रायड ने पाया कि एक आयु विशेष के दौरान 'इलेक्ट्रा ग्रंथि' विकसित होती है। इलेक्ट्रा ग्रंथि विकसित होने की आयु निम्नांकित में से पियाजे के किस चरण में रखी जा सकती है?
(1) संवेदी गामक अवस्था
(2) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(3) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(4) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

जवाब : (2) (राज. टीजीटी 2019, पहला पेपर)

32. समाजीकरण है-
(1) शिक्षक एवं पढ़ाए गए के बीच संबंध
(2) समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया
(3) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन
(4) सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन

जवाब : (3) (सीटीईटी -2013)

33. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है :
(1) एक संस्कृति की रीतियों और मानदंडों को सीखना
(2) कौशलों का अर्जन (Acquisition of Skills)
(3) मूल्यों और विश्वासों (Beliefs) का अर्जन
(4) आनुवंशिक संचरण (Genetic Transmission)

जवाब : (4) (सीटीईटी सिंतबर-2015, दूसरा पेपर)

34. .... एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिशु मानव समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारंभ करता है।
(1) विकास (2) समाजीकरण (Socialization)
(3) सीखना (4) परिपक्वता (Maturation)

जवाब : (2) (सीटीईटी फरवरी-2016, दूसरा पेपर)

35. निम्नलिखित में कौनसे समाजीकरण के गौण वाहक (Secondary Agents) हो सकते हैं?
(1) विद्यालय और निकटतम परिवार के सदस्य
(2) परिवार और रिश्तेदार
(3) परिवार और पास-पड़ोस
(4) विद्यालय और पास-पड़ोस

जवाब : (4) (सीटीईटी सितंबर-2016, पहला पेपर)

36. समाजीकरण एक प्रक्रिया (Process of Socialization) है:
(1) मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की
(2) घुलने-मिलने तथा समायोजन की
(3) एक समाज की संस्कृति की आलोचना करना सीखने की
(4) मित्रों के साथ सामाजिक बनने की

जवाब : (1) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

37. निम्नलिखित में से कौनसा समाजीकरण (Socialization) का एक प्रमुख कारक है?
(1) परिवार (Family) (2) कंप्यूटर
(3) आनुवंशिकता (Heredity) (4) राजनीतिक दल

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

38. बच्चों के समाजीकरण (Socialization of Children) में निम्नलिखित में से किसकी भूमिका नहीं है?
(1) विद्यालय (School) (2) परिवार (Family)
(3) भौतिक आधारभूत संरचना (4) मीडिया (Media)

जवाब : (3) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

39. स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक ऐसी संस्था है जहां-
(1) प्रमुख स्थान स्कूल की दिनचर्या का होता है
(2) प्रमुख स्थान स्कूल की गतिविधियों का होता है
(3) प्रमुख स्थान स्कूल के शिक्षकों का होता है
(4) प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है

जवाब : (4) (सीटीईटी एमवीडी-2018, दूसरा पेपर)

40. एक बालक के समाजीकरण हेतु अध्यापक द्वारा अपनाई गई निम्नलिखित में से कौनसी प्रविधि उपयुक्त नहीं है?

(1) प्रत्यक्ष शिक्षण (Direct Teaching)
(2) तादात्मीकरण (Identification)
(3) प्रजातंत्रीय अनुशासन (Democratic Discipline)
(4) अति-संरक्षण (Over-protection)

जवाब : (4) (एचटीईटी पीजीटी-2016)

41. निम्नांकित में से कौनसा विकल्प समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत नहीं आता है?

(1) सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार को सीखना
(2) सामाजिक रूप से अनुमोदित भूमिका का निर्वाह करना
(3) सामाजिक अभिवृत्ति का विकास
(4) आत्मकेंद्रित व्यवहार का अनुमोदन

जवाब : (4) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

42. विद्यालय और समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

(1) विद्यालय समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण कारक है
(2) समाजीकरण में विद्यालय की कोई भूमिका नहीं होती
(3) समाजीकरण में विद्यालय की न्यून भूमिका होती है
(4) विद्यालय समाजीकरण का पहला मुख्य कारक है

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2016, दूसरा पेपर)

43. निम्न में से सामाजिक मूल्य कौनसा है?

(1) प्राथमिक लक्ष्य (2) सहायतापरक व्यवहार
(3) मूल प्रवृत्ति (4) आक्रामकता की आवश्यकता

जवाब : (2) (यूपी टेट-2018, पहला पेपर)

44. बच्चे के विकास को अक्सर शारीरिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक जैसे व्यापक क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। विकास प्रक्रिया इन क्षेत्रों में कहां तक संबंधित है?

(1) अन्य को प्रभावित किए बिना स्वतंत्र रूप से विकसित
(2) एक एकीकृत और समग्र प्रकार में विकसित
(3) आंशिक रूप से विकसित
(4) बेतरतीब ढंग से विकसित

जवाब : (2) (रीट-2018, पहला स्तर)

45. निम्नलिखित में से कौन सा व्यवहार पैटर्न पूर्व बाल्यावस्था के दौरान सामाजिक परिस्थितियों में असामाजिक व्यवहार पैटर्न के रूप में माना जा सकता है?

(1) उदारता (2) आत्मकेंद्रण
(3) सहकारिता (4) सहानुभूति

जवाब : (2) (राज. टीजीटी 2019, पहला पेपर)

46. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारंभ करते हैं-

(1) धर्म में (2) मानव शरीर में
(3) यौन संबंधों में (4) विद्यालय में

जवाब : (4) (राजस्थान टेट-2011)

6 से10 वर्ष की आयु उत्तर बाल्यावस्था की होती है, जिसे विद्यालय अवस्था भी कहते हैं।

47. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(1) वृद्धि एवं विकास दो अलग आयाम हैं
(2) वृद्धि जीवनपर्यंत चलती है
(3) वृद्धि विकास की प्रक्रिया का ही एक भाग है
(4) विकास सतत प्रक्रिया है

जवाब : (2) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

48. कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के किस चरण में व्यक्ति अपने व्यवहार के परिणाम के बजाए दूसरों की अपेक्षानुसार कार्य करता है ?

(1) पूर्व-संक्रियात्मक चरण (2) पूर्व-परंपरागत चरण
(3) परंपरागत चरण (4) पश्च परंपरागत चरण

जवाब : (3) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

49. विकास का अर्थ है-

(1) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला (Progressive Series of Changes)
(2) अभिप्रेरणा (Motivation) के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(3) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(4) परिपक्वता (Maturation) एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की श्रृंखला

जवाब : (3) (राजस्थान टेट-2011)

50. विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य नहीं है?

(1) विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
(2) विकास बढ़ावा (Stimulation) देने से नहीं होता है
(3) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है
(4) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषता होती है

जवाब : (2) (राजस्थान टेट-2011)

विकास को आयु तथा परिपक्वता के फलन का परिणाम बताया है, जो स्वतः चलने वाली प्रक्रिया है।

51. निम्नलिखित में से कौनसा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के उपयुक्त नहीं है?

(1) सामान्य खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक कुशलताएं (Physical Skills) सीखना
(2) पुरुषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं (Masculine or Feminine Social Role) को प्राप्त करना
(3) वैयक्तिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
(4) अपने हम उम्र बालकों (Agemates) के साथ रहना सीखना

जवाब : (2) (राजस्थान टेट-2011)

52. इनमें से एक विकास का सिद्धांत नहीं है-

(1) निरंतर प्रक्रिया (2) गतिशील प्रक्रिया

(3) पूर्वकथनीय प्रक्रिया (4) प्रतिवर्त्य प्रक्रिया

जवाब : (4) (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

53. इनमें से एक श्रेष्ठ गामक कौशल का उदाहरण है-

(1) चलना (2) रेंगना

(3) बैठना (4) हथेली दबोच लेना

जवाब : (1) (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

54. यह मान्यता कि भौतिक वस्तुएं जैसे गुड़िया, कार में सजीव गुण होते हैं क्या कहलाती है?

(1) जीवात्मक सोच (2) पदानुक्रमित सोच

(3) केन्द्रीकरण (4) वर्गीकरण

जवाब : (1) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

55. विकासात्मक अवस्था में द्रुतगामी अभिवृद्धि और विकास देखा जाता है-

(1) पूर्व बाल्यावस्था (2) शैशवावस्था

(3) युवा प्रौढ़ावस्था (4) उत्तर बाल्यावस्था

जवाब : (2) (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

56. मस्तकाधोमुखी एवं निकट से दूर का क्रम किस क्रिया का अंग है?

(1) चेतना (2) विकास

(3) वृद्धि (4) संशोधन

जवाब : (2) (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

57. गामक विकास (Motor Development) से हमारा तात्पर्य मांसपेशियों के विकास से तथा पैरों के उचित उपयोग

(1) मस्तिष्क और आत्मा (Brain and Soul)

(2) अधिगम और शिक्षा (Learning and Education)

(3) प्रशिक्षण और अधिगम (Training and Learning)

(4) शक्ति और गति (Power and Speed)

जवाब : (4) (रीट-2016, दूसरा स्तर)

58. इस अवस्था में बालकों में नई खोज करने की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है :

(1) शैशव (2) उत्तर बाल्यकाल

(3) किशोरावस्था (4) प्रौढ़ावस्था

जवाब : (2) (रीट-2016, पहला स्तर)

59. सामाजीकरण की प्रथम संस्था है

(1) परिवार (2) स्कूल

(3) दोस्त (4) मीडिया

जवाब : (1) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

60. विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है?

(1) किशोरावस्था (2) प्रौढ़ावस्था

(3) मध्यावस्था (4) वृद्धावस्था

जवाब : (1) (उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

स्टेनले हॉल (Stanley Hall) का कार्य विकासवादी सिद्धांत पर केंद्रित है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल ने अपनी पुस्तक 'एडोलेसेंस' (Adolescence) में लिखा है कि 'व्यक्ति का नया जीवन तब शुरू होता है जब वह किशोरावस्था से गुजरता है। यह अत्यधिक दबाव और तनाव का काल होता है।

61. मात्रात्मक व्यक्तिगत क्षमता रूपी प्रक्रिया को कहा जाता है?

(1) विकास (Development) (2) वृद्धि (Growth)

(3) संतुलन (Equilibrium) (4) परिपक्वता (Maturation)

जवाब : (2) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

62. दुर्बलीकरण बाधा है-

(1) शारीरिक स्तर पर (2) कार्यात्मक स्तर पर

(3) सामाजिक स्तर पर (4) शैक्षिक स्तर पर

जवाब : (2) (हरियाणा टेट-2014)

63. शैशवावस्था मानव विकास की प्रमुख अवस्था है-

(1) प्रथम (2) द्वितीय

(3) तृतीय (4) चतुर्थ

जवाब : (2) (बिहार प्रा. उर्दू एवं बंगला (विशेष) शिक्षक पात्रता परीक्षा-2013)

मानव विकास की 6 अवस्थाएं होती हैं- 1. गर्भावस्था, 2. शैशवावस्था, 3. बाल्यावस्था, 4. किशोरावस्था, 5. प्रौढ़ावस्था तथा 6. वृद्धावस्था।

64. शैशवकाल की अवधि (Period of Infancy) है :

(1) जन्म से 1 वर्ष तक (2) जन्म से 2 वर्ष तक

(3) जन्म से 3 वर्ष तक (4) 2 से 3 वर्ष तक

जवाब : (2) (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर, यूपी टेट-2022, पहला पेपर)

65. 'जीवन की उत्पत्ति' (विकास) के शिक्षण हेतु अध्यापक को अवश्य भ्रमण करना चाहिए-

(1) प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय

(2) पुरातात्विक संग्रहालय

(3) चिड़ियाघर

(4) जीव संरक्षण उद्यान (पशु अभयारण्य)

जवाब : (2) (सीटीईटी 2012)

66. बचपन से वयस्कता के परिवर्तनकाल का समय कौन-सा है?

(1) प्रारंभिक बाल्यावस्था (2) माध्यमिक बाल्यावस्था

(3) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (4) किशोरावस्था

जवाब : (4) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

67. निम्न में से किसके लिए स्थूल गामक कौशल के उपयोग की आवश्यकता होगी ?

(1) ब्रश से पेपर पर पेंटिंग करता

(2) पेपर के टुकड़े काटना और चिपकाना

(3) सुई में धागा डालना

(4) चलना और दौड़ना

जवाब : (4) (सीटीईटी दिसंबर 2022, पहला पेपर)

68. विकास में वृद्धि से तात्पर्य है-

(1) ज्ञान में वृद्धि

(2) संवेग में वृद्धि

(3) वजन में वृद्धि

(4) आकार, सोच, समझ, कौशलों में वृद्धि

जवाब : (4) (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

69. गत्यात्मक कौशल विकास हेतु शिक्षक को प्रयोग में लाना चाहिए-

(1) सुलेख लेखन
(2) चित्रकला
(3) उंगलियों से सूक्ष्म वस्तुओं को पकड़ना
(4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (4) (बिहार टेट-2012)

70. मेरडिथ (Meredith) के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से उन परिवारों के बालक .... होते हैं, जो सामाजिक स्तर से ऊंचे होते हैं।

(1) कम स्वस्थ एवं विकसित
(2) अधिक स्वस्थ एवं विकसित
(3) अधिक स्वस्थ एवं कम विकसित
(4) स्वस्थ नहीं पर विकसित

जवाब : (2) (रीट-2016, दूसरा स्तर)

71. शारीरिक विकास का क्षेत्र है-

(1) स्नायुमंडल (2) स्मृति
(3) अभिप्रेरणा (4) समायोजन

जवाब : (1) (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

72. मनोविज्ञान का कौन सा सम्प्रदाय मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान स्वीकार करता है?

(1) संरचनावाद (2) प्रकार्यवाद
(3) रचनावाद (4) व्यवहारवाद

जवाब : (1) (एचपी टेट नोन-मेडिकल जून, 2023)

73. 'विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है', यह विचार किससे संबंधित है?

(1) एकीकरण का सिद्धांत (2) अंतःक्रिया का सिद्धांत
(3) अंतःसंबंध का सिद्धांत (4) निरंतरता का सिद्धांत

जवाब : (4) (रीट 2021, दूसरा स्तर, सीटीईटी -2011)

74. वृद्धि व विकास का मुख्य सिद्धांत है?

(1) तत्परता का नियम (2) एकता का नियम
(3) वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत (4) इनमें से सभी

जवाब : (3) (बिहार टेट-2012 (कक्षा I से V))

75. मध्य बाल्यावस्था (Middle Childhood) में भाषा .... के बजाय ...... अधिक है।

(1) अहंकेंद्रित (Egocentric), समाजीकृत
(2) समाजीकृत (Socialized), अहंकेंद्रित
(3) जीववादी (Animistic), समाजीकृत
(4) परिपक्व (Mature), अपरिपक्व (Immature)

जवाब : (2) (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

76. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था का बालक दौड़ते हुए सड़क पर गिर जाता है और कहता है कि सड़क ने उसे धक्का दे दिया। यह निम्नांकित में किस विशेषता को दर्शाता है?

(1) आत्मकेंद्रण (2) एनीमिज्म
(3) वस्तु स्थायित्व (4) A-B खोज

जवाब : (2) (राज. टीजीटी 2019, पहला पेपर)

77. निम्नलिखित में से कौनसा बाल-विकास का एक सिद्धांत (Principle of Child Development) नहीं है?

(1) सभी विकास एक क्रम का पालन करते हैं
(2) विकास के सभी क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं
(3) सभी विकास परिपक्वन तथा अनुभव की अंतःक्रिया का परिणाम होते हैं
(4) सभी विकास तथा अधिगम एक समान गति से आगे बढ़ते हैं

जवाब : (4) (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

78. विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किंतु यह एक .... नमूने का अनुगमन करती है।

(1) अव्यवस्थित (Haphazard)
(2) अप्रत्याशित (Unpredictable)
(3) क्रमबद्ध और व्यवस्थित (Sequential and Orderly)
(4) एड़ी से चोटी (Toe to Head)

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

79. विकास के लिए निम्नलिखित में से कौनसा एक उचित है?

(1) 'सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ' विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है
(2) विकास एकल आयामी है
(3) विकास पृथक् होता है
(4) विकास जन्म के साथ प्रारंभ होता है और समाप्त होता है

जवाब : (1) (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

80. विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौनसा एक कथन सही है?

(1) विकास जन्म से किशोरावस्था तक आगे की ओर बढ़ता है और फिर पीछे की ओर
(2) विकासात्मक परिवर्तन एक सीधी रेखा में आगे जाते हैं
(3) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है
(4) विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रुक जाता है

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2016, दूसरा पेपर)

81. गतिकी विकास/प्रेरक विकास का समीपदूराभिमुख सिद्धांत (Proximodistal Principle of Motor Development) का आशय है :

(1) विकास पैर से सिर की ओर अभिमुख होता है
(2) यह बचपन में जैविकीय परिवर्तनों की एक श्रृंखला है
(3) विकास जीव के केंद्र से परिधि की ओर अग्रसर होता है
(4) विकास सिर से पैर की ओर अभिमुख होता है

जवाब : (3) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

82. विकास के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित में से कौनसा कथन गलत है?

(1) विकास परिपक्वन व अधिगम पर आधारित होता है
(2) विकास वंशानुगतता और वातावरण के बीच सतत अन्योन्यक्रिया से होता है
(3) प्रत्येक बच्चा विकास के चरणों से गुजरता है, फिर भी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएं बहुत होती हैं
(4) विकास एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है जिसका ठीक-ठीक मापन हो सकता है

जवाब : (4) (सीटीईटी सितंबर-2016, दूसरा पेपर)

83. जब विकास के किसी भी क्षेत्र विशेष में बच्चे की क्षमता कम है, तो :
(1) वह उसके सर्वांगीण विकास को प्रभावित नहीं करता
(2) इसका अर्थ विकास के किसी क्षेत्र में कोई विलंब नहीं
(3) विकास के सभी क्षेत्रों पर उसका प्रभाव पड़ता है
(4) उसका बच्चे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

जवाब : (3) (सीटीईटी मई-2016, पहला पेपर)

84. विकास का शिरःपदाभिमुख दिशा सिद्धांत (Cephalocaudal Principle of Development) व्याख्या करता है कि विकास इस प्रकार आगे बढ़ता है :
(1) सिर से पैर की ओर (From Head to Toe)
(2) ग्रामीण से शहरी (Rural to Urban) क्षेत्रों की ओर
(3) सामान्य से विशिष्ट (General to Specific) कार्यों की ओर
(4) भिन्न से एकीकृत कार्यों (Integrated Functions) की ओर

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2016, पहला पेपर)

85. शरीर के केंद्रीय भाग से परिधियों या अग्रांगों की ओर का विकास (The Development From Central Part of the Body Towards Peripheries or Extremities) दर्शाता है-
(1) विकेंद्रीकृत (Decentralized) विकास के सिद्धांतों को
(2) मध्य-बाह्य (Proximodistal) विकास के सिद्धांतों को
(3) सोपानीय (Cascade) विकास के सिद्धांतों को
(4) विकिरणीय (Radiated) विकास के सिद्धांतों को

जवाब : (2) (सीटीईटी एमवीडी-2018, दूसरा पेपर)

86. .... महीनों की आयु के बीच अधिकांश बच्चे शब्दों को मिलाकर छोटे-छोटे वाक्यों में बोलना शुरू कर देते हैं।
(1) 18 से 24 (2) 24 से 30
(3) 30 से 36 (4) 12 से 18

जवाब : (1) (सीटीईटी एमवीडी-2018, दूसरा पेपर)

87. निम्नांकित में से कौनसा कथन मस्तिष्क के ब्रोका क्षेत्र (Broca's Area of Brain) के संदर्भ में सही नहीं है?
(1) यह मस्तिष्क के बाएं फ्रंटल लोब (Left Frontal Lobe) में स्थित होता है
(2) यह व्याकरण संबंधी प्रक्रियाओं में सहायता करता है
(3) यह भाषा उत्पादन का कार्य करता है
(4) यह शब्दों के अर्थ समझने में मदद करता है

जवाब : (4) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

88. निम्नांकित में से किस दृष्टिकोण की यह मान्यता है कि बाल विकास एक सतत प्रक्रिया नहीं है?
(1) पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
(2) व्यवहारवाद (Behaviorism)
(3) सामाजिक अधिगम (Social Learning) सिद्धांत
(4) पारिस्थितिकीय तंत्र (Ecological System) सिद्धांत

जवाब : (1) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

89. निम्नांकित में से कौनसा नवजात शिशु के 'रिफ्लैक्स' (Reflexes) का एक प्रकार नहीं है?
(1) आंख झपकाना (Eye Blink) (2) चूसना (Sucking)
(3) तैरना (Swimming) (4) कार चलाना

जवाब : (4) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

90. मस्तिष्क के प्री-फ्रंटल कॉर्टेक्स द्वारा निम्नांकित में से कौनसा कार्य नियंत्रित नहीं होता है?
(1) शारीरिक परिचालन (Body Movement)
(2) चिंतन (Thinking)
(3) समस्या समाधान (Problem Solving)
(4) दृष्टि एवं श्रवण (Vision and Hearing)

जवाब : (3) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

91. निम्नांकित में से कौनसा कथन 'समीपस्थ विकास का खेल' के संदर्भ में सही नहीं है?
(1) यह वाइगोत्स्की के सिद्धांत से जुड़ा है
(2) यह बच्चे के सीखने की क्षमता की उच्च सीमा निर्धारित करता है
(3) यह उन कार्यों/क्रियाओं का क्षेत्र है जिन्हें बच्चा बिना दूसरों की सहायता के पूरा नहीं कर सकता और न ही स्वतंत्र रूप से स्वयं कर सकता है
(4) यह उन कार्यों की उच्च सीमा है जिसे बच्चा सफलतापूर्वक स्वतंत्र रूप से कर सकता है

जवाब : (4) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

92. एक किशोर अपने बाएं हाथ से कार्य करता है; जैसे खाना लेना या लिखना, इस विकास का कारण है :
(1) वंशानुगत व्यवहार (2) विकासात्मक व्यवहार
(3) गलत व्यवहार (4) सभी विकल्प सही हैं

जवाब : (2) (एचटीईटी पीजीटी-2016)

93. निकटवर्ती विकास का क्षेत्र संदर्भित करता है-
(1) उस विकासात्मक चरण को, जब बच्चा सीखने की पूरी जिम्मेदारी लेता है
(2) एक संदर्भ को, जिसमें बच्चे सहयोग के सही स्तर के साथ कोई कार्य लगभग स्वयं कर सकते हैं
(3) उस सीखने के बिंदु को, जब सहयोग वापस लिया जा सकता है
(4) उस चरण को, जब अधिकतम विकास संभव है

जवाब : (2) (सीटीईटी एमवीडी-2018, पहला पेपर)

94. विकास का एक अधिनियम है कि विकास प्रतिमान के विभिन्न काल में खुशी भिन्न-भिन्न होती है। इस

अधिनियम के अनुसार :

(1) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक ख़ुशी का काल होता है

(2) वय संधि काल एवं जीवन का प्रथम वर्ष भी जीवन का सबसे अधिक ख़ुशी का काल होता है

(3) वय संधि काल (Puberty Period) जीवन का सबसे अधिक दुःखी काल होता है

(4) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे ख़ुशी का एवं वय संधि काल सबसे अधिक दुःखी काल होता है

जवाब : (4) (रीट-2012, दूसरा स्तर)

95. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के छात्रों को आवश्यकता है-

(1) कक्षा-कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण की

(2) सीखने में स्वायत्तता की

(3) क्रिया आधारित, अंतःक्रियात्मक अधिगम की

(4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (4) (हरियाणा टेट-2011)

96. चार वर्ष की अपर्णा कहती है कि एक बटन जिंदा है क्योंकि यह उसकी शर्ट को एक साथ बांधने में मदद करता है। जीन पियाज़े के अनुसार, उसकी सोच की विशेषता है।

(1) पारगमनात्मक तर्क (2) जीववादी चिंतन

(3) केंद्रीयन (4) परिकल्पित-निगमनात्मक चिंतन

जवाब : (2) (सीटीईटी अगस्त 2023, पहला पेपर)

97. वृद्धि के बारे में क्या सही नहीं है?

(1) अभिवृद्धि शारीरिक होती है

(2) अभिवृद्धि मात्रात्मक होती है

(3) अभिवृद्धि मापनीय होती है

(4) अभिवृद्धि जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है

जवाब : (4) (हरियाणा टेट-2011)

98. किसी शिक्षक के लिए वृद्धि और विकास के सिद्धांतों के बारे में जानना महत्वपूर्ण है, क्योंकि :

(1) यह ज्ञान बच्चों को पृथक् करने में शिक्षक की सहायता करेगा

(2) शिक्षक अच्छा प्रभाव डालने में समर्थ हो सकेगा

(3) बच्चों को सीखने के उपयुक्त अवसर प्रदान करने में यह ज्ञान शिक्षक के लिए सहायक होगा

(4) इससे बाल विकास एक लोकप्रिय पाठ्यक्रम बनेगा

जवाब : (3) (सीटीईटी मई-2016, पहला पेपर)

99. बालक में बुरी आदतों के विकसित होने का मुख्य कारण है-

(1) एकाकीपन (2) सामाजिक तुष्टीकरण

(3) पारिवारिक झगड़े (4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (4) (बिहार टेट-2012)

100. निम्नलिखित में से कौनसा कथन विकास और अधिगम के बीच संबंध को सर्वश्रेष्ठ रूप में जोड़ता है?

(1) अधिगम व विकास समानार्थक/पारिभाषिक शब्द हैं

(2) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतःसंबंधित हैं

(3) विकास अधिगम से स्वतंत्र है

(4) अधिगम विकास के पीछे रहता है

जवाब : (2) (सीटीईटी सितंबर-2015, दूसरा पेपर)

101. निम्नलिखित में से कौनसा कथन ठीक है?

(1) सभी बच्चों में बचपन प्रसन्नता की अवस्था होती है

(2) बच्चे विचार करने में बड़ों जैसे ही होते हैं

(3) बच्चे शैतान जीव हैं जिन्हें उनके निकटस्थ प्रौढ़ों को वश में करना होता है

(4) भिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के बच्चे बचपन का अनुभव भी भिन्न रूप में करते हैं।

जवाब : (4) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

102. विद्यार्थियों में संप्रत्ययात्मक विकास (Conceptual Develop-ment) को प्रोत्साहन देने के लिए निम्नलिखित में से कौनसी विधि सबसे प्रभावी है?

(1) विद्यार्थियों को बहुत-से उदाहरण देना और उन्हें तर्कशक्ति का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना

(2) जब तक विद्यार्थियों में वांछित संप्रत्ययात्मक परिवर्तन न हो जाए, तब तक दंड का उपयोग करना

(3) पुराने प्रत्ययों से किसी संदर्भ के बिना नए प्रत्ययों को अपने आप समझा जाना चाहिए

(4) याद करने के लिए कहकर विद्यार्थियों के गलत विचारों को सही विचारों में बदलना

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2016, पहला पेपर)

103. वह अवस्था जब बालक अपने अभिभावकों के साथ कम आनंदित होता है, संबंधित है उसके :

(1) शारीरिक विकास से (2) मानसिक विकास से

(3) भाषा विकास से (4) सामाजिक विकास से

जवाब : (4) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

104 निम्नलिखित कथनों में से आप किससे सहमत हैं?

(1) अधिगम पूर्ण रूप से बाह्य उद्दीपन द्वारा नियंत्रित होता है

(2) अधिगम तब तक घटित नहीं हो सकता है जब तक कि इसका अंकों के रूप में बाह्य रूप से आकलन नहीं कर लिया जाता है

(3) अधिगम केवल तभी होता है, यदि यह व्यवहार में सुस्पष्ट होता है

(4) अधिगम एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में घटित होता है

जवाब : (4) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

105. इनमें से कौनसा बाल विकास का एक सिद्धांत है?

(1) विकास परिपक्वन तथा अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है

(2) अनुभव विकास का एकमात्र निर्धारक है

(3) विकास प्रबलन तथा दंड द्वारा सुनिश्चित किया जाता है

(4) विकास प्रत्येक बच्चे की गति का सही ढंग से अनुमान लगा सकता है

जवाब : (1) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

106. निम्नलिखित में से कौन प्रारंभिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान उन भूमिकाओं एवं व्यवहारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं जो एक समूह में स्वीकार्य हैं?

(1) अध्यापक एवं साथी (2) साथी एवं माता-पिता
(3) माता-पिता व भाई-बहन (4) भाई-बहन व अध्यापक

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, पहला पेपर)

107. निम्नलिखित में से कौनसा कथन बच्चों की त्रुटियों (Children's Errors) के संबंध में सबसे उपयुक्त है?

(1) बच्चे गलतियां करते हैं क्योंकि उनमें विचार करने की क्षमता नहीं होती
(2) बच्चों की गलतियां एक खिड़की के समान होती हैं, यह जानने के लिए कि वे किस प्रकार सोचते हैं
(3) गलतियों से बचने के लिए बच्चों को शिक्षक का अनुकरण करना चाहिए
(4) बच्चों की गलतियों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उन्हें कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि वे गलतियां न दोहराएं

जवाब : (2) (सीटीईटी सितंबर-2015, दूसरा पेपर)

108. परिपक्वता का संबंध है-

(1) विकास (2) बुद्धि
(3) सृजनात्मकता (4) रुचि

जवाब : (1) (छत्तीसगढ़ टेट-2011)

109. निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(1) जो अध्यापक यह विश्वास करता है कि विकास प्रकृति की वजह से होता है, वह अनुभव प्रदान करने को महत्व नहीं देता
(2) प्रारंभिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और अध्यापक का हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण होता है
(3) प्रारंभिक जीवन की नकारात्मक घटनाओं के प्रभाव से कोई भी अध्यापक बचाव नहीं कर सकता
(4) व्यवहारात्मक परिवर्तन के संदर्भ में विकास वातावरणीय प्रभावों के फलस्वरूप होता है

जवाब : (3) (रीट-2012, पहला स्तर)

110. निम्नलिखित में से कौनसा मूर्त क्रियात्मक अवस्था के प्रमुख कौशलों में से एक है -

(1) द्वितीयक वर्तुल प्रतिक्रियाएं
(2) सजीवात्मक चिंतन (Animistic Thinking)
(3) सुरक्षित रखने की योग्यता
(4) परिकल्पित निगमनात्मक तर्क

जवाब : (3) (सीटीईटी जुलाई-2019, दूसरा पेपर)

111. पियाजे के सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित में से कौनसा व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) को प्रभावित नहीं करेगा?

(1) सामाजिक अनुभव (Social Experiences)
(2) परिपक्वन (Maturation)
(3) क्रियाकलाप (Activity)
(4) भाषा (Language)

जवाब : (1) (सीटीईटी फरवरी-2015, पहला पेपर)

112. निम्नलिखित वर्णन को पढ़िए तथा कोह्लबर्ग के नैतिक तर्क की अवस्था को पहचानिए -

वर्णन (Description) :

अंतःकरण के स्व-चयनित नैतिक सिद्धांतों द्वारा सही कार्य परिभाषित किया जाता है जो कानून एवं सामाजिक समझौते पर ध्यान दिए बिना संपूर्ण मानवता के लिए वैध होता है।

(1) सार्वभौम नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(2) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास
(3) सामाजिक-अनुबंधन अभिविन्यास
(4) सामाजिक-क्रम व्यवस्था अभिविन्यास

जवाब : (1) (सीटीईटी जुलाई-2019, दूसरा पेपर)

113. एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है कि हिंज (Heinz) को दवाई की चोरी नहीं करनी चाहिए। (वह दवाई जो उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए जरूरी है) क्योंकि यदि वह ऐसा करता है तो पकड़ा जाएगा और जेल भेज दिया जाएगा। कोह्लबर्ग के अनुसार, वह बच्चा नैतिक समग्र की किस अवस्था के अंतर्गत आता है-

(1) सार्वभौम नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(2) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास
(3) सामाजिक-क्रम नियंत्रक अभिविन्यास
(4) दंड एवं आज्ञापालन अभिविन्यास

जवाब : (4) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

114. जीन पियाजे के अनुसार, बच्चे -

(1) को पुरस्कार एवं दंड के सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए विशिष्ट तरीके से व्यवहार करना एवं सीखना सिखाया जा सकता है
(2) ज्ञान को सक्रिय रूप से संरक्षित करते हैं, जैसे-जैसे वे दुनिया में व्यवहार कौशल का प्रयोग करते हैं तथा अन्वेषण करते हैं
(3) प्रेक्षणात्मक अधिगम की प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए दूसरों का अवलोकन करके सीखते हैं
(4) को उद्दीपन अनुक्रिया संबंधों के सावधानीपूर्ण नियंत्रण के द्वारा एक विशेष तरीके से व्यवहार करने के लिए अनुबंधित किया जा सकता है

जवाब : (2) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

115. जीन पियाजे के सिद्धांत का प्रमुख प्रस्ताव है कि -

(1) बच्चों की सोच गुणात्मक रूप में वयस्कों से भिन्न होती है
(2) बच्चों की सोच वयस्कों से निम्न होती है
(3) बच्चों की सोच वयस्कों से बेहतर होती है
(4) बच्चों की सोच मात्रात्मक रूप से वयस्कों से भिन्न होती है

जवाब : (1) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

116. निम्नलिखित में से कौनसा पूर्व क्रियात्मक अवस्था काल के बच्चे को विशेषित करता है -

(1) विचारों की अनुत्क्रमणीयता
(2) वर्तुल प्रतिक्रिया (Circular Reactions)
(3) लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार
(4) विलंबित अनुकरण (Deffered Imitation)

जवाब : (1) (सीटीईटी जुलाई-2019, पहला पेपर)

117. एक किशोर यह महसूस करता है कि अब तक उसके जैसा गहरा प्यार किसी ने नहीं किया है। यह द्योतक है :

(1) काल्पनिक दर्शक का (2) व्यक्तिगत मिथक का
(3) आत्म-परिचय/पहचान का (4) पहचान संकट का

जवाब : (2) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

118. निम्नलिखित में से कौन बालक में नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

(1) प्रार्थना सभा (2) सही समाजीकरण
(3) बुद्धि (4) सभी विकल्प सही हैं

जवाब : (4) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

119. छात्रों में नैतिक मूल्यों का प्रभावी रूप से विकास किया जा सकता है, यदि अध्यापक :

(1) बार-बार मूल्यों की बात करे
(2) स्वयं उन पर आचरण करे
(3) महान व्यक्तियों की कहानियां सुनाए
(4) देवी-देवताओं की बातें करे

जवाब : (2) (एचटीईटी पीजीटी-2016)

120. बालकों के संवेगात्मक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से किस प्रकार का वातावरण अधिक उपयुक्त है?

(1) उदासीन (Indifferent)
(2) प्रभुत्ववादी (Dominant)
(3) सहयोगपूर्ण (Co-operative)
(4) अनुमत/वर्जनाहीन (Permissive)

जवाब : (4) (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2011)

121. भौतिक वृद्धि और विकास, विकास के ..... और. ...... सिद्धांतों का पालन करते हैं।

(1) एकीकरण (सरल से जटिल); विभेदीकरण (जटिल से सरल)
(2) शीर्षगामी (अवरोही); समीपस्थ (आंतरिक से बाहरी)
(3) समीपस्थ (अवरोही); शीर्षगामी (आंतरिक से बाहरी)
(4) विभेदीकरण (सरल से जटिल); एकीकरण (जटिल से सरल)

जवाब : (2) (सीटीईटी अगस्त 2023, पहला पेपर)

122. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों के संवेगात्मक विकास (Emotional Development) के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

(1) अध्यापकों की कोई भी सहभागिता नहीं क्योंकि यह माता-पिता का कार्य है
(2) कक्षा-कक्ष का नियंत्रित परिवेश (Controlled Environment)
(3) कक्षा-कक्ष का अधिकारवादी परिवेश (Authoritarian Environment)
(4) कक्षा-कक्ष का प्रजातांत्रिक परिवेश (Democratic Environment)

जवाब : (4) (सीटीईटी फरवरी-2015, पहला पेपर)

123. नौ वर्ष के बालक की नैतिक तर्कणा आधारित होती है :

(1) किसी कार्य के भौतिक परिणाम उसकी अच्छाई या बुराई को निर्धारित करते हैं
(2) कोई कार्य सही होना इस बात पर निर्भर करता है कि उससे व्यक्ति की अपनी आवश्यकता पूर्ति होती है
(3) नियमों का पालन करने के बदले में कुछ लाभ मिलना चाहिए
(4) सही कार्य वह है जो उस व्यक्ति द्वारा किया जाए जो अन्य व्यक्तियों को अपने व्यवहार से प्रभावित करता है

जवाब : (1) (रीट-2012, पहला स्तर)

124. कोह्लबर्ग के अनुसार, एक बालक के नैतिक विकास के कौन से स्तर में यह नैतिक मूल्यों का आंतरीकरण (आभ्यंतरीकरण) प्रदर्शित नहीं करता है और बालक के नैतिक तर्क बाह्य पुरस्कार और दंड से नियंत्रित रहते हैं?

(1) पूर्व-परंपरागत (2) परंपरागत
(3) पश्च-परंपरागत (4) सार्वभौतिक नैतिक सिद्धांत

जवाब : (1) (एचटीईटी-2018, पीआरटी)

125. कोह्लबर्ग के सिद्धांत के योगदान के रूप में निम्नलिखित में से किसे माना जा सकता है?

(1) इस सिद्धांत में विस्तृत परीक्षण प्रक्रियाएं हैं
(2) यह नैतिक तर्क और कार्यवाही के बीच एक स्पष्ट संबंध स्थापित करता है
(3) उनका विश्वास है कि बच्चे नैतिक दार्शनिक हैं
(4) उनके सिद्धांत ने संज्ञानात्मक परिपक्वता और नैतिक परिपक्वता के बीच एक सहयोग का समर्थन किया है

जवाब : (4) (सीटीईटी एमवीडी-2018, पहला पेपर)

126. कोह्लबर्ग के अनुसार, अच्छा बालक/अच्छी बालिका की ओर उन्मुख होना संकेत है :

(1) पूर्व लौकिक नैतिकता का
(2) पश्च लौकिक नैतिकता का
(3) लौकिक नैतिकता का
(4) नैतिकता का सापेक्षिक

जवाब : (3) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

127. निम्नांकित में से किसने बच्चों में नैतिक विकास का अध्ययन किया?

(1) कोह्लबर्ग ने (2) पियाजे ने
(3) (1) एवं (2) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

जवाब : (3) (एचटीईटी टीजीटी गणित-2017)

128. कोह्लबर्ग के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना क्या है?

(1) कोह्लबर्ग ने बिना किसी अनुभूतिमूलक आधार के सिद्धांत प्रस्तुत किया

(2) कोह्लबर्ग ने प्रस्ताव किया कि नैतिक तार्किकता विकासात्मक है
(3) कोह्लबर्ग ने पुरुषों एवं महिलाओं की नैतिक तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्व नहीं दिया
(4) कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास की स्पष्ट अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

129. कोह्लबर्ग इसमें विश्वास रखता है-
(1) एक स्तर के नैतिक फैसले से दूसरे फैसले तक की गति ज्ञानात्मक परिपक्वता में उन्नति पर आश्रित है
(2) सांयोगिक क्रम में नैतिक फैसले के स्तरों को खोल देना
(3) अंतिम स्तर के नैतिक फैसले की पहुंच सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर आधारित होती है
(4) पर्यावरणीय निवेश पर नैतिक फैसला आश्रित नहीं है

जवाब : (1) (आंध्र प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2012)

130. कोह्लबर्ग के सिद्धांत के पूर्व-परंपरागत स्तर के अनुसार, कोई नैतिक निर्णय (Moral Decision) लेते समय एक व्यक्ति निम्नलिखित में से किस तरफ प्रवृत्त होगा?
(1) अंतर्निहित संभावित दंड
(2) व्यक्तिगत आवश्यकताएं तथा इच्छाएं
(3) व्यक्तिगत मूल्य
(4) पारिवारिक अपेक्षाएं

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2015, पहला पेपर)

131. पूर्व-परंपरागत नैतिकता में :
(1) बहुत से नियमों तथा मूल्यों को व्यक्ति द्वारा आंतरिकता दी जाती है
(2) न्याय के व्यापक तथा उदारता आधारित सिद्धांत नियमों को सामाजिक अनुबंध के रूप में देखने के लिए शामिल किए जाते हैं
(3) नियमों तथा मूल्यों का विचार विकसित नहीं होता है
(4) व्यक्ति के लिए नियम तथा मूल्य बाह्य होते हैं

जवाब : (4) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

132. किसी बच्चे का दिया गया विशिष्ट उत्तर कोह्लबर्ग के नैतिक तर्क के सोपानों की विषयवस्तु के किस सोपान के अंतर्गत आएगा?

'यदि आप ईमानदार हैं, तो आपके माता-पिता आप पर गर्व करेंगे। इसलिए आपको ईमानदार रहना चाहिए।'
(1) अच्छी लड़की-अच्छा लड़का अनुकूलन
(2) कानून और व्यवस्था अनुकूलन
(3) दंड-आज्ञाकारिता अनुकूलन
(4) सामाजिक संकुचन अनुकूलन

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2016, पहला पेपर)

133. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थूल गतिक कौशल है?
(1) बुनाई (2) तैरना
(3) एक कागज़ पर वृत्त को रूपरेखा के अनुसार काटना
(4) एक कागज़ पर एक बड़े आयत को रूपरेखा के अनुसार काटना

जवाब : (2) (सीटीईटी अगस्त 2023, पहला पेपर)

134. निम्नलिखित में से कौन बालक में नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
(1) प्रार्थना सभा (2) सही समाजीकरण
(3) बुद्धि (4) सभी विकल्प सही है

जवाब : (4) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

135. निम्न में से कौनसा कथन विकास के संबंध में सही नहीं है?
(1) विकास प्रतिमानों की कुछ निश्चित विशेषताओं की भविष्यवाणी की जा सकती है
(2) विकास का उद्देश्य वंशानुगत संभाव्य क्षमता का विकास करना है
(3) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में संभाव्य खतरे नहीं होते हैं
(4) प्रारंभिक विकास बाद के विकास से अधिक महत्वपूर्ण है

जवाब : (3) (रीट-2012, पहला स्तर)

136. दल या गैंग का सदस्य होने से समाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था में बेहतर होता है। निम्न में से कौनसा कथन इस विचार के विपरीत है?
(1) वयस्कों पर निर्भर न होकर सीखता है
(2) जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है
(3) अपने समूह के प्रति वफादार होना सीखना है
(4) छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हुए, अपने गैंग के सदस्यों से लड़ाई मोल लेता है

जवाब : (4) (रीट 2012, पहला स्तर)

137. 'एक विशेष स्तर पर बच्चे मौलिक तर्क का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं तथा सभी प्रकार के प्रश्नों का जवाब जानना चाहते हैं।' पियाजे ने इसे 'अंतर्ज्ञान' (Intuitive) कहा है। पियाजे के अनुसार, निम्न में से कौनसे चरण का यह अर्थ है?
(1) साकार संचालन (Concrete Operation)
(2) पूर्व-संचालन (Pre-operation)
(3) औपचारिक संचालन (Formal Operation)
(4) उपर्युक्त कोई भी नहीं

जवाब : (2) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

138. लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक तर्क के किस स्तर पर, बच्चे आमतौर पर मानते हैं कि लोगों को समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरना चाहिए और 'अच्छे' तरीकों से व्यवहार करना चाहिए?
(1) उत्तर-संक्रियात्मक स्तर
(2) पूर्व पारंपरिक स्तर
(3) पारंपरिक स्तर
(4) पूर्व-संक्रियात्मक स्तर

जवाब : (3) (सीटीईटी अगस्त 2023, पहला पेपर)

139. किस अवस्था में बालक के विकास की गति कुछ धीमी हो जाती है-

(1) शैशवावस्था में (2) बाल्यावस्था में
(3) किशोरावस्था में (4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (2) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

140. निम्नलिखित में से कौनसा उत्तर बाल्यावस्था (Later Childhood) का लक्षण है?

(1) हठी (2) समय की संकल्पना
(3) सामाजिक संकल्पना (4) वीर पूजा

जवाब : (3) (एचटीईटी पीआरटी-2017)

141. तीन साल का एक बच्चा कहता है कि 'सूरज क्रोधित है।' यह एक उदाहरण है :

(1) एनिमिज्म का (Animism)
(2) आत्मकेंद्रण का (Egocentrism)
(3) आलोचना का (Criticism)
(4) अंतर्ज्ञान का (Intuition)

जवाब : (1) (एचटीईटी टीजीटी गणित-2017)

एनिमिज्म या जणात्मवाद या सर्वात्मवाद (Animism) : इसके अनुसार जो वस्तुएं निर्जीव (जीवित नहीं) हैं उनमें भावनाएं व विचार होते हैं और जीवित चीजों जैसी मानसिक विशेषताएं और गुण होते हैं। पियाजे (1929) ने एनिमिज्म को बाल्यावस्था के विकास के पूर्व-संक्रियात्मक चरण (Pre-operational Stage) की विशेषता बताया है। इस अवस्था (2 से 7 वर्ष) में बच्चे सजीव व निर्जीव सभी वस्तुओं/ प्राणियों को जीवित ही मानते हैं। बच्चे अक्सर मानते हैं कि उनके खिलौने में भावनाएं हैं। लेकिन इस अवस्था के अंत में एनिमिज्म की विशेषता गायब होने लग जाती है।

142. निम्न में से कौनसा शब्द दूरदर्शिता (Farsightedness) के लिए दिया गया है?

(1) ऑप्टिक एट्रोफी (Optic Atrophy)
(2) एस्टिगमेटिज्म (Astigmatism)
(3) हाईपरोपिया (Hyperopia)
(4) रिफ्रेक्शन (Refraction)

जवाब : (3) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

दूरदर्शिता (Farsightedness) - मानव आंख में अपवर्तन की एक त्रुटि जिसके कारण प्रकाश किरणें रेटिना के पीछे केंद्रित होती हैं। दूरदर्शी व्यक्ति के पास थोड़ी दूरी पर सामान्य दृष्टि होती है लेकिन पास की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने में परेशानी होती है। इसे हाइपरोपिया के रूप में भी जाना जाता है।

143. ...... बाल्यावस्था के दौरान अपने तथा दूसरों के नजरिए में फर्क करने में अयोग्यता को दर्शाता है।

(1) केंद्रस्थ (Centricism)
(2) आत्म केंद्रस्थ (Ego Centrism)
(3) जणात्मवाद (Animism)
(4) इनमें से कोई नहीं

जवाब : (2) (एचटीईटी पीजीटी-2013; रीट-2018, दूसरा स्तर)

144. 'युवा किशोरों की यह मान्यता कि वे पूर्णतया किसी अन्य व्यक्ति से भिन्न हैं', को जाना जाता है :

(1) व्यक्तिगत मिथक (Personal Fable)
(2) काल्पनिक दर्शक (Imaginary Audience)
(3) आत्म ज्ञान (Self Realization)
(4) आत्मोद्घाटन (Self Disclosure)

जवाब : (1) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

145. निम्नांकित में से कौनसा कथन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के संदर्भ में सही नहीं है?

(1) यह इस मान्यता पर आधारित है कि विकास एक असतत प्रक्रिया है
(2) यह इस मान्यता पर आधारित है कि बच्चे सम्मिलन एवं आत्मसातीकरण द्वारा सीखते हैं
(3) यह इस मान्यता पर आधारित है कि विकास एक सतत प्रक्रिया है
(4) यह इस मान्यता पर आधारित है कि संज्ञानात्मक विकास चार चरणों में होता है

जवाब : (3) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

146. निम्नलिखित में से कौनसा कथन पियाजे के सिद्धांत के अनुसार कहा नहीं जा सकता?

(1) बच्चे अपनी दुनिया के बारे में ज्ञान का निर्माण और उपयोग करते हैं
(2) निरंतर अभ्यास से अधिगम होता है
(3) बच्चे अपने पर्यावरण पर क्रिया करते हैं
(4) विकास गुणात्मक चरणों में होता है

जवाब : (2) (सीटीईटी एमवीडी-2018, पहला पेपर)

147. निम्नलिखित में से कौनसी पूर्व-संक्रियात्मक विचार (Pre-operational Thought की एक सीमा नहीं है?

(1) प्रतीकात्मक विचार (Symbolic Thought) का विकास
(2) अहंमन्यता (Egocentrism)
(3) अनुत्क्रमणीयता (Irreversibility)
(4) ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति (Tendency to Concentrate)

जवाब : (4) (सीटीईटी एमवीडी-2018, पहला पेपर)

148. अनुभूति (Cognition) बच्चे और वातावरण के बीच अंतःक्रिया की निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से विकसित होती है। यह सिद्धांत में प्रतिबिंबित होता है :

(1) थॉर्नडाइक अधिगम सिद्धांत
(2) पियाजे संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
(3) टोलमैन संकेत अधिगम
(4) कोह्लबर्ग अधिगम सिद्धांत

जवाब : (2) (रीट-2018, पहला स्तर)

149. किशोरावस्था में एक बच्चे के उचित विकास हेतु माता-पिता तथा शिक्षक निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं :

(1) लिंग शिक्षा का उचित ज्ञान देना
(2) उचित वातावरण प्रदान करना
(3) परामर्श तथा मार्गदर्शन सेवा की व्यवस्था करना (यदि आवश्यक हो)
(4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (4) (रीट-2018, दूसरा स्तर)

150. 'विकास के इस चरण में बच्चे अपनी आंख, कान, हाथ एवं अन्य संवेदी अंगों के द्वारा चिंतन करते हैं।' यह कथन निम्नांकित में से किस संज्ञानात्मक विकास की अवस्था की सर्वोत्तम व्याख्या है?

(1) संवेदी गामक अवस्था (2) पूर्व संक्रियावस्था
(3) मूर्त संक्रियावस्था (4) औपचारिक संक्रियात्मक

जवाब : (1) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

151. किशोरों का यह महसूस करना 'सभी मेरी ओर देख रहे हैं' को संज्ञा दी जा सकती है :

(1) व्यक्तिगत मिथक (Personal Fable)
(2) काल्पनिक दर्शक (Imaginary Audience)
(3) एनोरेक्सिया नर्वोसा (Anorexia Nervosa)
(4) बुलिमिया नर्वोसा (Bulimia Nervosa)

जवाब : (2) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

152. जब आप एक शिक्षक समूह से जुड़ जाते हैं और अपने समूह के अन्य लोगों की ही तरह पोशाक धारण करने लगते हैं, तो आप प्रदर्शन कर रहे होते हैं-

(1) समूह आज्ञाकारिता का (Obedience)
(2) समूह निर्देश-अनुपालन का (Compliance)
(3) समूह की अनुरुपता का (Conformity)
(4) समूह की पहचान का (Gorup Identity)

जवाब : (3) (सीटीईटी एमवीडी-2018, दूसरा पेपर)

153. पियाजे के अनुसार, संवेदीगामक चरण के उपचरण 'मानसिक निरुपण/ प्रतिनिधित्व' (Mental Representation) की आयु है :

(1) जन्म से 1 माह (2) 4 से 8 माह
(3) 1 से 12 माह (4) 18 माह से दो वर्ष

जवाब : (4) (एचटीईटी टीजीटी गणित-2017)

154. यह जानना कि 'साइकिल कैसे चलाएं' एक उदाहरण है :

(1) प्रक्रियात्मक ज्ञान का (Procedural Knowledge)
(2) घोषणात्मक ज्ञान का (Declarative Knowledge)
(3) स्पष्ट ज्ञान का (Explicit Knowledge)
(4) कोई विकल्प सही नहीं है

जवाब : (1) (एचटीईटी टीजीटी-2018)

155. पूर्व-संक्रियात्मक काल (Pre-operational Period) में आने वाली संज्ञानात्मक योग्यता (Cognitive Ability) है :

(1) अभिकल्पनात्मक निष्कर्ष चिंतन (Hypothetico-deductive thinking)
(2) अमूर्त चिंतन की योग्यता (Ability for Abstract Thinking)
(3) लक्ष्य-उद्दिष्ट व्यवहार की योग्यता (Ability of Goal-directed Behaviour)
(4) दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की योग्यता (Ability to Take Other's Perspective)

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2016, दूसरा पेपर)

156. 'खिलौनों की आयु' (Toy-age) कहा जाता है-

(1) पूर्व बाल्यावस्था (Early Childhood) को
(2) उत्तर बाल्यावस्था (Late Childhood) को
(3) शैशवावस्था (Babyhood) को
(4) उपर्युक्त सभी

जवाब : (1) (राजस्थान टेट-2011)

विकासात्मक मनोविज्ञान में, बाल्यावस्था को टोडलरहुड (चलना सीखने तक), प्रारंभिक बाल्यावस्था (खेलने की उम्र लगभग 3 से 6 वर्ष), मध्य बचपन (स्कूल की उम्र) और किशोरावस्था (यौवन के बाद की युवावस्था) के विकास के चरणों में विभाजित किया गया है। सामान्यतः प्रारंभिक बाल्यावस्था (Early Childhood) को खिलौना आयु (Toy Age) कहा जाता है। जबकि टोडलरहुड तीन साल की उम्र के आसपास समाप्त हो जाता है जब बच्चा बुनियादी जरूरतों के लिए माता-पिता की सहायता पर कम निर्भर हो जाता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था लगभग 3 से 6 साल की उम्र तक जारी रहती है।

एरिक एरिक्सन ने बाल्यावस्था को चार चरणों में विभाजित किया है। इसमें तीसरे चरण को खेलने की उम्र (Play Age) (3 से 5 वर्ष), पूर्व-विद्यालय आयु (Pre-school Age), खोजपूर्ण आयु (Exploratory Age) और खिलौना आयु (Toy Age) कहा जाता है।

157. निम्नलिखित में से कौनसी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?

(1) दल/समूह में रहने की अवस्था (Pre-gang Age)
(2) अनुकरण करने की अवस्था (Imitative Age)
(3) प्रश्न करने की अवस्था (Questioning Age)
(4) खेलने की अवस्था (Play Age)

जवाब : (1) (राजस्थान टेट-2011)

158. उत्तर बाल्यावस्था (Late Childhood Period) में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व (Physical) में परिवर्तन समझने लगते हैं?

(1) द्रव्यमान (Mass) (2) द्रव्यमान और संख्या
(3) संख्या (Number) (4) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

जवाब : (4) (राजस्थान टेट-2011)

159. शैशवावस्था में समाजीकरण की ...... संस्थाएं प्रमुख रूप से महत्वपूर्ण हैं, जबकि प्रारंभिक बाल्यावस्था में ..... संस्थाएं समाजीकरण में महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

(1) तृतीयक; माध्यमिक (2) प्राथमिक; माध्यमिक
(3) माध्यमिक; प्राथमिक (4) माध्यमिक; तृतीयक

जवाब : (2) (सीटीईटी अगस्त 2023, पहला पेपर)

160. अध्यापिका ने ध्यान दिया कि पुष्पा अपने-आप किसी एक समस्या का समाधान नहीं कर सकती है। फिर भी वह एक वयस्क या साथी के मार्गदर्शन की उपस्थिति में ऐसा करती है। इस मार्गदर्शन को कहते हैं :

(1) पूर्व-क्रियात्मक चिंतन (Pre-operational Thinking)
(2) समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD)
(3) सहारा देना (Scaffolding)
(4) पार्श्वकरण (Lateralization)

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, पहला पेपर)

161. एक वर्ष तक के शिशु जब आंख, कान व हाथों से 'सोचते' हैं, तो निम्नलिखित में से कौनसा स्तर शामिल होता है?

(1) अमूर्त संक्रियात्मक स्तर (2) मूर्त संक्रियात्मक स्तर
(3) पूर्व-संक्रियात्मक स्तर (4) इंद्रियजनित गामक स्तर

जवाब : (4) (सीटीईटी -2014)

162. पियाजे अनुमोदन करते हैं कि पूर्व-संक्रियात्मक बच्चे याद रखने में असमर्थ होते हैं। निम्नलिखित कारकों में से किसको उन्होंने इस असमर्थता के लिए जिम्मेदार ठहराया है?

(1) परिकल्पित-निगमनात्मक तार्किकता की अयोग्यता
(2) व्यक्तिगत कल्पित कथा (Personal Fable)
(3) विचार की अनुत्क्रमणीयता (पलट न सके)
(4) उच्च-स्तर की अमूर्त (Abstract) तार्किकता की कमी

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

163. पियाजे के सिद्धांत के अनुसार, बच्चे निम्न में से किसके द्वारा सीखते हैं?

(1) सही प्रकार से ध्यान लगाकर जानकारी को याद करना
(2) समाज के अधिक योग्य सदस्यों द्वारा उपलब्ध कराए गए सहारे के आधार पर
(3) अनुकूलन की प्रक्रियाएं (Processes of Adaption)
(4) उपयुक्त पुरस्कार दिए जाने पर अपने व्यवहार में परिवर्तन करना

जवाब : (3) (सीटीईटी फरवरी-2015, दूसरा पेपर)

164. पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है?

(1) मूर्त संक्रियात्मक चरण (2) संवेदी-प्रेरक चरण
(3) औपचारिक संक्रियात्मक चरण
(4) पूर्व-संक्रियात्मक चरण

जवाब : (2) (सीटीईटी एमवीडी-2018, दूसरा पेपर, सीटीईटी 2012)

संवेदी-पेशीय अवस्था (Sensorimotor Stage) बालक में जन्म से लेकर लगभग 2 वर्ष तक की अवधि में होती है। इस अवस्था की सबसे बड़ी उपलब्धि बालक में ***वस्तु स्थायित्व (Object Permanence)*** *का संज्ञान होना है। इसके द्वारा बालक यह जान पाता है कि घटनाएं एवं वस्तुएं तब भी उपस्थित रहती हैं जब वे हमारे सामने (देखी, सुनी या महसूस) नहीं होती हैं। यह विशेषता बालक में 21 से 24 महिने की आयु में प्रदर्शित होने लगती है।*

165. छिपी हुईं वस्तुएं ढूंढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु अग्रलिखित में से किस संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है?

(1) प्रयोग करना (2) साभिप्राय व्यवहार
(3) वस्तु-स्थायित्व (4) समस्या-समाधान

जवाब : (3) (सीटीईटी 2014, छत्तीसगढ टेट 2019, दूसरा पेपर)

166. निम्नलिखित में से कौनसा निहितार्थ पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत से नहीं निकाला जा सकता?

(1) बच्चों की अधिगमनात्मक तत्परता के प्रति संवेदनशीलता
(2) वैयक्तिक भेदों की स्वीकृति
(3) खोजपूर्ण अधिगम
(4) शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता

जवाब : (4) (सीटीईटी 2014)

167. संज्ञात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद-

(1) अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं
(2) आगमनात्मक तार्किकता के अनुप्रयोग पर आधारित हैं
(3) पाठ्यसामग्री के सुव्यवस्थित संगठन पर बल देते हैं
(4) कुशलता की प्राप्ति हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल देते हैं

जवाब : (1) (सीटीईटी 2014)

168. पियाजे के विकास की अवस्थाओं में संवेदी गामक अवस्था समायोजित करता है-

(1) अनुकरण, स्मृति एवं मानसिक प्रस्तुतीकरण
(2) विकल्पों की व्याख्या एवं विश्लेषण करने की क्षमता
(3) तार्किक रूप से समस्या के समाधान की क्षमता
(4) सामाजिक मुद्दों से सरोकार

जवाब : (1) (छत्तीसगढ़ शिक्षक पात्रता परीक्षा-2014)

169. वह कौनसा स्थान है जहां बच्चे के 'संज्ञानात्मक विकास' (Cognitive Development) को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है?

(1) सभागार (2) घर
(3) खेल का मैदान (4) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण

जवाब : (4) (सीटीईटी -2011, उत्तर प्रदेश भाषा टेट-2013)

170. लॉरेंस कोहलबर्ग के सिद्धांत की आलोचना कैरल गिलिंगन द्वारा-

(1) नैतिक तर्क में लैंगिक भिन्नताओं की उपेक्षा करने के लिए की गई है।
(2) विश्लेषण के मात्रात्मक तरीकों को लागू नहीं करने के लिए की गई है।

(3) नैतिक विकास का एक चरण सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए की गई है।
(4) वास्तविक जीवन की स्थितियों के माध्यम से तथ्यों को एकत्र करने के लिए की गई है।

जवाब : (1) (सीटीईटी अगस्त 2023, दूसरा पेपर)

171. निम्नलिखित में कौनसी संज्ञानात्मक क्रिया दी गई सूचना के विश्लेषण के लिए प्रयोग में लाई जाती है?
(1) पहचान करना (2) अंतर करना
(3) वर्गीकृत करना (4) वर्णन करना

जवाब : (2) (सीटीईटी , 2013)

172. भाई-बहन के रिश्ते / रिश्तों -
(1) माता-पिता और साथियों के साथ संबंधों से भिन्न होते हैं और बाल्यावस्था में समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(2) माता-पिता और साथियों के साथ संबंधों के समान हैं और बाल्यावस्था में समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
(3) केवल प्रारंभिक बाल्यावस्था में ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
(4) की समाजीकरण में अधिक भूमिका नहीं है।

जवाब : (1) (सीटीईटी अगस्त 2023, दूसरा पेपर)

173. पियाज़े के अनुसार, गुणात्मक रुप से चार विभिन्न अवस्थाएं-
(1) दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों में व्यापक रुप से भिन्न होती है।
(2) उदाहरण देकर समझाती है कि बच्चों का मन लघु वयस्क मन होता है।
(3) बच्चों के जेनेटिक कोड पर निर्भर होती हैं।
(4) बच्चों के विकास के सार्वभौमिक पैटर्नों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जवाब : (4) (सीटीईटी अगस्त 2023, दूसरा पेपर)

174. करनैल सिंह कानूनी कार्यवाही तथा खर्चे के बावजूद आयकर नहीं देते। वे सोचते हैं कि एक भ्रष्ट सरकार को समर्थन नहीं दे सकते जो अनावश्यक बांधों के निर्माण पर लाखों रुपए खर्च करती है। वे संभवतः कोह्लबर्ग के नैतिक विकास की किस अवस्था में हैं?
(1) पूर्व परंपरागत (Pre Conventional)
(2) परा-परंपरागत (Para Conventional)
(3) परंपरागत (Conventional)
(4) पश्च-परंपरागत (Post Conventional)

जवाब : (4) (सीटीईटी 2013)

175. कोहलबर्ग के नैतिक विकास की किस अवस्था में बच्चों का तर्क कानून की नैतिकता के इर्द-गिर्द घूमता है?
(1) स्वायत्त नैतिकता (2) पूर्व-पारंपरिक नैतिकता
(3) पारंपरिक नैतिकता (4) विषम नैतिकता

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी 2024, दूसरा पेपर)

176. निम्नलिखित में से कौनसा एक सही मिलान वाला जोड़ा है?
(1) औपचारिक संक्रियात्मक बच्चा-अनुकरण प्रारंभ, कल्पनापरक खेल
(2) शैशवावस्था-तर्क का अनुप्रयोग और अनुमान लगाने में सक्षम
(3) पूर्वसंक्रियात्मक बच्चा-निगमनात्मक विचार
(4) मूर्त संक्रियात्मक बच्चा-संधारण एवं वर्गीकरण करने योग्य

जवाब : (4) (सीटीईटी फरवरी 2016, पहला पेपर)

177. एक बच्ची कहती है, 'धूप में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं।' वह .... की समझ को प्रदर्शित कर रही है।
(1) अहंकेंद्रित चिंतन (Egocentric Thinking)
(2) कार्य-कारण (Cause and Effect)
(3) विपर्यय चिंतन (Reversible Thinking)
(4) प्रतीकात्मक विचार (Symbolic Thought)

जवाब : (2) (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

178. पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिंतन वयस्कों से .... में भिन्न होता है बजाय .... के।
(1) आकार; मूर्तपरकता (Size; Correctness)
(2) प्रकार; मात्रा (Kind; Amount)
(3) आकार; किस्म (Size; Type)
(4) मात्रा; प्रकार (Amount; Type)

जवाब : (2) (सीटीईटी फरवरी-2016, पहला पेपर)

179. पियाजे द्वारा प्रस्तुत संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, अध्यापक को कक्षा में मामूली सी भूमिका निभानी होती है।
(1) हां, क्योंकि पियाजे द्वारा सुझाए गए विकास के मार्ग पर चलते हुए बच्चा स्वयं ही संज्ञानात्मक रूप से विकसित होगा
(2) नहीं, क्योंकि शिक्षक बच्चों की सक्रिय खोजों में सहायता करता है और सुविधा प्रदान करता है
(3) नहीं, क्योंकि शिक्षक को प्रशासकीय कर्तव्य भी पूरे करने होते हैं
(4) हां, क्योंकि बच्चा दुनिया के बारे में अपने ही विचारों की संरचना करता है

जवाब : (4) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

180. कोई बच्चा किसी स्थिति के एक पहलू पर ध्यान केंद्रित करता है और दूसरे की पूर्ण अवहेलना करता है, इसका कारण है :
(1) आत्मकेंद्रित व्यवहार (Egocentric Behaviour)
(2) अनुकरण की अक्षमता (Inability to Imitate)
(3) प्रतीकात्मक (Symbolic) विचार पर फोकस
(4) एकाग्रता (Concentration)

जवाब : (4) (सीटीईटी मई-2016, दूसरा पेपर)

181. जीन पियाजे अनुसार, अधिगम के लिए निम्नलिखित में से क्या आवश्यक है?

(1) ईश्वरीय न्याय पर विश्वास
(2) शिक्षकों और माता-पिता द्वारा पुनर्बलन
(3) शिक्षार्थी के द्वारा पर्यावरण की सक्रिय खोजबीन
(4) वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन

जवाब : (3) (सीटीईटी सितंबर-2016, पहला पेपर)

182. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों में से सही कथन कौनसा है?

(1) पियाजे का तर्क है कि संज्ञानात्मक विकास, चरणों में आगे बढ़ने की अपेक्षा निरंतर होता है
(2) पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के पांच स्पष्ट चरण प्रस्तावित किए हैं
(3) किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये चरण स्थिर हैं
(4) बच्चों के सांस्कृतिक आधार के अनुसार इन चरणों का क्रम बदला जा सकता है

जवाब : (3) (सीटीईटी सितंबर-2016, दूसरा पेपर)

183. जीन पियाजे द्वारा प्रस्तुत 'संरक्षण' (Conservation) के प्रत्यय से तात्पर्य है कि :

(1) वन्यजीवन और वनों का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है
(2) कुछ भौतिक गुणधर्म वही रहते हैं चाहे बाहरी आकृतियां बदल जाएं
(3) परिकल्पना पर विधिवत् परीक्षण से सही निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है
(4) दूसरों के परिदृश्य को ध्यान में रखना एक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता है

जवाब : (2) (सीटीईटी सितंबर-2016, दूसरा पेपर)

184. निम्नलिखित में से कौनसे तत्व अधिगम को प्रभावित करते हैं?

A. शिक्षार्थी का उत्प्रेरण (Motivation of Learner)
B. शिक्षार्थी की परिपक्वता (Maturation)
C. शिक्षण युक्तियां (Teaching Strategies)
D. शिक्षार्थी का शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य

(1) A, B, C और D (2) A केवल B
(3) A और C (4) A, B और C

जवाब : (1) (सीटीईटी सितंबर-2016, दूसरा पेपर)

185. वयः संधि काल में (During Puberty) निम्न में से कौन बाह्य अभिव्यक्ति (Outward Expression) नहीं है?

(1) प्रभुता/सत्ता के विपरीत विरोध
(2) अशांति
(3) आत्मनिर्भरता के प्रति आग्रही
(4) सक्रिय खेलों के स्थान बैठे रहकर खेलना अधिक पसंद

जवाब : (4) (रीट-2012, दूसरा स्तर)

186. निम्न में से कौनसा कथन मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के विकास से सहमति नहीं रखता?

(1) सामाजिक व्यवहार उत्तरोत्तर समवयस्क समूह के आदर्शों से प्रभावित होता है
(2) इस अवस्था में अधिकांश बालक तीव्र गति से वृद्धि प्राप्त नहीं करते
(3) बौद्धिक एवं सामाजिक व्यवहार पर स्व-प्रभाविता का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है
(4) अधिकांश विद्यार्थी विशेष रूप से स्वकेंद्रित हो जाते हैं

जवाब : (1) (रीट-2012, दूसरा स्तर)

187. निम्न में से कौनसी बाद की बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास की विशेषता नहीं है?

(1) भविष्य की योजना की सूझबूझ
(2) विज्ञान की काल्पनिक कथाओं में अधिक रुचि
(3) बढ़ती हुई तार्किक शक्ति
(4) काल्पनिक भयों का अंत

जवाब : (1) (यूपी टेट-2018, पहला पेपर)

188. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत की कैरोल गिलिगन की आलोचना का केंद्रीय तर्क है-

(1) स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ
(2) देखभाल की नैतिकता और नारीवादी दृष्टिकोण
(3) बच्चों की नैतिक क्षमताओं को अधिक आंकना
(4) बच्चों के अध्ययन में प्रायोगिक शोध प्रणाली का उपयोग।

जवाब : (2) (सीटीईटी जनवरी 2024, दूसरा पेपर)

189. फ्रायड के मनोलैंगिक विकास के सिद्धांत की 'लैंगिक अवस्था' का आयु-विस्तार, एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास की निम्नांकित में से किस अवस्था के समतुल्य है?

(1) विश्वास बनाम अविश्वास
(2) स्वायत्तता बनाम शर्म एवं संदेह
(3) पहल बनाम अपराध बोध
(4) पहचान बनाम भूमिका भ्रम (Role Confusion)

जवाब : (3) (एचटीईटी पीजीटी-2018)

190. एक शिक्षिका दो एक समान गिलासों को प्रदर्शित करती हैं जो जूस की समान मात्रा में भरे हुए हैं। वे उन्हें दो भिन्न गिलासों में खाली करती हैं जिनमें से एक लंबा है और दूसरा चौड़ा है। वे बच्चों को उस गिलास की पहचान करने के लिए कहती हैं जिसमें जूस ज्यादा है। बच्चे प्रत्युत्तर देते हैं कि लंबे गिलास में जूस ज्यादा है। शिक्षिका के बच्चों को .... कठिनाई है?

(1) विकेंद्रीकरण (2) पलटावी (Reversibility)
(3) समायोजन (4) अहंकेंद्रिता

जवाब : (1) (सीटीईटी-2013)

191. जीन पियाजे के अनुसार बच्चे अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में?

(1) संरक्षण वर्गीकरण व श्रेणीबद्धता करने में सक्षम नही है
(2) प्रतीकात्मक और सांकेतिक खेलों में भाग लेना प्रारभ करते है
(3) परिकल्पिक निगमनात्मक तर्क और प्रतिज्ञप्ति चिंतन करने में समर्थ है
(4) केंद्रीकरण और अनुत्क्रमणीय सोच से आबद्ध हैं

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी-2021, दूसरा पेपर)

192. लॉरेंस कोह्लबर्ग की नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति किस अवस्था में है जब वह विश्वास करता है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली को सक्रियतापूर्वक बनाए रखने से धनात्मक मानवीय संबंध और सामाजिक वर्ग सुरक्षित रहता है?

(1) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास
(2) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(3) दंड और आज्ञापालन अभिविन्यास
(4) सामाजिक-क्रम व्यवस्था अभिविन्यास

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी-2021, दूसरा पेपर)

193. विकास के विषय में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) विकास सुरूचिपूर्ण, सुव्यवस्थित समूह की अवस्थाओं में पूर्वनिश्चित आनुर्वशिक घटकों के कारण होता है।
(2) विकास एक सरल और एक-दिशीय प्रक्रिया है
(3) बच्चों के विकास में बहुत सी सांस्कृतिक विविधताएं होती हैं
(4) संसार में सभी बच्चों का विकास एक ही क्रम और सुनिश्चित समय से होता है

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी-2021, दूसरा पेपर)

194. निम्नलिखित में से मध्य बाल्यावस्था की अवधि का मुख्य प्रमाण चिह्न कौनसा है?

(1) पेशीय कौशल और समग्र शारीरिक वृद्धि का तेजी से विकास
(2) वैज्ञानिक तर्क और अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता का विकास
(3) प्रतीकात्मक खेल का उभरना
(4) तर्कसंगत विचारों का विकास जो कि प्राकृतिक रूप से मूर्त हैं

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी-2021, दूसरा पेपर)

195. जन्म से किशोरावस्था तक बच्चों में विकास किस क्रम में होता है?

(1) मूर्त, अमूर्त, सांवेदिक (2) अमूर्त, मूर्त, सांवेदिक
(3) सांवेदिक, मूर्त, अमूर्त (4) अमूर्त, सांवेदिक, मूर्त

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी-2021, पहला पेपर)

196. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में, पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में विकास का मुख्य गुण क्या होता है?

(1) परिकल्पित-निगमनात्मक सोच
(2) संरक्षण और पदार्थों को क्रमबद्ध करने की क्षमता
(3) अमूर्त सोच का विकास
(4) विचार/ सोच में केंद्रीकरण

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी-2021, पहला पेपर)

197. विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

(1) विकास केवल बाल्यावस्था के दौरान ही होता है।
(2) विकास बहुआयामी होता है।
(3) विकास की दर, सभी संस्कृतियों में सभी के लिए समान होती है।
(4) विकास केवल विद्यालय में होने वाले अधिगम से ही होता है।

जवाब : (2) (सीटीईटी जनवरी-2021, पहला पेपर)

198. बच्चों के समाजीकरण के संदर्भ में निम्न में से कौन सा कथन सही है?

(1) समकक्षी समाजीकरण के प्राथमिक कारक है और परिवार समाजीकरण का एक द्वितीयक कारक है
(2) परिवार एवं जन संचार दोनों समाजीकरण के द्वितीयक कारक है
(3) विद्यालय समाजीकरण का एक द्वितीयक कारक है और परिवार समाजीकरण का एक प्राथमिक कारक है
(4) विद्यालय समाजीकरण का एक प्राथमिक कारक है और समकक्षी समाजीकरण के द्वितीयक कारक है

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी-2021, पहला पेपर)

199. 'दृष्टि से हटने के बाद मस्तिष्क से हट जाना' (Out of Sight out of mind) किसकी उपयुक्त व्याख्या है?

(1) आरंभिक संवेदी गामक अवस्था
(2) आरंभिक पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(3) आरंभिक किशोरावस्था
(4) किशोरावस्था

जवाब : (1) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

200. निम्नलिखित में से कौन सा समाजीकरण की प्रक्रिया की विशेषताएं हैं?

(अ) यह एक रेखीय प्रक्रिया है।
(ब) यह एक जटिल प्रक्रिया है।
(स) यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है।
(द) यह विभिन्न संस्कृतियों में विशिष्ट रूप से होती है।

(1) (अ), (ब), (स), (द) (2) (अ), (ब)
(3) (ब), (स) (4) (ब), (स), (द)

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी 2024, दूसरा पेपर)

201. यह तथ्य कि 'मछली उड़ नहीं सकती और उल्लू तैरना नहीं सीख सकते' का निहितार्थ है?

(1) उपयुक्त पुनर्बलन की कमी
(2) उनके अनुभव की कमी
(3) इन जीवों की सुस्ती
(4) अधिगम पर जैविक सीमाओं का प्रभाव

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

202. निम्नलिखित में से किसने सर्वप्रथम नैतिक विकास का सिद्धान्त दिया था?

(1) पियाजे (2) कोह्लबर्ग
(3) गिलिगन (4) कोई विकल्प सही नहीं है

जवाब : (1) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

पियाजे ने 1932 में, कोह्लबर्ग ने 1965 में और केरोल गिलिगन ने 1970 में नैतिक विकास का सिद्धान्त दिया था।

203. कोई विद्यार्थी विद्यालय में कितना अभिप्रेरित है यह जानने के लिए आप किस तकनीक का सरलता से प्रयोग कर सकते हैं:

(1) अवलोकन विधि (2) प्रक्षेपीय विधि
(3) प्रश्नावली विधि (4) व्यक्तिवृत विधि

जवाब : (1) (उत्तराखंड टेट 2022, पहला पेपर)

204. निर्म्नांकित में से किसका अध्ययन मनोविज्ञान एवं शिक्षण शास्त्र के प्रतिच्छेद बिन्दु पर स्थित है?

(1) सकारात्मक मनोविज्ञान (2) औद्योगिक मनोविज्ञान
(3) संगठनात्मक मनोविज्ञान (4) शिक्षा मनोविज्ञान

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीआरटी)

205. निम्नलिखित में से कौनसी उन्मुखता (Orientation) कोह्लबर्ग के द्वारा दिए गए नैतिक विकास सिद्धान्त के उत्तर रुढ़िगत स्तर के अन्तर्गत आती है?

(1) दण्ड एवं आज्ञाकारिता
(2) सामाजिक अनुबंध
(3) उत्तम लड़का/ अच्छी लड़की
(4) कानून और सामाजिक व्यवस्था

जवाब : (2) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

206. निम्नलिखित में से कौन-सी विकास की सही विशेषता नहीं है?

(1) विकास में परिवर्तन होता है
(2) प्रारंभिक विकास परवर्ती विकास से अधिक महत्वपूर्ण होता है
(3) विकासात्मक पैटर्न अपूर्वानुमय (Unpredictable) होते हैं
(4) विकास में वैयक्तिक भिन्नता होती है

जवाब : (3) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

207. निम्नलिखित में से कौनसी किशोरावस्था की सही विशेषता नहीं है?

(1) किशोरावस्था बाल्यावस्था और वयस्कावस्था के बीच की परिवर्ती अवस्था है।
(2) किशोरावस्था में एक अस्पष्ट वैयक्तिक स्थिति होती है।
(3) किशोरावस्था वयस्कावस्था की दहलीज होती है।
(4) किशोरावस्था वास्तविकताओं का समय होता है।

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

208. निम्नलिखित में से कौनसी शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन की मनोभौतिकी विधि (Psychophysical method) नहीं है?

(1) न्यूनतम परिवर्तन की विधि अथवा सीमा की विधि
(2) स्थिर उद्दीपक की विधि
(3) औसत अथवा माध्य त्रुटि
(4) व्यक्तिगत अभिवृत्ति में परिमार्जन

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, पीजीटी)

209. विकास की कौन-सी अवस्था में समान लिंगियों के साथ रूचि/मित्रता विकसित होती है?

(1) 12 से 14 वर्ष (2) 15 से 18 वर्ष
(3) 10 से 12 वर्ष (4) 19 से 21 वर्ष

जवाब : (3) (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

210. जीन पियाजे के अनुसार नैतिक विकास अवस्था 'परायत्तता अन्योन्यता' (Heteronomy reciprocity) का आयु समूह क्या है?

(1) 0 से 5 वर्ष (2) 13 से 18 वर्ष
(3) 5 से 8 वर्ष (4) 11 से 13 वर्ष

जवाब : (*) (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

पियाजे के अनुसार नैतिक विकास की परायत्तता/ हेटरोनॉमी अवस्था (Heteronomy stage) 5 से 13 साल तक होती है। इसे दो भागों में विभाजित किया गया है-

1. परायत्तता-अधिकारिता/ प्राधिकरण (Heteronomy-authority) *: यह स्टेज 5 से 8 साल तक मानी गई है। इस स्तर पर नैतिक विकास को बाहरी प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित किया जाता है। पुरस्कार और सजा नैतिक विकास को नियंत्रित करते हैं।*

2. परायत्तता- अन्योन्यता/पारस्परिकता (Heteronomy-reciprocity) *: यह 9 से 13 साल तक होती है। इस स्तर पर सहकर्मियों या समकक्षों के साथ सहयोग की नैतिकता है। इस चरण को पारस्परिकता द्वारा नियंत्रित किया जाता है अर्थात हमें दूसरों के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए अपमानजनक होगा।*

211. निम्नलिखित में से कौनसा 'विकास' का सही सिद्धान्त नहीं है?

(1) सांतत्य का सिद्धान्त
(2) वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त
(3) पैटर्न की एकरूपता का सिद्धान्त
(4) विशिष्ट से सामान्य प्रतिक्रियाओं की कार्यवाही का सिद्धान्त

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

212. निम्नलिखित में से कौनसा मनोवैज्ञानिक 'आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान' विचारधारा का समर्थक नहीं है?

(1) प्लेटो (2) अरस्तू
(3) डेकार्टे (4) वुण्ट

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

213. बालक के शरीर में होने वाले लैंगिक परिवर्तन, विकास की कौनसी अवस्था में दिखाई देना प्रारम्भ हो जाते हैं?

(1) पूर्व किशोरावस्था (2) पश्च किशोरावस्था
(3) वयस्कावस्था (4) वयः संधि काल

जवाब : (4) (एचटीईटी जनवरी-2021, टीजीटी)

214. रिया कक्षा पिकनिक तय करने हेतु ऋषभ से सहमत नहीं है। वह सोचती है कि बहुमत के अनुकूल बनाने के लिए

नियमों का संशोधन किया जा सकता है। यह सहपाठी विरोध, पियाजे के अनुसार निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?

(1) सहयोग की नैतिकता (2) विषमांग नैतिकता

(3) संज्ञानात्मक अपरिपक्वता (4) प्रतिक्रिया

जवाब : (1) (सीटीईटी-2014)

215. निम्नलिखित में से कौनसी प्रक्रिया बाल्यावस्था के दौरान सीखने से संबंधित नहीं है-

(1) पूर्व अनुभव (2) प्रतिबिंबन

(3) कल्पना (4) तर्क

जवाब : (4) (रीट 2021, पहला स्तर)

216. एक बालक सामाजिक रूप से पूर्णतया विकसित माना जाएगा, यदि वह है-

(1) अपने परिवार के सदस्यों के साथ स्वस्थ संबंध नहीं रखता/रखती

(2) अपने साथियों के बीच लोकप्रिय नहीं है

(3) समाज में विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए जानता/ जानती हो

(4) वह अपना अधिकांश समय कंप्यूटर के साथ व्यतीत करता/करती है।

जवाब : (3) (रीट अलवर, 2021, दूसरा स्तर)

217. मानसिक विकास का संबंध नहीं है

(1) स्मृति का विकास से

(2) तर्क व निर्णय से

(3) अवबोध की क्षमता से

(4) शिक्षार्थी के वजन एवं ऊंचाई से

जवाब : (4) (रीट अलवर, 2021, दूसरा स्तर)

218. जीन पियाजे के अनुसार चिन्हों के लिए चिन्हों का प्रयोग करने की क्षमता जैसे कि अक्षर ङ्ग को अज्ञात अंक से मानने की क्षमता ...... के दौरान विकसित होती है और विद्यार्थियों को ...... सीखने में सक्षम बनाती है।

(1) औपचारिक संक्रियावस्था; संरक्षण और क्रमबद्धता

(2) मूर्त संक्रियावस्था; बीजगणित और गणना

(3) मूर्त संक्रियावस्था; संरक्षण और क्रमबद्धता

(4) औपचारिक संक्रियावस्था; बीजगणित और गणना

जवाब : (3) (सीटीईटी जनवरी 2024, दूसरा पेपर)

219. सामाजिक विकास अनिवार्य रूप से एक विषय है-

(1) सामाजिक व्यवस्था की मांगों का अनुपालन

(2) सामाजिक व्यवस्था के उद्देश्यों के साथ स्वयं के उद्देश्यों का एकीकरण

(3) सामाजिक सुरक्षा एवं स्वीता की उपलब्धि/प्राप्ति

(4) सामाजिक वृत्त का विकास

जवाब : (2) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

220. वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं-

(1) आनुवांशिकता

(2) भौतिक दशाएं

(3) सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाएं

(4) उपरोक्त सभी

जवाब : (4) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

221. मिट्टी से खिलौने बनाने के दौरान एक बालिका को अपने कौन से कौशलों को विकास करने का अवसर मिलेगा-

(1) स्थूल गत्यात्मक कौशल

(2) सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल

(3) सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल

(4) उपरोक्त सभी

जवाब : (4) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

222. 'मूर्त परिस्थितियों के माध्यम से समझने लग जाना निम्नलिखित में से किस अवस्था से संबंधित है-

(1) बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

(2) बाल्यावस्था में बौद्धिक विकास

(3) किशोरावस्था में सांवेगिक विकास

(4) किशोरावस्था में बौद्धिक विकास

जवाब : (2) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

223. कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित में से कौनसी अवस्था बालकों के नैतिक विकास की अवस्था नहीं है-

(1) कानून एवं व्यवस्था अभिविन्यास

(2) स्वकेन्द्रित समाज केंद्रित अभिमुखता

(3) सामाजिक अनुबंध अभिमुखता

(4) दंड तथा आज्ञापालन अभिमुखता

जवाब : (2) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

224. समाजीकरण की प्रकृति क्या है?

(1) अचेतन प्रक्रिया

(2) कभी - कभी होने वाली प्रक्रिया

(3) अंतः क्रियात्मक प्रक्रिया

(4) उपरोक्त में से कोई नही

जवाब : (3) (छत्तीसगढ टेट 2022, पहला पेपर)

225. शारीरिक विकास का सम्बन्ध नहीं होता है-

(1) शरीर के भार से (2) बुद्धि से

(3) कंकाल तन्त्र से (4) मांसपेशियों की वृद्धि से

जवाब : (2) (छत्तीसगढ टेट 2022, दूसरा पेपर)

226. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल हैं

(1) मूल्य और विश्वासों का अर्जन

(2) एक संस्कृति की रीतियों और मानदंडों को सीखना

(3) समाज के मानदंडों का अनुकूलन

(4) उपरोक्त सभी

जवाब : (4) (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)

227. विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन सा कथन सत्य नहीं है?

(1) विकास की प्रत्येक अवस्था में अपने खतरे हैं।

(2) विकास उकसाने या बढ़ावा देने से नहीं होता है।
(3) विकास सांस्कृतिक परिवर्तन से प्रभावित होता है।
(4) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएं होती हैं।

जवाब : (2) (एचपी टेट नवंबर 2020, कला पेपर)

228. बालक में मानसिक मंदन की वजह यह हो सकती है
(1) गर्भाधान के समय क्रियाशील कारण
(2) माता के गर्भ में क्रियाशील कारण
(3) जन्म के बाद किसी दुर्घटना के फलस्वरुप
(4) उपरोक्त सभी

जवाब : (4) (छत्तीसगढ टेट 2019, पहला पेपर)

229. मानसिक विकास के पक्ष हैं
(1) संवेग (2) बुद्धि
(3) भाषा (4) उपरोक्त सभी

जवाब : (4) (छत्तीसगढ टेट 2019, पहला पेपर)

230. निम्नलिखित में से कौनसा बालक के विकास पर प्रभाव डालता है-
(1) समाज (2) परिवार
(3) विद्यालय (4) इनमें से सभी

जवाब : (4) (छत्तीसगढ टेट 2022, दूसरा पेपर)

231. पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में, बच्चों में के रूप में ज्ञात किसी वस्तु या किसी समस्या या घटना के पहलू की केवल एक विशेषता पर ध्यान केंद्रित करने की प्रबल प्रवृत्ति होती है।
(1) अवधारणात्मक केंद्र (2) अपरिवर्तनीयता
(3) संरक्षण की समस्या (4) अहंकेंद्रवाद

जवाब : (1) (तमिलनाडु टेट, 2019 पहला पेपर)

232. एक बच्चा कूदना सीखने से पहले चलना और उछलना सीखता है। यह विकास के किस सिद्धांत को दर्शाता है?
(1) विकास के सभी आयाम पारस्परिक रुप से संबंधित नहीं हैं।
(2) विकास पूर्व अनुमानित प्रतिमानों का अनुसरण करता है।
(3) विकास की प्रकृति सततगामी नहीं है।
(4) परिपक्वता और अनुभव दोनों विकास को प्रभावित करते हैं।

जवाब : (2) (सीटीईटी दिसम्बर-2021, पहला पेपर)

233. मनोविज्ञान की वह शाखा है जो विश्व के बारे में जानने, धारणा बनाने, अधिगम और चिंतन करने की प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है।
(1) स्वास्थ्य मनोविज्ञान (2) प्रायोगिक मनोविज्ञान
(3) शैक्षणिक मनोविज्ञान (4) विकासात्मक मनोविज्ञान

जवाब : (2) (DSSSB TGT Social Studies, 2018)

234. पियाजे के अनुसार किस अवस्था में एक बच्चा शब्दावली अर्जित करना शुरू कर देता है?
(1) संवेदीपेशीय अवस्था में
(2) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में
(3) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में
(4) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था में

जवाब : (2) (एचपी टेट नोन-मेडिकल जून, 2023)

235. निम्नांकित में से किसका अध्ययन मनोविज्ञान एवं बाल विकास के प्रतिच्छेद बिन्दु पर स्थित है?
(1) सामाजिक मनोविज्ञान
(2) औद्योगिक मनोविज्ञान
(3) संगठनात्मक मनोविज्ञान
(4) विकासात्मक मनोविज्ञान

जवाब : (4) (एचटीईटी पीआरटी, 2022)

236. बच्चों के विकास का क्रम-
(1) अमूर्त से मूर्त की ओर होता है।
(2) सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।
(3) पैरों से सिर की ओर होता है।
(4) हाथ-पैर से केंद्र की ओर होता है।

जवाब : (2) (सीटीईटी जनवरी-2022, पहला पेपर)

237. कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार किस स्तर पर बच्चे आत्मकेन्द्रित होते है और किसी कार्य को करने में अपना ही लाभ देखते हैं?
(1) पहले स्तर के पहले चरण में
(2) पहले स्तर के दूसरे चरण में
(3) दूसरे स्तर के तीसरे चरण में
(4) तीसरे स्तर के पांचवें चरण में

जवाब : (2) (सीटीईटी जनवरी 2024, पहला पेपर)

238. समीपस्थ (Pro»imodstal) सिद्धांत कहता है कि शैशवावस्था में-
(1) अंग- हाथों व पैरों की तुलना में तेजी से बढ़ते रहते हैं।
(2) विकास सिर से पांव तक होता है।
(3) भाषा का विकास तेजी से होता है क्योंकि वह विकास के लिए संवेदनशील अवधि है।
(4) सूक्ष्म गतिक कौशल के विकास के साथ शारीरिक विकास तेजी से होता है।

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी 2024, पहला पेपर)

239. विकास के क्रम में, बच्चे सूक्ष्म पेशीय कौशल से पहले सकल पेशीय कौशल विकसित करते हैं। यह दर्शाता है कि विकास....... है।
(1) अराजक (2) शीर्षगामी
(3) रेखीय (4) समीप-दूराभिमुख

जवाब : (4) (सीटीईटी जनवरी 2024, पहला पेपर)

विकास पूर्व अनुमानित प्रतिमानों व अनुक्रम का अनुसरण करता है। शारीरिक, पेशीय, वाक् और बौद्धिक विकास के क्रमबद्ध प्रतिमान हैं। एक बच्चे का पेशीय विकास दो श्रेणियों सकल पेशीय व सूक्ष्म पेशीय में विभाजित है। (1) सकल पेशीय कौशल में मांसपेशियों का पेशीय विकास शामिल

वह सब और सिर्फ वही

जो प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछा जाता है।

आपणी पोथी

आपणी पोथी की नई पेशकश

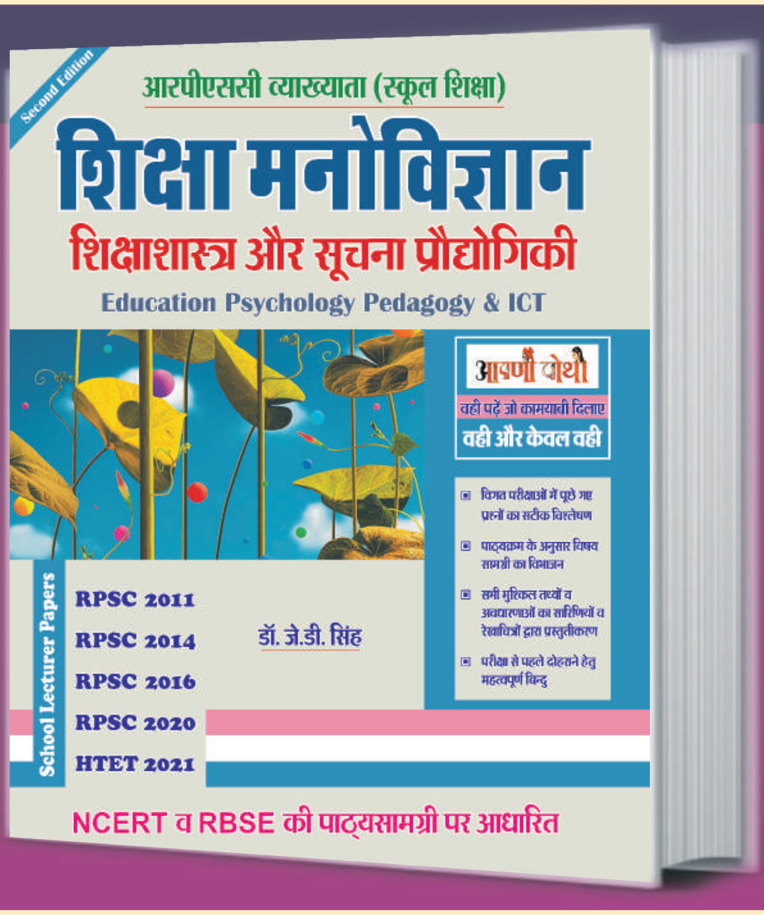

गागर में सागर

- ➪ मौजूदा परीक्षा व परीक्षार्थियों की जरूरत के मुताबिक सटीक सामग्री
- ➪ मुश्किल तथ्यों की शॉर्टकट विधियां
- ➪ रेखाचित्र और सारिणी की मदद से सहज और सरल प्रस्तुति
- ➪ सही, ताजा और प्रामाणिक जानकारी

aapnipothi.com

amazon.in Flipkart Experts brain competitive exam book seller

और आपके नजदीकी बुक स्टॉल पर उपलब्ध

Customer Care

9887803616 / 9414362312

www.aapnipothi.com, aapnipothi@gmail.com

आपणी पोथी

हमारे अन्य लोकप्रिय प्रकाशन

वही पढ़ें जो कामयाबी दिलाए

वही और केवल वही

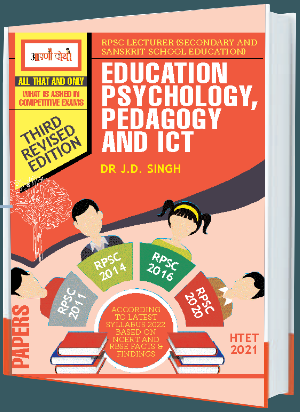

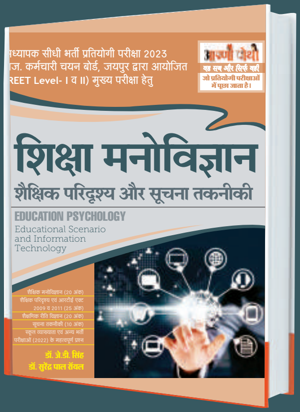

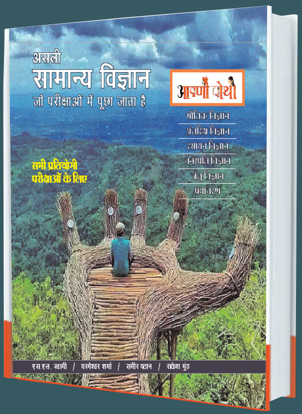

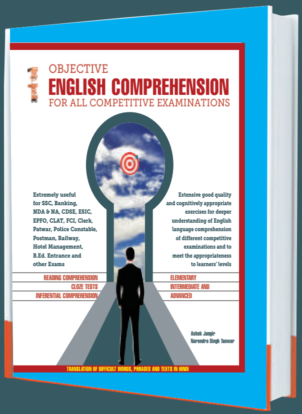

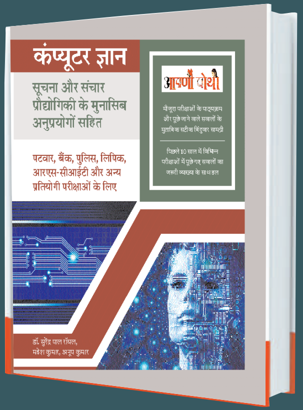

सभी बुक स्टॉल पर उपलब्ध

Customer Care
9887803616 9414362312

www.aapnipothi.com
aapnipothi@gmail.com

Experts brain competitive exam book seller, Flipkart और amazon.in पर भी उपलब्ध

शिक्षा मनोविज्ञान

बाल विकास, शिक्षाशास्त्र और शिक्षण विधियां

EDUCATION PSYCHOLOGY

CHILD DEVELOPMENT, PEDAGOGY AND TEACHING METHODS

CTET, REET, UPTET, HTET, UTET, DSSSB, KV-NVS

और अन्य राज्यों की अध्यापक पात्रता परीक्षा (TET) के सभी स्तरों के लिए उपयोगी

डॉ. जे.डी. सिंह

29 साल से बीएड और एमएड के लिए अध्यापन, दो सत्र (2006-08) तक शिक्षक शिक्षा कॉलेज में प्राचार्य, 19 साल से महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में पीएचडी पर्यवेक्षक। 17 शोधार्थियों के पीएचडी गाइड रह चुके हैं। 70 से ज्यादा पीएचडी शोधार्थियों की थीसिस का मूल्यांकन कर चुके हैं और 48 से ज्यादा एमएड शिक्षार्थियों के लघु शोध के गाइड रहे हैं। कम्यूनिटी लर्निंग, शिक्षक शिक्षा परिषद्, ग्लोबल टीचर एजुकेटर्स एसोसिएशन और ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ टीचर एजुकेटर्स के आजीवन सदस्य हैं। एसएसए, सीटीई, यूजीसी आदि के वित्तीय सहयोग से दस शोध परियोजनाएं पूरी कर चुके हैं। 12 रेडियो वार्ताओं के अलावा 13 पुस्तकें और संपादित पुस्तकों में 15 से ज्यादा लेख प्रकाशित हुए हैं, जिनमें वैदिक गणित की किताब सबसे लोकप्रिय रही है। 100 से ज्यादा लेख और 42 शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। बैंकॉक व काठमांडू के अलावा भारत में 115 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों और कार्यशालाओं में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। इग्नू, वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय और अन्य विश्वविद्यालयों से अतिथि संकाय, अकादमिक काउंसलर और अनुदेशक के रूप में जुड़े हैं। 2017 में दैनिक भास्कर समूह द्वारा गुरु सम्मान से सम्मानित। 2023 में नेपाल के प्रतिष्ठित त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू में शिक्षा भूषण अवॉर्ड (Shiksha Bhushan Award) से सम्मानित।

आपणी पोथी

ISBN : 978-81-943496-4-8

9 788194 349648

₹ 450

www.aapnipothi.com